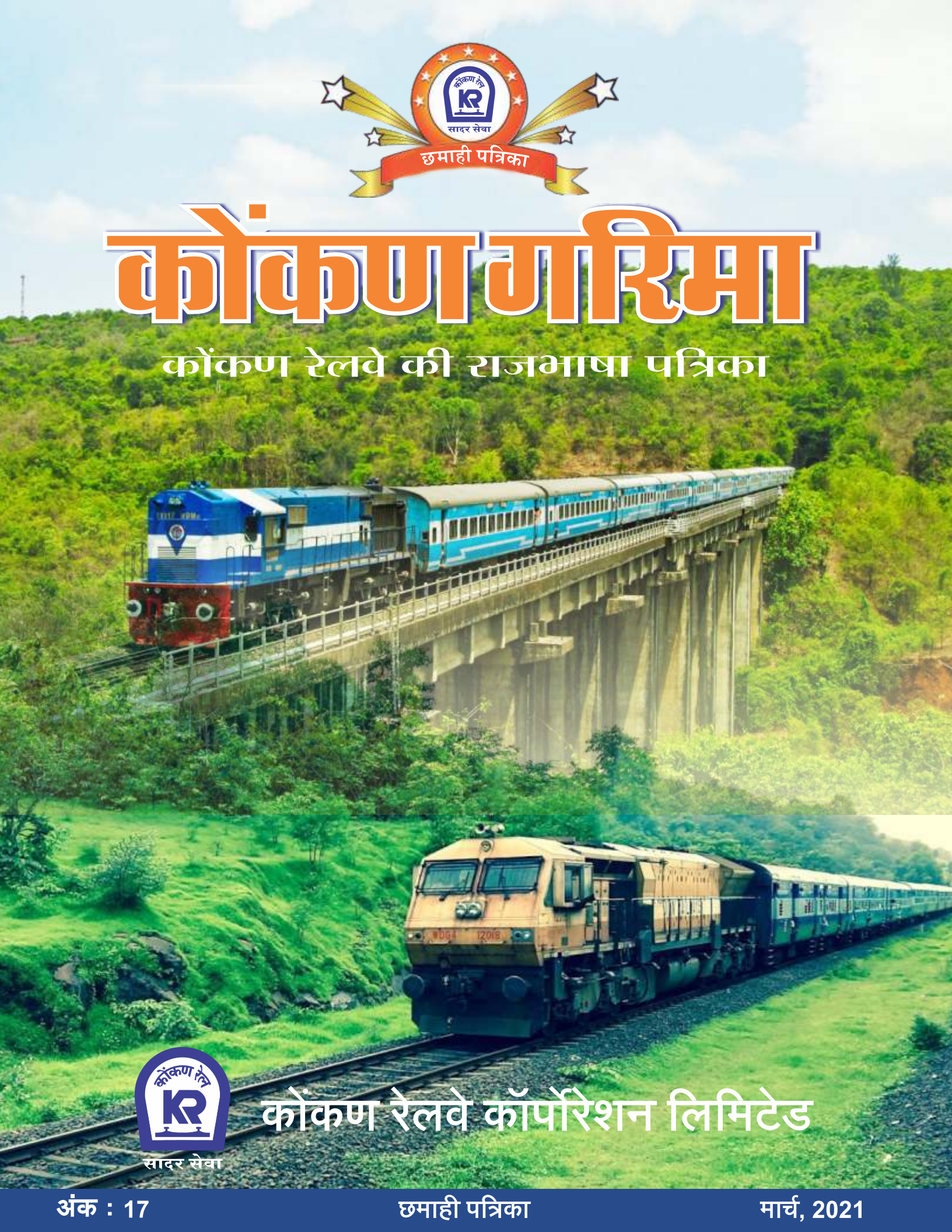

छमाही पत्रिका

कोंकण गरिमा

कोंकण रेलवे की राजभाषा पत्रिका

सादर सेवा

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

अंक : 17 छमाही पत्रिका मार्च, 2021

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जी का संदेश

'कोंकण गरिमा' का 17वां अंक प्रबुद्ध पाठकों को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। मुझे इस बात की खुशी है कि कोरोना काल में भी कोंकण रेलवे के कर्मियों द्वारा समय पर इस अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को और तीव्र करने के संदर्भ में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार राजभाषा विभाग,गृह मंत्रालय ने राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज़, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रमोशन, प्रतिबद्धता और प्रयास इत्यादि 12 “प्र” की रूपरेखा बनाई है। मैं उम्मीद करता हूँ कि हम हिंदी के संवर्धन के लिए 12 “प्र” का अंगीकार करते हुए अपने संवैधानिक दायित्वों को पूर्ण करेंगे तथा अपने निरंतर उच्च स्तर के प्रयासों के माध्यम से और नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

कोरोना महामारी के दौरान भी कोंकण रेलवे ने आपदा को अवसर में परिवर्तित करते हुए परिचालन, परियोजना और यात्री संतुष्टि कार्यों के साथ राजभाषा कार्यान्वयन में भी सर्वोत्कृष्ट योगदान देते हुए संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण में भी सफलता हासिल की है। साथ ही साथ इन परिस्थितियों का सामना करते हुए भी हमारी 'राजभाषा टीम' अपने कार्य में जुटी रही और 'कोंकण गरिमा' का 17वां अंक समय पर प्रकाशित करते हुए आप तक पहुंचाया है। इसलिए पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों, लेखकों, सहयोगियों, कोंकण रेलवे के अधिकारियों, कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

राजभाषा तेज़ी से नवीनतम प्रौद्योगिकी, तकनीकों से जुड़ रही है। इसके फलस्वरूप ही विगत एक वर्ष से परंपरागत तरीकों को बदल कर ऑन लाइन वेबिनार, संगोष्ठियां, बैठकें और अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि डिजिटल माध्यमों के उपयोग द्वारा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में वृद्धि करते हुए हम गृह मंत्रालय के सभी लक्ष्य हासिल करेंगे।

मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति, निरंतर प्रकाशन और उज्जवल भविष्य की सुखद कामना करता हूं।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

जय हिन्द।

संजय

(संजय गुप्ता)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

छमाही पत्रिका

सादर सेवा

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

वर्ष : 2021
अंक : 17

कोंकण गरिमा

कोंकण रेलवे की राजभाषा पत्रिका

संरक्षक

संजय गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

: परामर्श :

सुभाष चंद गुप्ता
निदेशक (रेलपथ एवं कार्य)

राजेश भडंग
निदेशक (वित्त)

: मार्गदर्शन :

डॉ. दीपक त्रिपाठी
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

: संपादक :

सदानंद चितले
राजभाषा अधिकारी

: संपादन सहयोगी:

सीताराम दुबे
राजभाषा अनुवादक

श्रीमती प्रिया पोकले
कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती श्रेया काकडे
वरिष्ठ लिपिक

रचनाकारों से अनुरोध

- "कोंकण गरिमा" पत्रिका हेतु टाइप की गई रचनाएं भिजवाएं।
- रचनाएं स्तरीय एवं प्रकाशन योग्य हों।
- रचनाकारों के प्रकाशन के संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जाएगा।

रचनाएं भेजने का पता :

संपादक, "कोंकण गरिमा" राजभाषा विभाग,
कमरा नं. 417,
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड,
कॉर्पोरेट कार्यालय, बेलापुर भवन,
सेक्टर - 11, सी. बी. डी. बेलापुर,
नवी मुंबई - 400 614.
फोन 022-87572015-18 विस्तार-365

इस अंक में

	विषय सूची		पृष्ठ
	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश		
1.	मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से		2
2.	संपादकीय		3
	राजभाषा और तकनीकी लेख		
4.	विश्व हिंदी दिवस: हिंदी भाषा का गौरव	सदानंद चितले	4
5.	महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि	अंजली पवार	6
6.	आशुलिपि - कल आज और कल	सावनी माईणकर	8
7.	प्रयोजनमूलक हिंदी	सूर्यशेखर	10
8.	राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन	श्रेया काकडे	14
9.	राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में हिन्दी का महत्व	संतोष पाटोळे	17
10.	एक भारत श्रेष्ठ भारत	सुवर्णा बर्डे	19
	साहित्यिक लेख		
11.	मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल	बाबासाहेब सुरेन्द्र नाडगे	21
12.	शिक्षा और व्यवसाय	प्रिया निकेत पोकले	25
13.	उच्च वर्ग में नशाखोरी का युवा पीढ़ी पर प्रभाव	सुचिता सचिन बामुगडे	28
14.	वृक्ष बुजुर्ग – पौधे संतान	दामोदर डी. नाईक	31
15.	ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली-क्या और कैसे ?	मकरंद देवराम भारंभे	33
16.	समय का महत्व	सीताराम दुबे	35
17.	हम सफर	द्विवेदी	36
	पर्यटन		
18.	कर्नाटक के नयनरम्य स्थल - पर्यटन	राजेश देसाई	37
19.	जिंदगी तू चलती चली जा	सुधा एस. दुबे	39
20.	स्वास्थ्य - बबूल और नीम का महत्व		40
21.	योग करें, स्वस्थ रहें	सतीश एकनाथ धुरी	41

"कोंकण गरिमा" में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। रेल प्रशासन को उनसे सहमत होना, आवश्यक नहीं है। व्यक्तिगत आलेखों एवं कविताओं के लेखक अपने कॉपीराइट के लिए स्वयं जिम्मेदार होंगे। "कोंकण गरिमा" में प्रकाशित सामग्री का किसी भी अन्य रूप में उपयोग करने से पूर्व राजभाषा विभाग से पूर्व अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

– संपादक

मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से.....

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कोंकण रेलवे की राजभाषा पत्रिका 'कोंकण गरिमा' के प्रकाशन की श्रृंखला में और एक कड़ी 17 वें अंक के रूप में जुड़ रही है।

इस वर्ष कोरोना महामारी के कारण उत्पन्न विषम परिस्थितियों से गुजरने के बावजूद भी कोंकण रेलवे में डिजिटल तकनीक का उपयोग करते हुए राजभाषा पखवाड़े के साथ 14 सितंबर,2020 को "हिंदी दिवस", 10 जनवरी,2021 को "विश्व हिंदी दिवस" और 27 फरवरी, 2021 को "मराठी राजभाषा दिवस" मनाया गया। मुख्यालय, स्टेशन और नराकास की बैठकें, कोंकण गरिमा, समन्वय पत्रिका के प्रत्येक दो अंकों का प्रकाशन और ऑनलाइन विभिन्न प्रतियोगिताएं /प्रश्न-मंच/ संगोष्ठियाँ अपने निर्धारित समय-सीमा में आयोजित की गईं। इस संकट काल में भी कोंकण रेलवे के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने राजभाषा हिंदी के प्रति जो निष्ठा दिखाई है वह अत्यंत सराहनीय है।

माननीय प्रधानमंत्री जी के **"आत्मनिर्भर भारत" "स्थानीय के लिए मुखर हों"** (Self Realiant India-Be vocal for local) के अभियान के अंतर्गत राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय और सी-डैक,पुणे द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" पर कोंकण रेलवे और नवी मुंबई, नराकास के लिए कार्यशालाओं का आयोजन तथा अन्य उपलब्ध हिंदी 'ई-टूल्स' का दैनिक कार्यों में उपयोग हेतु प्रसार भी इस संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति आत्मीयता की एक झलक है।

कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने के लिए हिंदी गृह-पत्रिकाओं का एक विशेष महत्व है। गृह मंत्रालय के डिजिटलिकरण की नीति के अनुसरण में यह अंक ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि आप इसका सहृदयता से स्वीकार करेंगे।

इस अंक के लिए भी हमारे संगठन के अधिकारियों, कर्मचारियों द्वारा रचित रोचक, सृजनात्मक लेख, कविताएं और अन्य सामग्री का सहयोग हमें प्राप्त हुआ है,यह उन सब के राजभाषा के प्रति स्नेह, समर्पण का द्योतक है। मैं कामना करूंगा कि भविष्य में भी उनका इसी प्रकार से रचनात्मक सहयोग मिलता रहेगा।

मैं आशा करता हूँ कि हम अपने अन्य कार्यों के साथ-साथ, जिस तरह से अपने दैनंदिन कार्यालयीन काम में हिंदी का प्रयोग बढ़ा रहे हैं, उसे जारी रखेंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

(डॉ. दीपक त्रिपाठी)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड

संपादकीय

"कोंकण गरिमा" का 17वां अंक प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। "कोंकण गरिमा" के इस अंक में कोंकण रेलवे के रचनाकारों की तकनीकी और साहित्यिक रचनाओं को शामिल करते हुए राजभाषा विभाग के मानदंडों के अनुरूप तथा पठनीयता को भी बरकरार रखने का हर संभव प्रयास किया गया है। आशा है कि हमारा यह प्रयास आपको पसंद आएगा।

कोंकण रेलवे में परिचालन,परियोजना और ग्राहक संतुष्टि कार्यों के साथ-साथ हिंदी के प्रसार में भी अग्रणी भूमिका निभाते हुए मुख्यालय और सभी अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी की गतिविधियां हर्षोल्लास के साथ कार्यान्वित की जा रही हैं और अधिकाधिक उपलब्धियां हासिल की जा रही हैं। इसके साथ "कोंकण गरिमा" का निरंतर प्रकाशन भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस उपलब्धि के लिए हमारे उच्च अधिकारियों के हार्दिक आभार जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से हम इस कार्य को लगातार दक्षता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं। अन्य कार्य की तरह हमारे सभी साथी "कोंकण गरिमा" का प्रकाशन कार्य तत्परता और प्राथमिकता के साथ कर रहे हैं। इसके लिए मैं संपादकीय टीम का बहुत आभारी हूँ।

कोंकण रेलवे के साथ पूरे देश में राजभाषा-हिंदी की प्रगति में हमारा योगदान रहे, इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमने इस अंक की सामग्री विविधतापूर्ण संग्रहित करने का प्रयास किया है। इस अंक में हिंदी के ज्ञानवर्धन हेतु- विश्व हिन्दी दिवस, राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में हिन्दी का महत्व,शिक्षा और व्यवसाय,पुस्तकें और इनकी सार्थकता, तकनीकी लेख- राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन; कोंकण रेलवे पर कार्यान्वित राजभाषा गतिविधियों की झलकियाँ, एक भारत श्रेष्ठ भारत;समय का महत्व; पर्यटन और स्वास्थ्य संबंधी ज्ञानवर्धक लेखों को सम्मिलित किया गया है। इन सामग्री से यह अंक रोचक, पठनीय और उपयोगी बनाने का हर संभव प्रयास किया है। उम्मीद है कि सभी लेख और अन्य रचनाएं,सामग्री आपको अवश्य पसंद आएगी।

"कोंकण गरिमा" आपकी अपनी पत्रिका है। कोंकण रेलवे के तथा अन्य परिवारजनों एवं सभी पाठकों से हमारा आग्रह है कि इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं अन्य सामग्री आदि के बारे में अपनी टिप्पणियां एवं प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं, जिससे कि हम आपकी रूचि के अनुसार पत्रिका प्रकाशित करते रहें। आशा है कि आपकी पत्रिका की विकास यात्रा में आप अपना पूरा योगदान देंगे।

अंत में यह भी अनुरोध रहेगा कि "कोंकण गरिमा" का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाए, ताकि पत्रिका से अधिकाधिक पाठक जुड़ सकें।

- संपादक

सादर सेवा
छमाही पत्रिका

विश्व हिंदी दिवस: हिंदी भाषा का गौरव

- सदानंद चितले
राजभाषा अधिकारी, बेलापुर

विश्व में हिंदी का विकास करने और इसे प्रचारित-प्रसारित करने तथा हिंदी को विश्व भाषा के रूप में प्रस्तुत करने के उद्देश्य से "विश्व हिंदी सम्मेलनों" की शुरुआत की गई और प्रथम "विश्व हिन्दी सम्मेलन" 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया। इसके उपलक्ष्य में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी ने 10 जनवरी, 2006 को प्रति वर्ष 10 जनवरी को "विश्व हिन्दी दिवस" के रूप मनाए जाने की घोषणा की थी। तदनुसार भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में 10 जनवरी, 2006 को पहली बार विश्व हिन्दी दिवस मनाया था। तब से "विश्व हिंदी दिवस" प्रति वर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिंदी में व्याख्यान आयोजित किए जाते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

आइए अब विश्व में हिन्दी के प्रसार के बारे में जानकारी लेते हैं। यूएन (संयुक्त राष्ट्र) के अनुसार पूरे विश्व में बोली जाने वाली कुल भाषाएँ 6809 हैं और इनमें से सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा मंडारिन है जो कि चीन की राजकीय भाषा भी है। इसके बाद स्थान आता है हिंदी का । भारत और विदेश में लगभग 50 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं और इस भाषा को समझने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग 90 करोड़ है । हिंदी भाषा का मूल प्राचीन संस्कृत भाषा में है । इस भाषा ने अपना वर्तमान स्वरूप कई शताब्दियों के पश्चात प्राप्त किया है। बड़ी संख्या में बोलीगत विभिन्नताएं आज भी मौजूद हैं । हिंदी की लिपि देवनागरी है, जो कि कई अन्य भारतीय भाषाओं के लिए संयुक्त है । हिंदी के अधिकतम शब्द संस्कृत से आए हैं। इसका व्याकरण की भी संस्कृत भाषा के समान है।

उल्लेखनीय है कि सभी प्रधान भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत है। एक समय संस्कृत विश्व पर राज करती थी। संस्कृत का ज्ञान अर्जन करने के लिए पूरे विश्व के लोग तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे भारतीय विश्वविद्यालयों में आते थे । विश्व के बहुत से देशों के बीच संपर्क भाषा के रूप में संस्कृत न सिर्फ प्रमुख थी बल्कि यह अन्य भाषाओं के तकनीकी शब्दों को भी प्रभावित कर चुकी थी। संस्कृत भारत में प्रचलित अंक विद्या, दशमलव प्रणाली, आयुर्विज्ञान, रसायन और भेषज विज्ञान, गणित, भूगोल, खगोल विज्ञान और ज्योतिषशास्त्र के शब्द भारत से फारस, अरब, तुर्क और यूनान होते हुए यूरोप तक पहुंचे। संस्कृत के मातृ, पितृ और भ्रातृ से परिवर्तित हो कर मदर, फादर और ब्रदर हो गए। 'अ' से अलिफ और अलिफ से अल्फा बना। एक बृहत्तर भारत भी था जिसका स्तर आज के खाड़ी देशों से लेकर ईरान, अफगानिस्तान, बर्मा, थाईलैंड, सिंगापुर (सिंहपुर), इंडोनेशिया (हिंदेशिया) तक था। आज भी इन देशों के लोगों के नाम भारतीयों के समान हैं जैसे इंडोनेशिया की मेघावती सुकर्णोपुत्री, श्रीलंका के क्रिकेटर अरविंद और अर्जुन रणतुंग वगैरह । पूर्वी एशिया के अनेक देशों के नाम तक भारतीय हैं- सुमात्रा, जावा (जो संस्कृत शब्द यव से बना है) मलय (जो रोमन लिपि के भाव से मलाया हो गया), कुंभोज (अंग्रेजी के प्रभाव के कारण कंबोडिया हो गया)।

जर्मनी के कुछ छात्र इसलिए संस्कृत सीखते हैं कि संस्कृत सीखने के बाद विश्व की कोई भी भाषा सीखना आसान हो जाता है। संस्कृत को कंप्यूटर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा माना गया है। एक यूरोपीय यात्री जो 12वीं शताब्दी में भारत से होकर गुजरा था, उसने अपनी डायरी में लिखा है कि मैं हिंदवी भाषा जानता हूं अत: मुझे ईरान से लेकर हिन्देशिया तक भाषा की कोई समस्या नहीं होगी क्योंकि मुझे प्रत्येक स्थान पर हिन्दवी बोलने और समझने वाले मिल जाएंगे अर्थात आज से करीब 900 साल पहले हिंदी इस विश्व में व्याप्त थी और आज भी व्याप्त है। आज टीवी चैनलों पर संगीत की प्रतियोगिताओं वाले कार्यक्रम और अन्य धारावाहिक विश्व भर में देखे जा रहे हैं । मीडिया का सूचना संसार अब हिंदी का भक्त बन गया है।

आज हिंदी विश्व के लगभग पचपन देशों में फैले सत्तर करोड़ से अधिक लोगों की अभिव्यक्ति की भाषा बन गई है। बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि भारत के पड़ोसी देशों में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में फैलती जा रही है। विश्व के दो सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी के भाषाई और साहित्य पर शिक्षण एवं अनुसंधान हो रहा है। सुप्रसिद्ध लेखक अच्युतानंद मिश्र एक लेख में बताते हैं कि हिंदी में व्याकरण लेखन की शुरूआत डच के एक विद्वान 'जोशुआ केटलियर' ने 1695-98 में लखनऊ में की थी। वर्ष 1744 में बेंज़ामिन शुल्तज ने 'ग्रामेटका हिंदोस्तानिका' पुस्तक लिखी थी। यह पुस्तक लैटिन भाषा में थी। 1773 में जॉनफ़र्ग्यूसन की 'हिंदुस्तानी डिक्शनरी' प्रकाशित हुई। गिलक्रिस्ट ने 1787 -1796 के बीच कोलकाता में 'हिंदुस्तानी कोश' तैयार किया था। 12 अगस्त, 1881 का जो आदेश लंदन से सेक्रेटरी सिविल सर्विसेज़ कमीशन को भेजा गया उसके अनुसार भारत आने वाले अंग्रेजों को हिंदी मैन्युअल पढ़ना और हिंदी की परीक्षा

पास करना अनिवार्य था । सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया' (भारत का भाषा सर्वेक्षण) जैसा विशाल ग्रंथ तैयार किया था, उस समय की सरकार ने 1927 में 11 खंडों में इसका प्रकाशन किया था। ये तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि हिंदी विश्व के मानचित्र में अपनी उपस्थिति सशक्त ढंग से दर्ज़ करा रही थी। इसके ज़रिये भारतीय संस्कृति भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज़ करा रही थी और करा रही है। आज विदेशों में भारतीय शास्त्रीय संगीत, योग सीखने के लिए हिंदी का माध्यम अपना रहे हैं।

हिंदी को लेकर विदेशियों में भी भारत की संस्कृति को समझने की रुचि बढ़ी है। यही कारण है कि कई देशों ने अपने यहाँ भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षण केंद्रों की स्थापना की है। भारतीय धर्म, इतिहास और संस्कृति पर विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित करने के अलावा इन केंद्रों में हिंदी, उर्दू और संस्कृत जैसी कई भारतीय भाषाओं में भी पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। वैश्वीकरण और निजीकरण के इस परिदृश्य में अन्य देशों के साथ भारत के बढ़ते व्यापारिक संबंधों को देखते हुए संबंधित व्यापारिक साझेदार देशों की भाषाओं की अन्तर – शिक्षा की जरूरत महसूस की जाने लगी है।इस विवरण ने अन्य देशों में हिंदी को लोकप्रिय और सरलता से सीखने योग्य भारतीय भाषा बनाने में काफी योगदान किया है। अमरीका में कुछ स्कूलों में फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन के साथ-साथ हिंदी को भी विदेशी भाषा के रूप में शुरू करने का फैसला किया गया है। न्यूयार्क में हिंदी शिक्षण के लिए अनुदान स्वीकृत हुआ है। टेक्सास के बलैटे हाई स्कूल में 'नमस्ते जी' पाठ्य पुस्तक बेहद लोकप्रिय हो रहा है। आस्ट्रेलिया के सरकारी स्कूलों में मेल्बर्न का रेंजबेंक प्राइमरी स्कूल विक्टोरियन प्रदेश का पहला स्कूल है जिसने अंग्रेजी के अतिरिक्त हिंदी को अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाने की स्वीकृति दी है जहां लगभग 500 से अधिक बच्चे हिंदी सीख रहे हैं। इसे देखते हुए ऐसा लगता है कि हिंदी ने भाषा-विषयक कार्य-क्षेत्र में स्वयं के लिए एक वैश्विक मान्यता अर्जित कर ली है।

भारतीय अर्थ व्यवस्था की प्रगति, मुक्त बाज़ार की आर्थिक नीतियां और वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में आज विश्व के मानचित्र पर जो नए भाषाई समीकरण उभर रहे हैं उसमें हिंदी अपनी क्षमता का परिचय दे रही है। भूमंडलीकरण के परिवेश में भाषाओं ने सभी का ध्यान आकर्षित किया है। ज्ञान, सृजन, व्यापार, व्यवसाय, साहित्य-संस्कृति को बढ़ाने के लिए अब हिंदी भी एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभर रही है। वैश्वीकरण की विभिन्न प्रक्रियाओं के विस्फोट और प्रमुख भाषाओं के बीच अब सांस्कृतिक सामंजस्य और सौहार्द बढ़ रहा है, यह एक शुभ संकेत है। इससे भाषाई, साहित्यिक-सामाजिक आदान-प्रदान और आवश्यकता की संभावनाएं बढ़ गई हैं। यही कारण है कि आज अमरिका, जर्मनी, चीन जैसे देश हिंदी सीखने के लिए प्रयासरत हैं। कदाचित ये भारत को बाज़ार के रूप में देखते हैं इसलिए भी हिंदी सीख रहे हैं। अब बाज़ार हिंदी की जयघोष का शंखनाद कर रहा है । अब बहुराष्ट्रीय कंपनियां जॉनसन एंड जॉनसन, लार्सन एंड टूब्रो, कोलगेट, कोको कोला जैसी सैकड़ों कंपनियां अपना उत्पाद बेचने के लिए हिंदी का सहारा ले रही हैं, वे जानती हैं कि हिंदी एक शक्ति है, उसी के माध्यम से जनता तक पहुंचा जा सकता है। कितनी बड़ी ताकत है हिंदी की, जिसके कारण वह विश्व में अपना परचम फहरा रही है।

आज यह बात महत्वपूर्ण है कि मॉरीशस के प्रथम प्रधानमंत्री डॉ. सर शिवसागर (जो मॉरीशस के राष्ट्रपिता के रूप में जाने जाते हैं) ने 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि 'हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, लेकिन हमारे लिए इस बात का अधिक महत्व है कि यह एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है'। आज वह बात पूर्णता: सिद्ध हो रही है। सबको यह सर्वसम्मति से मानना चाहिए कि हिंदी का इतिहास तो गौरवमयी है ही पर उसका भूगोल भी तेजी से अंतर्राष्ट्रीय रूप लेता जा रहा है। अब हिंदी भाषा नहीं रही, वह जीने की ग्लोबल शैली बनती जा रही है। एक समय था जब विश्व में ब्रिटिश राज्य का सूरज डूबता नहीं था। आज दुनिया में हिंदी का सूरज नहीं डूबता है। यदि हिंदी का यह जादू नहीं होता तो क्या गुगल,विकिपीडिया लाखों पृष्ठ हिंदी में देता। हिंदी की गरिमा और महिमा दोनों बढ़ रही है। वह अब सांस्कृतिक, सामाजिक आत्मीयता रचने का माध्यम बन रही है और जिंदगी का हिस्सा बन रही है।

देश को एकता की माला में पिरोने वाली हिंदी,
समूचे विश्व में सद्भाव और मैत्री की भावना को दृढ़ करें,
'वसुधैव कुटुंबकम्' की लक्ष्य प्राप्ति के लिए,
ओजस्वी शक्ति के रूप में स्वयं को प्रतिष्ठित करें।

सादर सेवा
छमाही पत्रिका

महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि

- अंजली पवार
वरिष्ठ टिकट परीक्षक, रत्नागिरी

भारत या अन्य किसी भी देश में भाषा का सवाल एक महत्वपूर्ण सवाल है। भारत जैसे देश में जिसकी राजभाषा एक ऐसी भाषा बनी हुई है जिस देश के वासियों ने सदियों तक भारत को गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर रखा था और आजादी के उपरांत भी भाषा की दृष्टि से आज भी भारत को गुलाम बना रखा है। भाषा के विषय, उत्पत्ति, इतिहास, विकास, प्रगति इत्यादि पर अनेक भाषाविदों और भाषा विज्ञानियों के अपने-अपने मत रखे हैं। जिन्होंने बहुत विस्तार के साथ भारत की भाषाओं एवं बोलियों पर अपने विचार व्यक्त कर, एक पूरा इतिहास युवा पीढ़ी के समक्ष रख दिया है।

महात्मा गांधी की जिस प्रकार से अन्य विषयों पर दृष्टि और विचार बहुत ही स्पष्ट थे। उसी प्रकार से भाषा और विशेषतः भारत की राजभाषा के संबंध में भी उतने ही स्पष्ट और निर्णायक रहे हैं। गांधी जी को भारत की जनता उनके नेतृत्व, सहयोग, अहिंसा, सदाचार आदि विशेषताओं के लिए अपना आइडियल मानती हैं। आजादी की लड़ाई में जहां लगभग सम्पूर्ण भारत गांधी जी के कदम से कदम मिलाकर चल रहा था वहीं वर्तमान समय में राजभाषा के संबंध में क्यों एक जुट नहीं है? उसूलों क्यों गांधीजी के द्वारा कहा गया यह वाक्य " कह दो गांधी अंग्रेजी भूल गया है" भारत की जनता की जबान और दिमाग तक नहीं आ पा रहा हैं ? क्या हम गांधी जी के उसूलों, आदर्शों आदि को भूलते जा रहे है? क्या अंग्रेजी भाषा की मानसिकता ने गांधीजी के सपनों के भारत को धुंधला और धीरे –धीरे अंधक रमय बना रही हैं ? ऐसे अनेक सवाल है जो दिमाग में एक ऐसी तस्वीर बना डालते हैं जो विचार करने को विवश करते है, कि क्या भारत की राजभाषा अंग्रेजी की गुलामी से आज़ाद हो पायेगी? क्या अंग्रेजी मानसिकता के चंगुल से भारत की जनता अपने को आज़ाद कर पाएगी?

गांधी जी के मतानुसार राष्ट्रभाषा में कुछ विशेषताएं होनी चाहिए जिनके स्वरूप पर काफी गहन-मनन एवं विचार करने के उपरांत राष्ट्रभाषा में पाँच गुणों को आवश्यक माना है:

1) उसे सरकारी कर्मचारी आसानी से सीख सकें।
2) वह समस्त भारत में धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक संपर्क के माध्यम के रूप में प्रयोग में लाने हेतु सक्षम और समर्थ हो।
3) अधिकांश भारतीय उस भाषा को बोलते हो।
4) सारे देश को उसे सीखने में आसानी हो।
5) ऐसी भाषा को चुनते समय क्षणिक या अस्थायी परिस्थियों को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए।

उपर्युक्त लक्षणों के संदर्भ में अंग्रेजी भाषा का विश्लेषण करते हुए गांधी जी ने कहा था- "अंग्रेजी भाषा में इनमें से एक भी लक्षण नहीं है।" (संपूर्ण गांधी वाङ्मय,खंड-1, प्रकाशन विभाग,भारत सरकार, दिल्ली) उनका दृढ़ विश्वास था कि सीखने वालों के लिए अंग्रेजी भाषा सरल नहीं है। भारतीयों के लिए भारत की किसी भी भाषा की तुलना में अंग्रेजी कठिन भाषा है। जिसका प्रयोग भारत की जनता के लिए सरल और सुविधाजनक नहीं है।

इसके अतिरिक्त अन्य बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए उन्होंने आगे कहा- ..."समाज में अंग्रेजी का इस हद तक फैल जाना नामुमकिन मालूम होता है। तीसरा लक्षण अंग्रेजी में हो ही नहीं सकता,क्योंकि वह भारतवर्ष के बहुजन समाज की भाषा नहीं है। चौथा लक्षण भी अँग्रेजी में नहीं है, क्योंकि सारे राष्ट्र के लिए वह इतनी आसान नहीं। उन्होंने आगे कहा था कि आज अंग्रेजी भाषा को जो सत्ता प्राप्त है, वह क्षणिक है। चिरस्थायी स्थिति तो यह है कि हिंदुस्तानी जनता में राष्ट्रीय कामों में अंग्रेजी भाषा की जरूरत कम ही रहेगी। हम कहीं भी अंग्रेजी भाषा से द्वेष नहीं करते हैं। हमारा आग्रह तो यह है कि हम उसे उसकी मर्यादा के बाहर बढ़ने देना नहीं चाहते। राष्ट्र की भाषा अंग्रेजी नहीं हो सकती। अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाना देश में 'एस्पेरेंटों' को दाखिल करना है। अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाने की कल्पना हमारी निर्बलता की निशानी है। 'एस्पेरेंटों' का प्रयास निरे अद्यान का सूचक होगा" (संपूर्ण गांधी वाङ्मय, खंड-14, प्रकाशन विभाग,भारत सरकार, दिल्ली)

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि गांधीजी राष्ट्रभाषा अंग्रेजी को किसी रूप में भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। वह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि अंग्रेजी भाषा या अन्य किसी भी भाषा के प्रति किसी भी प्रकार का राग या द्वेष उनके हृदय में नहीं है। भाषा की जानकारी होना बहुत अच्छा है। हर भाषा का अपना ज्ञान-विज्ञान होता है, उनका समर्थन करना चाहिए।

लेकिन इस आधार पर नहीं कि अपनी ही राष्ट्रभाषा का मान-सम्मान खो दिया जाए। अंग्रेजी जानना, बोलना सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतिमान बन गया है। इसी मानसिकता पर प्रहार करते हुए गांधीजी ने 1 जून, 1921 को यंग इंडिया में लिखा था, "अंग्रेजी आज इसलिए पढ़ी जा रही है कि उसका व्यावसायिक तथा तथाकथित महत्व है। हमारे बच्चे अंग्रेजी यह सोच कर पढ़ते हैं कि अंग्रेजी पढ़ें बिना उन्हें नौकरियाँ नहीं मिलेगी। लड़कियों को अंग्रेजी इसलिए पढ़ाई जाती है कि उससे उनकी शादी में सहूलियत होगी। मैं ऐसी कितनी औरतों के बारे में जानता हूँ कि जो अंग्रेजी इसलिए सीखना चाहती थी कि अंग्रेजों के साथ वे अंग्रेजी में बातचीत कर सके। मैं कितने ऐसे पतियों को जनता हूँ जिन्हें इस बात का मलाल है कि उनकी बीवियाँ उनके साथ और उनके दोस्तों के साथ अंग्रेजी में बात नहीं कर सकती। मुझे ऐसे परिवारों की जानकारी है, जहां अंग्रेजी मातृभाषा बनाई जा रही है। ये सारी बाते गुलामी की और घोर पतन के चिन्ह हैं। मैं इस बात को बरदाशत नहीं कर सकता कि देशी भाषाएँ इस तरह कुचल दी जाए, भूखों मार डाली जाए।"(शिवसागर मिश्र,हिन्दी हम सबकी, प्रभात प्रकाशन,दिल्ली,1986)

गांधी जी का यह उद्धृत कथन इसी ओर इशारा करता है कि वह 1921 में बैठे हुए 21 वीं सदी में हो रहे राष्ट्रभाषा के साथ हो रहे अन्याय पर चर्चा कर रहे हैं और उस पर लगातार लिख रहे हैं, इससे भीषण स्थिति और क्या हो सकती हैं कि विदेशी भाषा ने अपनी भाषा, सभ्यता और संस्कृति को भूल अंग्रेजी भाषा, सभ्यता और संस्कृति के प्रति गुलाम बना दिया है।

गांधी जी ने एक ऐसी भाषा की ओर अपनी इच्छा व्यक्त की है जिसमें भारतीय जनता को एक सूत्र में बांधने की शक्ति हो, वह भारत नहीं भारत के बाहर भी अन्य राष्ट्रीय स्तर पर अपना पर्चम गर्व के साथ लहरा सके। जिस भाषा को सरलता से दक्षिण से लेकर पश्चिम, पूर्व तक के नागरिक बोल, लिख और समझ सके। यही सब गुण उन्हें हिंदुस्तानी भाषा यानि हिन्दी और उर्दू मिश्रित भाषा में दिखाई दिए। जिस भाषा को उन्होंने राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया है। गांधीजी जिस भाषा के हिमायती थे वह आम जन की भाषा थी, जिसमें सरकारी कामकाज भी सरलता और बिना अवरोध के करने में भारतीय जनता सक्षम हो।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी अपनी जनता, अपने देश का विकास अपनी भाषा में ही संभव मानते हैं। शारीरिक गुलामी से तो बापू भारत को आज़ाद करा गए, वहीं मानसिक गुलामी के लिए भी वह अपने समय में ही जनता को जागरूक करने की भरपूर कोशिश कर रहे थे। अपने विचारों और लेखों के माध्यम से गांधी जी ने भारतीय जनता और युवा पीढ़ी के समक्ष भाषा के क्षेत्र में आने वाली हर चुनौती का समाधान कैसे करना है उसका मार्ग संकेतों में बताया है। केवल स्थिर बुद्धि से समझने की आवश्यकता है। अन्यथा गुलामी का खतरा अभी टला नहीं है।

मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों के साथ गांधी जी की भाषा दृष्टि को पूर्ण विराम देती हूँ;-

" भरा नहीं जो भावों से,

बहती जिस में रसधारा नहीं,

वह हृदय नहीं है,पत्थर है,

जिस में स्वदेश का प्यार नहीं।"

सादर सेवा
छमाही पत्रिका

आशुलिपि - कल आज और कल

- सावनी माईणकर,
निजी सचिव, रत्नागिरी

'आशु' संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ – तीव्र, शीघ्र, त्वरा है यथापि इसे कुछ हिंदी संबोधन प्राप्त हुए हैं जिनमें 'आशुलिपि' तीव्र लेखन, शीघ्र लेखन, त्वरालेखन, संकेतलेखन आदि तथा अंग्रेजी में शॉर्टहॅण्ड है।

आशुलिपि को सीखने के लिए व्यक्ति में लगन आत्मविश्वास, एकाग्रचित्तता, परिश्रम, समर्पण की जितनी अधिक भावना होगी, वह उतने ही अल्प समय में इसे सीख सकता है। इसे सीखने के लिए ताकत के बजाए तीव्र एवं संतुलित दिमाग की आवश्यकता ज्यादा होती है जो कि सफलता की कुंजी है। आशुलिपि सीखने के लिए कोई बड़ी-बड़ी मशीन या औजार नहीं लगते हैं, बल्कि यह एक बहुत ही विचित्र संकेत लिपि प्रणाली होती है, जिसे पेंसिल के माध्यम से आडी-तिरछी, मोटी-पतली, वक्र लकीरें बनाकर लिखा, समझा या पढ़ा जाता है।

आशुलिपि (Shorthand) लिखने की एक विधि है जिसमें सामान्य लेखन की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से लिखा जा सकता है। इसमें छोटे प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। आशुलिपि में लिखने की क्रिया आशुलेखन (Stenography) कहलाती है। स्टेनोग्राफी से आशय है तेज और संक्षिप्त लेखन। इसे हिन्दी में 'शीघ्रलेखन' या 'त्वरालेखन' भी कहते हैं।

लिखने और बोलने की गति में अंतर है। साधारण तौर पर जिस गति से कुशल से कुशल व्यक्ति हाथ से लिखता है, उससे चौगुनी, पाँचगुनी गति से वह संभाषण करता है। ऐसी स्थिति में वक्ता के भाषण अथवा संभाषण को लिपिबद्ध करने में विशेष रूप से कठिनाई उपस्थित हो जाती है। इसी कठिनाई को हल करने के लिये त्वरालेखन के आविष्कार की आवश्यकता पड़ी।

आशुलिपि की बहुत सी पद्धतियाँ हैं। आशुलिपि के सभी तरीकों में प्रायः प्रयुक्त होने वाले कुछ शब्दों एवं वाक्यांशों के लिए संकेत या लाघव निश्चित होते हैं। इस विधि में सुशिक्षित व्यक्ति इन संक्षेपों का उपयोग करके उसी गति से लिख सकता है जिस गति से कोई बोल सकता है। संक्षेप विधि वर्णों पर आधारित होती है। आजकल बहुत से सॉफ्टवेयर प्रोग्रामों में भी आटोकम्प्लीट आदि की व्यवस्था है जो आशुलिपि का काम करती है।

आशुलिपि का प्रयोग उस काल में बहुत होता था जब रिकार्डिंग मशीनें या डिक्टेशन मशीनों नहीं बनीं थीं। व्यक्तिगत सेक्रेटरी तथा पत्रकारों आदि के लिए आशुलिपि का ज्ञान और प्रशिक्षण अनिवार्य माना जाता था। अन्य भाषाओं में त्वरालेखन का आविष्कार बहुत बाद में हुआ। वास्तव में विदेशी शासन के अधीन होने के कारण हमारे देश की न तो कोई राजभाषा थी और न कोई प्रांतीय भाषा ही अपने प्रांत में सरकारी कामकाज में विशेष महत्व प्राप्त कर सकी थी। इसलिये हिंदी टंकण की तरह, हिंदी त्वरालेखन की मूल प्रेरणा शार्टहैंड से ही प्राप्त हुई।

भारत में त्वरालेखन के विकास की एक कथा है कि जब लिखने के लिये बैठे तब उनके संमुख यह समस्या उपस्थित हुई कि इस विशाल महाभारत को कौन लिपिबद्ध करेगा। गणेश जी इस दुष्कर कार्य के लिये कटिबद्ध हुए। भगवान वेदव्यास धारा/प्रवाह बोलते जाते और गणेश जी उसे लिपिबद्ध करते जाते थे। किंतु यह हुई पौराणिक बात त्वरालेखन की।

संसार की भाषाओं में त्वरालेखन का प्रयास प्राय: में ईस पूर्व 63 में हुआ। रोम के सीनेट में आदि के भाषणों को नोट करने के लिये (Marcus Tullius Tiro) ने त्वरा लेखन की एक प्रणाली का आविष्कार किया, जिसे 'टिरोनियन नोटे' कहा जाता था। इस प्रणाली का प्रचलन रोम साम्राज्य के पतन के पश्चात् कई शताब्दियों बाद तक रहा। इसके साथ ही ईस की चौथी शताब्दी में में त्वरालेखन का आविष्कार हुआ जिसका प्रचलन आठवीं शताब्दी तक रहा।

इस समय में 'ब्राइट्स सिस्टम' (Brights System) नामक शार्टहैंड का आविष्कार हुआ। फिर सन् 1630 ई. त्वरालेखन पर एक पुस्तक प्रकाशित कराई। इसके पश्चात् सन् 1737 ई. में त्वरालेखन की 'यूनिवर्सल इंगलिश शार्ट हैंड' नामक एक पुस्तक प्रकाशित कराई। किंतु इन सभी पद्धतियों में लघुप्राण अक्षरों को हटाकर तथा कुछ अन्य अक्षरों को शब्दों के बीच में से निकालकर संक्षिप्त किया जाता था, इससे वक्ता के भाषण को नोट करने में सहूलियत हो जाती थी। लेकिन इसके साथ ही ध्वनि के आधार पर लिखने का भी प्रयास होता रहा।

ध्वनि पद्धति (Phonetic System) : ध्वनि पद्धति की पुस्तक 'स्टेगोग्राफिक साउंड हैंड' (Stenographic Sound hand) सन् 1937 ई. में प्रकाशित हुई। इस पद्धति में स्वर और व्यंजनों को अलग-अलग चिन्हों से निर्धारित किया गया । साथ ही संक्षिप्त करने का भी एक नियम बनाया गया । इस पद्धति का विकास होता गया और आगे चलकर यह प्रणाली बहुत ही

उपादेय सिद्ध हुई। अंग्रेजी में पिटमैन्स प्रणाली का ही विशेष प्रचलन है।

यह सर्वमान्य सत्य है कि आशुलिपि का अविष्कार सर्वप्रथम अंग्रेजी में हुआ। अन्य देशों तथा अन्य भाषा-भाषी लोगों में इसे यथावत स्वीकार किया है। जैसे महाराष्ट्र में लिमये आशुलिपि प्रचलित है। भारत सरकार राजभाषा विभाग की "मानक" आशुलिपि प्रणाली आविष्कृत हुई, जो आज देश में अत्यंत लोकप्रिय है, लेकिन इसका श्रेय सर इजाक पिटमैन को जाता है क्योंकि हिंदी की अधिकांश वर्तमान प्रणालियां भी पिटमैन प्रणाली पर ही आधारित है।

हिंदी त्वरालेखन आर्थिक दृष्टि से लाभजनक न होने तथा ब्रिटिश भारत में हिंदी का महत्वपूर्ण स्थान, सरकारी कार्यालयों में न होने के कारण त्वरालेखन के अन्वेषण के विषय में प्रयास अपेक्षाकृत काफी विलंब से हुआ। किंतु फिर भी त्वरालेखन के आविष्कार के लिये यदाकदा प्रयत्न होते रहे। स्वाधीनता प्राप्ति के लिये किए जानेवाले आंदोलनों के समय, हिंदी में हुए नेताओं के भाषणों को ब्रिटिश भारत की सरकार नोट कराती थी, जिससे वह सरकार के विरुद्ध प्रकट किए गये आपत्तिजनक विचारों के लिए नेताओं को उत्तरदायी ठहरा सके। उस समय अंग्रेजी के पिटमैन शार्टहैंड के ही आधार पर, अभ्यास के बल पर, भाषणों के नोट लिए जाते थे, किंतु साथ ही हिंदी के त्वरालेखन की नींव पड़ गई थी।

स्टेनोग्राफर एक पेशा है जो अंग्रेजी या किसी अन्य क्षेत्रीय भाषा को कोडित भाषा में आशुलिपि (Shorthand) के रूप में जाना जाता है और फिर उसे मूल भाषा में फिर से दोहराता है जो कि 200 शब्द प्रति मिनट के रूप में तेज़ है। यह एकमात्र पेशा है जो प्रौद्योगिकी के आगमन से कम से कम प्रभावित होता है।

हर जगह उस स्थान पर स्टेनोग्राफर आवश्यक है सभी क्षेत्रों में स्टेनोग्राफर की उच्च मांग है, यह अदालतों, प्रेस बैठकें, सरकारी कार्यालयों, कॉर्पोरेट हाउस में सीईओ के सचिव या सहायकों के रूप में, चिकित्सकों, राजनीतिज्ञों जैसे उच्च प्रोफ़ाइल वाले लोगों के निजी सचिवों के रूप में हो सकता है।

एक स्टेनोग्राफर बनने के लिए वास्तव में समर्पित और मेहनती होना चाहिए। एक स्टेनोग्राफर की नौकरी अंग्रेजी और कुछ अन्य क्षेत्रीय भाषा पर अच्छे कमान के साथ शॉर्टहैंड के गहन ज्ञान की मांग करती है, जिसमें कोई भी काम करना चाहता है।

शार्टहैन्ड (आशुलिपि) का कोर्स शासकीय संस्थाओं में जैसे

· पॉलिटेक्निक कॉलेजों में एम. ओ. एम (आधुनिक कार्यालय प्रबंधन या मॉडर्न ऑफिस मैनेजमेंट) के रूप में उपलब्ध है। इसमें आशुलिपि के अलावा कम्प्यूटर, टंकण एवं लेखा (Account) से संबंधित कोर्स करवाये जाते हैं।

· भारतीय तकनीकी संस्थानों - औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं (आई.टी.आई), निजी टंकण संस्थाओं में भी यह कोर्स करवाया जाता है। जिसकी अवधि 1 वर्ष की होती है। इसमें आशुलिपि के अलावा अन्य सहायक विषय एवं टंकण कोर्स भी महत्वपूर्ण होते हैं। इन संस्थाओं में 100 एवं 80 शब्द प्रति मिनट की गति से परीक्षाएँ (G.C.C.) द्वारा ली जाती है।

स्टेनोग्राफर (आशुलिपिक) बनने के लिए 100 शब्द प्रति मिनट की गति उत्तीर्ण करना आवश्यक होता है। स्टेनोग्राफर का पद हर राज्यों के शासकीय कार्यालयों में, मंत्रालयों में, रेलवे विभागों में होते हैं। हर साल स्टेनोग्राफरों की भर्ती से संबंधित विज्ञापन पर्याप्त मात्रा में निकलते हैं। एक कुशल स्टेनोग्राफर बनने के लिए उसे उस विषय की भाषा का व्याकरण का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। स्टेनोग्राफर पर अपने कार्यालय/संस्था के गोपनीय रिकार्डो को संभालने का दायित्व रहता है। यह अपने अधिकारी के प्रति विश्वसनीय पद है, इस पद पर काम करना एक गरिमापूर्ण व चुनौतीपूर्ण कार्य है।

आज का समाज बहुत ही तीव्रगति से प्रगति के उच्चतम सोपानों की ओर बढ़ रहा है, व्यक्तियों के जीवन में व्यस्ततायें निरंतर बढ़ती ही जा रही हैं। फलतः व्यक्ति और समाज को योग्य सहयोगियों की आवश्यकता अनुभूत होती जा रही है। वर्तमान में संगणक एवं मोबाईल में कट-पेस्ट जैसे आसान तरीके अपनाना समाज को भारी पसंद है, लेकिन यह अब जो लोग पहले व्याकरण से जुड़े हैं, उन्होंने किया हुआ काम पर चल रहा है। लेकिन भविष्य में मूल व्याकरण का योग्य रूप जानने वाले यानि भाषाई एवं आशुलिपिकों की संख्या कम होने लगी तो कार्यालयों के काम-काज में बहुत असर होगा। आज कठिनाई की वजह से आशुलिपि में रूचि लेना कोई पसंद नहीं करता है, लेकिन आशुलिपि सीखने को बढ़ावा देने का समय आ चूका है।

अंततः मैं यह कहना चाहती हूं कि आशुलिपि समाज के नव जवानों के लिए एक बेहतर भविष्य है, सिर्फ इसे अपनाने की आवश्यकता है। मुझे आशा है और विश्वास है कि भारतीय जनता आज नहीं तो कल अपनी लिपि के ऐतिहासिक महत्त्व का अनुभव करेगी।

छमाही पत्रिका

प्रयोजनमूलक हिंदी

- सूर्यशेखर,
अनुदेशक मडगांव

कोंकण रेलवे भारत के पश्चिमी तट से पहाड़ों और नदियों से गुजरती है। इस बीहड़ भू-भाग में कई सुरंग और पुलों का निर्माण कार्य करके रेलवे लाइन तैयार करने के लिए कोंकण रेलवे एक इंजीनियरी चमत्कार के रूप में जानी जाती है। कोंकण रेलवे अपनी निर्माण परियोजनाओं के साथ-साथ गाड़ियों का परिचालन भी कर रही है। रेलवे परिचालन के दौरान विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं। अपने परिचालन, संरक्षा संबंधी प्रशिक्षण के साथ कोंकण रेलवे राजभाषा का भी प्रशिक्षण देती है।

राजभाषा प्रशिक्षण ज्यादा तर संवादात्मक तरीके से दिया जाता है। ऐसा ही एक व्याख्यान यहां प्रस्तुत हैः-

विद्यार्थी - सुप्रभात महोदय।

व्याख्याता - सुप्रभात। आज के व्याख्यान का विषय है प्रयोजनमूलक हिन्दी।

विद्यार्थी- जी महोदय।

व्याख्याता- क्या आप राजभाषा नियम, 1976 के बारे में जानकारी दे सकते हैं?

विद्यार्थी- महोदय कृपया आप ही बताएं।

व्याख्याता- ठीक है।

राजभाषा नियम, 1976

1. संक्षिप्त नाम, विस्तार और प्रारम्भ--

क. इन नियमों का संक्षिप्त नाम राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976 है।

ख. इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

ग. ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएं-- इन नियमों में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न होः-

क. 'अधिनियम' से राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) अभिप्रेत है;

ख. 'केन्द्रीय सरकार के कार्यालय' के अन्तर्गत निम्नलिखित भी है, अर्थातः-

i. केन्द्रीय सरकार का कोई मंत्रालय, विभाग या कार्यालय;

ii. केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किसी आयोग, समिति या अधिकरण का कोई कार्यालय; और

iii. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में या नियंत्रण के अधीन किसी निगम या कम्पनी का कोई कार्यालय;

ग 'कर्मचारी' से केन्द्रीय सरकार के कार्यालय में नियोजित कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

घ 'अधिसूचित कार्यालय' से नियम 10 के उपनियम (4) के अधीन अधिसूचित कार्यालय, अभिप्रेत है;

ङ 'हिन्दी में प्रवीणता' से नियम 9 में वर्णित प्रवीणता अभिप्रेत है ;

च. 'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

छ. 'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

ज. 'क्षेत्र ग' से खंड (च) और (छ) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

झ हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान' से नियम 10 में वर्णित कार्यसाधक ज्ञान अभिप्रेत है।

3. राज्यों आदि और केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से भिन्न कार्यालयों के साथ पत्रादि-

1. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि असाधारण दशाओं को छोड़कर हिन्दी में होंगे और यदि उनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से--

क. क्षेत्र 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) को पत्रादि सामान्यतया हिन्दी में होंगे और यदि इनमें से किसी को कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजे जाते हैं तो उनके साथ उनका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगाः परन्तु यदि कोई ऐसा राज्य या संघ राज्य क्षेत्र यह चाहता है कि

किसी विशिष्ट वर्ग या प्रवर्ग के पत्रादि या उसके किसी कार्यालय के लिए आशयित पत्रादि संबद्ध राज्य या संघ राज्यक्षेत्र की सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट अवधि तक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजे जाएं और उसके साथ दूसरी भाषा में उसका अनुवाद भी भेजा जाए तो ऐसे पत्रादि उसी रीति से भेजे जाएंगे ;-

ख. क्षेत्र 'ख' के किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

3. केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'ग' में किसी राज्य या संघ राज्यक्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो)या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

4. उप नियम (1) और (2) में किसी बात के होते हुए भी, क्षेत्र 'ग' में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से क्षेत्र 'क' 'या' 'ख' में किसी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केन्द्रीय सरकार का कार्यालय न हो) या व्यक्ति को पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं। परन्तु हिन्दी में पत्रादि ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करें।

केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि-

. केन्द्रीय सरकार के किसी एक मंत्रालय या विभाग और किसी दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

क. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और क्षेत्र 'क' में स्थित संलग्न या अधीनस्थ कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी में होंगे और ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार, ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या, हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे संबंधित आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए, समय-समय पर अवधारित करे;

ख. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के ऐसे कार्यालयों के बीच, जो खण्ड (क) या खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट कार्यालयों से भिन्न हैं, पत्रादि हिन्दी में होंगे;

ग. क्षेत्र 'क' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों और क्षेत्र 'ख' 'या' 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

घ. क्षेत्र 'ख' या 'ग' में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्रादि हिन्दी या अंग्रेजी में हो सकते हैं;

परन्तु ये पत्रादि हिन्दी में ऐसे अनुपात में होंगे जो केन्द्रीय सरकार ऐसे कार्यालयों में हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों की संख्या,हिन्दी में पत्रादि भेजने की सुविधाओं और उससे आनुषंगिक बातों को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर अवधारित करे ;

परन्तु जहां ऐसे पत्रादि--

i. क्षेत्र 'क' या क्षेत्र 'ख' किसी कार्यालय को संबोधित हैं वहां यदि आवश्यक हो तो, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, पत्रादि प्राप्त करने के स्थान पर किया जाएगा;

ii. क्षेत्र 'ग' में किसी कार्यालय को संबोधित है वहां, उनका दूसरी भाषा में अनुवाद, उनके साथ भेजा जाएगा;

परन्तु यह और कि यदि कोई पत्रादि किसी अधिसूचित कार्यालय को संबोधित है तो दूसरी भाषा में ऐसा अनुवाद उपलब्ध कराने की अपेक्षा नहीं की जाएगी।

नियम - 5

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर- नियम 3 और नियम 4 में किसी बात के होते हुए भी, हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

व्याख्याता- अब देखते हैं तकनीकी शब्द और हिन्दी में उनके अर्थ।

विद्युत इंजीनियरी

1. Earthed system – भू-संपर्कित प्रणाली
2. Elementary Section – प्रारंभिक खंड
3. Inductor – प्रेरक
4. Metal rectifier – धातु दिष्टकारी

5. Over current relay – अतिधारा रिले
6. Pitch – अंतराल
7. Resistance – प्रतिरोध
8. Transmission – प्रेषण / संचरण
9. Unbalanced circuit – असंतुलित परिपत्र
10. Water tight fitting – जलरोधी फिटिंग
11. Three phase – त्रिकला
12. Wattmeter method – वाटमापी/वाटमीटर- विधि

व्याख्याता - क्या आप इन शब्दों से परिचित हो गए हैं और अपने दैनंदिन कार्यों में इनका उपयोग कर सकेंगे ?

विद्यार्थी- जी महोदय।

व्याख्याता- इसी प्रकार कुछ और शब्दों से भी आपको परिचित करवा देते हैं।

स्थापना, प्रबंध एवं प्रशासन

1. Accountable – उत्तरदायी
2. Accounts head – लेखा शीर्ष
3. Anomaly – असंगति, विषमता
4. Basic tradesman – बुनियादी दस्तकार
5. On probation – परिवीक्षाधीन
6. Sworn affidavit – निष्पादित शपथ
7. Souvenir – स्मारिका
8. Specified – विशिष्ट
9. Triplicate – तीन प्रतियां
10. Violation – अतिक्रमण
11. Writ petition – याचिका
12. Invariably – निरपवाद रूप से

वाक्यांश

The task will be assigned to high ranking officers.	यह कार्य उच्च श्रेणीक्रम के अधिकारियों को सौंपा जाएगा।
Only one railway warrant is given at the dispatching station by the authorities.	प्राधिकारियों द्वारा रेलगाड़ी के प्रस्थान स्टेशन पर केवल एक रेल वारंट दिया जाता है।
The Indian Railway has provided the facility of railway reservation for general public	भारतीय रेलवे ने आम जनता के लिए रेल आरक्षण की सुविधा प्रदान की है।
Railway freight for the carriage of goods will be chargeable as per rule.	माल के परिवहन के लिए रेल मालभाड़ा नियमानुसार देना होगा।
The rail car fare will be admissible as per entitlement under these rules.	रेल कार किराया इन नियमों के अंतर्गत पात्रता के अनुसार स्वीकार्य होगा।
Files should be kept in a rack in the prescribed manner.	फाइलों को निर्धारित तरीके से रेक में रखा जाना चाहिए।

विद्यार्थी - धन्यवाद सर।

व्याख्याता - इसी के साथ मैं कुछ कार्यालयीन पत्रों के नमूने भी आपके सीखाता हूं।

आदेश

बोर्ड ने विनिश्चय किया है कि श्री..... संयुक्त निदेशक, यातायात वाणिज्य को थल सेना मुख्यालय में स्थानापन्न संयुक्त निदेशक, रेल (मिल रेल) के रूप में स्थानांतरित और नियुक्त किया जाए।

हस्ता/-
उप सचिव, रेलवे बोर्ड

प्रेषक :
.....
.....

अर्ध शासकीय पत्र

प्रिय श्री

विषय.....

उपर्युक्त विषय पर कृपया इस कार्यालय का दिनांक..... का समसंख्यक पत्र देखें। इस पत्र का उत्तर दिनांक..... तक आ जाना चाहिए था। इसमें काफी विलंब हो गया है, इसलिए कृपया तुरंत उत्तर भिजवाएं।

आपका/ भवदीय

श्री.....

आशा करता हूँ कि इस अभ्यास से आपका कार्यालयीन कार्य आसान हो जाएगा और आप अपने हिन्दी कार्य में वृद्धि करेंगे।
विध्यार्थी- आपके इस मार्गदर्शन का हम अपने दैनिक कार्य में जरूर उपयोग करेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन

- श्रेया काकडे
वरिष्ठ लिपिक, बेलापुर

देश का ऊर्जा क्षेत्र का प्रबंधन आज न केवल आर्थिक दृष्टि से अहम है बल्कि जलवायु परिवर्तन (Climate change) के खतरों से निपटने के लिए कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिहाज से भी बहुत अहम है क्योंकि आज भी ज्यादातर ऊर्जा उत्पादन तापीय उर्जा संयंत्र से होती है जो पूरी तरह से कोयले के उपयोग पर निर्भर है। भारत देश का आर्थिक विकास जिस तेजी से हो रहा है उतनी ही तेजी से ऊर्जा की मांग भी बढ़ती जा रही है। प्रत्येक क्षेत्र की गतिविधियों के संचालन हेतु ऊर्जा एक प्रमुख संघटक है। ऊर्जा के बिना आर्थिक विकास भी सम्भव नहीं है। ऐसे में हाइड्रोजन ऊर्जा एक स्वच्छ और प्रचुर ऊर्जा के रूप में उम्मीदें जगाती है।

दरअसल पेट्रोलियम ईंधन के निरंतर महंगे होने व इससे होने वाले प्रदूषण को देखते हुए हरित व नवीकरणीय ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा देना देश के लिए जरूरी हो गया है। हाइड्रोजन का ईंधन के तौर पर इस्तेमाल इसी उद्देश्य से किया जाएगा। यह मिशन इस्पात व सीमेंट उद्योग जैसे उद्योग को कार्बन मुक्त करने के लिए भी जरूरी है।

हाइड्रोजन:

- आवर्त सारणी पर हाइड्रोजन पहला और सबसे हल्का तत्त्व है। चूँकि हाइड्रोजन का वज़न हवा से भी कम होता है, अतः यह वायुमंडल में ऊपर की ओर उठती है और इसलिये यह शुद्ध रूप में बहुत कम ही पाई जाती है।
- मानक तापमान और दबाव पर हाइड्रोजन एक गैर-विषाक्त, अधातु, गंधहीन, स्वादहीन, रंगहीन और अत्यधिक ज्वलनशील द्विपरमाणुक गैस है।
- हाइड्रोजन ईंधन एक शून्य-उत्सर्जन ईंधन है (ऑक्सीजन के साथ दहन के दौरान)। इसका उपयोग फ्यूल सेल या आंतरिक दहन इंजन में किया जा सकता है। इसका अंतरिक्षयान प्रणोदन के लिये ईंधन के रूप में भी उपयोग किया जाता है।

- **हाइड्रोजन के प्रकार:**

ग्रे हाइड्रोजन:

भारत में होने वाले हाइड्रोजन उत्पादन में सबसे अधिक ग्रे हाइड्रोजन का उत्पादन होता है। इसे हाइड्रोकार्बन (जीवाश्म ईंधन, प्राकृतिक गैस) से निकाला जाता है।

ब्लू हाइड्रोजन:

जीवाश्म ईंधन से प्राप्त होता है। इसके उत्पादन में उपोत्पाद को सुरक्षित रूप से संग्रहीत कर लिया जाता है अतः यह ग्रे हाइड्रोजन की तुलना में बेहतर होता है।

हरित हाइड्रोजन:

इसके उत्पादन में अक्षय ऊर्जा (जैसे- सौर या पवन) का उपयोग किया जाता है। इसके तहत विद्युत द्वारा जल (H2O) को हाइड्रोजन (H) और ऑक्सीजन (O2) में विभाजित किया जाता है।

उपोत्पाद: जल, जलवाष्प।

एशिया-प्रशांत का रुख:

- एशिया- प्रशांत उप- महाद्वीप में जापान और दक्षिण कोरिया हाइड्रोजन नीति बनाने के मामले में पहले पायदान पर हैं।
- वर्ष 2017 में जापान ने बुनियादी हाइड्रोजन रणनीति तैयार की, जो इस दिशा में वर्ष 2030 तक देश की कार्ययोजना निर्धारित करती है और जिसके तहत एक अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति शृंखला की स्थापना भी शामिल है।
- दक्षिण कोरिया अपनी 'हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था विकास और हाइड्रोजन का सुरक्षित प्रबंधन अधिनियम, 2020 के तत्त्वावधान में हाइड्रोजन परियोजनाओं तथा हाइड्रोजन फ्यूल सेल (Hydrogen Fuel Cell) उत्पादन इकाइयों का संचालन कर रहा है।
- दक्षिण कोरिया ने 'हाइड्रोजन का आर्थिक संवर्द्धन और सुरक्षा नियंत्रण अधिनियम' भी पारित किया है, जो तीन प्रमुख क्षेत्रों - हाइड्रोजन वाहन, चार्जिंग स्टेशन और फ्यूल सेल से संबंधित है। इस कानून का उद्देश्य देश के हाइड्रोजन मूल्य निर्धारण प्रणाली में पारदर्शिता लाना है।

· भारतीय संदर्भ:

· भारत को अपनी अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों और प्रचुर प्राकृतिक तत्त्वों की उपस्थिति के कारण हरित हाइड्रोजन उत्पादन में भारी बढ़त प्राप्त है।

· सरकार ने पूरे देश में गैस पाइपलाइन के बुनियादी ढाँचे को बढ़ाने में प्रोत्साहन दिया है और स्मार्ट ग्रिड की शुरुआत सहित पावर ग्रिड के सुधार हेतु प्रस्ताव पेश किया है। वर्तमान ऊर्जा मिश्रण में नवीकरणीय ऊर्जा को प्रभावी ढंग से एकीकृत करने के लिये इस तरह के कदम उठाए जा रहे हैं।

· अक्षय ऊर्जा उत्पादन, भंडारण और संचरण के माध्यम से भारत में हरित हाइड्रोजन का उत्पादन लागत प्रभावी हो सकता है, जो न केवल ऊर्जा सुरक्षा की गारंटी देगा, बल्कि देश को ऊर्जा के मामले में धीरे-धीरे आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायता करेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 6 नवंबर, 2020 को तीसरे वैश्विक अक्षय ऊर्जा निवेशकों की बैठक और एक्सपो (Re-invest) को संबोधित करते हुए घोषणा की कि भारत एक राष्ट्रीय हाइड्रोजन ऊर्जा मिशन प्रारंभ किए जाने की योजना बना रहा है,जो कार्बन उत्सर्जन मुक्त अगली पीढ़ी के ईंधन के साथ भारत के हरित ऊर्जा प्रयासों को गति प्रदान करेगा। भारत में हरित हाइड्रोजन संयंत्र बनाने तथा स्थापित किए जाने की योजना है, जो हरित ऊर्जा स्रोतों द्वारा उत्पादित बिजली से चलेगा और गतिशीलता के लिए जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करने में सहायता देगा। ऐसे हरित हाइड्रोजन संयंत्र ग्रिड-स्केल भंडारण समाधान प्रदान करेंगे तथा अमोनिया उत्पादन के लिए फीड स्टॉक प्रदान करेंगे। इसे नवोन्मेष क्षेत्र में निवेशकों को आमंत्रित करते हुए प्रधानमंत्री ने बताया कि भारत ने अपनी स्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता में ढाई गुना वृद्धि की है। नवंबर, 2020 के अंत में अक्षय ऊर्जा की स्थापित क्षमता 90399 मेगावाट थी, जिसमें से 36910 मेगावाट सौर ऊर्जा,38433 मेगावाट पवन ऊर्जा, 10146 मेगावाट बायोमास ऊर्जा,4740 मेगावाट लघु विद्युत ऊर्जा तथा 168.64 मेगावाट कचरे से ऊर्जा थी।

हाइड्रोजन एक स्वच्छ ईंधन और ऊर्जा वाहक है, जिसका उपयोग सरल और जीवाश्म ईंधन के संभावित विकल्प के रूप में अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला के निमित्त किया जा सकता है। अक्षय ऊर्जा मंत्रालय ने हाइड्रोजन ऊर्जा के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान, विकास और प्रदर्शनों परियोजनाओं का एक विस्तृत खाका तैयार किया है ताकि हाइड्रोजन की उत्पादन, भंडारण और यांत्रिक// तापीय/ विद्युत ऊर्जा के उत्पादन हेतु इसे प्रयुक्त किया जा सके। हाइड्रोजन से चलने वाले छोटे विद्युत जनरेटर सेट, मोटार साइकिलें, तिपहिया वाहन तथा आवासीय और औद्योगिक क्षेत्रों के लिए उत्प्रेरक दहन प्रणालियों, ईंधन सेल बसों को विकसित एवं प्रदर्शित किया जा चुका है।

हाइड्रोजन ऊर्जा और ईंधन पर एक व्यापक अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम का समर्थन अक्षय ऊर्जा मंत्रालय करता है। नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से हाइड्रोजन के उत्पादन से जुड़ी चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए औद्योगिक अकादमिक एवं अनुसंधान संस्थान को सहायता दी जाती है, ताकि ईंधन सैलों के दहन द्वारा परिवहन अनुप्रयोगों में उर्जा के स्रोतों के रूप में हाइड्रोजन का उत्पादन एवं सुरक्षित भंडारण किया जा सके, परिवहन के संबंध में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान नई दिल्ली , महिंद्रा एंड महिंद्रा को बड़ा काम दिया गया है। इसी का परिणाम है कि आंतरिक दहन इंजनों दुपहिया एवं तिपहिया वाहनों एवं मिनी बसों को हाइड्रोजन से चलाए जाने की तकनीक विकसित कर ली गई है।

हाइड्रोजन का उत्पादन अधिकांशत; प्राकृतिक गैस से किया जाता है। लेकिन भारत अपने आत्मनिर्भर मार्ग से हाइड्रोजन निकालने के लिए जहां एक ओर कोयले को प्रयुक्त करना चाहता है, तो वहीं दूसरी ओर ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों से हाइड्रोजन निकालना चाहता है। भारत में यद्यपि कोयले के बड़े भंडार मौजूद है। लेकिन उनके उपयोग को बढ़ाने से पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि होगी। दूसरी ओर नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत से उत्पादित बिजली की प्रति यूनिट कीमत हर वर्ष कम होती जा रही है। वर्तमान में भारत 50 प्रतिशत प्राकृतिक गैस की आयात करता है। देश में प्राकृतिक गैस के उपयोग में जिस प्रकार वृद्धी हो रही है उससे तो यही लगता है कि प्राकृतिक गैस की घरेलू उत्पादन में वृद्धि की तमाम

संभावनाओं के बावजूद इसके आयात पर निर्भरता में कमी नहीं आएगी। इसलिए हाइड्रोजन के उत्पादन हेतु प्राकृतिक कोयला तथा ऊर्जा के नवीकरणीय स्त्रोतों से उत्पादित बिजली को प्रयुक्त किए जाने के विकल्प खुले रखने होंगे।

मिशन हाइड्रोजन के उद्देश्य -

1. विभिन्न प्रक्रियाओं/ प्रौद्योगिकियों द्वारा हाइड्रोजन के उत्पादन की व्यवहार्यता का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना। विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा विभिन्न विधियों पर आधारित प्रक्रियाओं प्रौद्योगिकियों का।

2. हाइड्रोजन के भंडारण हेतु सामग्रियों/ प्रक्रियाओं/ उप-प्रणलियों/ प्रणालियों को विकसित करना।

3. स्थिर, ऑटोमोबाइल तथा पोर्टेबल अनुप्रयोगों हेतु ईंधन के रूप में हाइड्रोजन के उपयोग पर परियोजनाओं को सहायता देना।

4.सुरक्षा, मानकों एवं संहिताओं, क्षमता निर्माण तथा जन जागरूकता सहित हाइड्रोजन के उत्पादन, भंडारण तथा अनुप्रयोगों हेतु सार्वजनिक-निजी सहभागिता में हाइड्रोजन अधोरचना विकास परियोजनाओं को सहायता देना।

5. हाइड्रोजन के उत्पादन, भंडारण एवं अनुप्रयोगों से संबंधित प्रदर्शन परियोजनाओं को सहायता देना।

मिशन हाइड्रोजन से जुड़ी क्रियाएं-

· एक इंधन के रूप में हाइड्रोजन के उत्पादन भंडारण तथा उपयोग हेतु सामग्रियों /प्रक्रियाओं/ संयंत्रों में शोध।

· विद्युत उत्पादन एवं परिवहन क्षेत्रक हेतु हाइड्रोजन के अनुप्रयोगों से संबंधित विकास एवं प्रदर्शन।

· **प्रशिक्षण / मानव शक्ति विकास**

मिशन हाइड्रोजन के प्रमुख क्षेत्र-

· हाइड्रोजन ऊर्जा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित उत्पादों / प्रणालियों की उपलब्धियों में सामग्रियों,प्रक्रिया प्रौद्योगिकी विकास प्रोन्नयन के क्षेत्र में अनुसंधान।

· विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा विधियों को प्रयुक्त करते हुए पर्यावरणीय रूप से सौम्य तरीकों से हाइड्रोजन का उत्पादन और प्रदर्शन।

· एक इंधन के रूप में हाइड्रोजन अनुप्रयोगों का विकास और प्रदर्शन।

· सार्वजनिक- निजी- सहभागिता मोड में उर्जा के एक संवाहक के रूप में हाइड्रोजन के लिए अधोरचना का सृजन /विस्तार।

· आटोमोटिव और विकेंद्रीकृत विद्युत उत्पादन हेतु समर्पित हाइड्रोजन ऊर्जा का विकास।

· ऑटोमेटिव वाहनों में ईंधन के रूप में आयोजन के उपयोग हेतु हाइड्रोजन वितरण स्टेशनों की स्थापना।

· हाइड्रोजन का उपयोग- ऑटोमोबाइल्स में सीएनजी के साथ हाइड्रोजन का मिश्रण।

भारत में हाइड्रोजन भंडारण-

1. बनारस हिंदू विश्वविद्यालय,वाराणसी
2. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान चेन्नई / गुवाहाटी
3. राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान , नागपुर
4. राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुचिरापल्ली
5. इंटरनेशनल एडवांस रिसर्च सेंटर फॉर पॉउडर धातु कर्म और नई सामग्री,हैदराबाद
6. त्यागराज कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, मदुरे
7. इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी,

मुंबई हाइड्रोजनः उर्जा का संवाहक तकनीकी तौर पर हाइड्रोजन एक ईंधन नहीं है, वरन् बिजली की तरह ऊर्जा का एक अति दक्ष सेवाहक है।ऑटोमोबाइल -दुपहिया /तिपहिया वाहन, मिनी बसें , बसें से आदि तथा रेलवे ऊर्जा के नवीकरणीय स्त्रोतों पर आधारित विद्युत उत्पादन की ओर बढ़ रहे हैं। तथापि इस्पात और सीमेंट से संयंत्रों को ऊर्जा के नवीकरणीय सूत्रों से उनकी आवश्यकता के अनुरूप ऊर्जा ऊष्मा नहीं मिल सकती। हालांकि, हाइड्रोजन, इन संयंत्रों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप ऊष्मा प्रदान करने में सक्षम है।

वर्तमान में प्राकृतिक गैस से हाइड्रोजन का उत्पादन स्टीम मीथेन रिफार्म तकनीक से किया जाता है, तथापि यदि हाइड्रोजन को इलेक्ट्रोलिसिस क्रिया से पानी के अणु (H2O) को तोड़कर बनाया जाता है, तो यह नीली हाइड्रोजन के रूप में प्राप्त होती है।नीली हाइड्रोजन वस्तुतः नवीकरणीय ऊर्जा का स्त्रोत है।

· **नीतिगत चुनौतियाँ:**

· उद्योगों द्वारा व्यावसायिक रूप से हाइड्रोजन का उपयोग करने में हरित या ब्लू हाइड्रोजन के निष्कर्षण की आर्थिक वहनीयता सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है।

· हाइड्रोजन के उत्पादन और दोहन में उपयोग की जाने वाली तकनीकें जैसे-कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (CCS) तथा हाइड्रोजन फ्यूल सेल प्रौद्योगिकी आदि अभी प्रारंभिक

अवस्था में हैं एवं ये महँगी भी हैं। जो हाइड्रोजन की उत्पादन लागत को बढ़ाती हैं।

· एक संयंत्र के पूरा होने के बाद फ्यूल सेल के रखरखाव की लागत काफी अधिक हो सकती है।

· ईंधन के रूप में और उद्योगों में हाइड्रोजन के व्यावसायिक उपयोग के लिये अनुसंधान व विकास , भंडारण, परिवहन एवं मांग निर्माण हेतु हाइड्रोजन के उत्पादन से जुड़ी प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढाँचे में काफी अधिक निवेश करने की आवश्यकता होगी।

हाइड्रोजनः पर्यावरण मित्रवत्

· स्वच्छ हाइड्रोजन वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 34% तक की कमी ला सकती है।

· भारत हाइड्रोजन निकालने के लिए एक छोर पर कोयला तथा दूसरे छोर पर अक्षय ऊर्जा स्रोत को प्रयुक्त करना चाहता है।

· हाइड्रोजन कोई इंधन नहीं है, वरन बिजली की तरह ऊर्जा का एक दक्ष संवाहक है।

· नवीकरणीय एवं नवीन ऊर्जा स्रोत मंत्रालय का आकलन है कि 1 किलोग्राम हैड्रोजन उत्पादन करने की लागत रुपए 200 से रुपए 250 तक है, जो ऊर्जा के अन्य सूत्रों की कीमतों के समतुल्य है।

· नवीकरणीय एवं नवीन ऊर्जा स्रोत मंत्रालय तथा नीति आयोग दोनों का ही यह मानना है कि इलेक्ट्रोलिसिस से हाइड्रोजन का उत्पादन करना अपेक्षाकृत अधिक किफायती है। सन 2025 तक वैश्विक स्तर पर इलेक्ट्रोलिसिस से हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता सन 2015 की तुलना में 55 गुना बढ़ जाने की संभावना है।

राष्ट्रीय एकता के संदर्भ में हिन्दी का महत्व

- संतोष पाटोळे
राजभाषा सहायक, रत्नागिरी

राष्ट्रीय एकता के संदर्भ मे हिन्दी के महत्व का बखान बहुत लोगों ने किया है पर शायद ही कोई यह बता पाया हो कि आखिर राष्ट्रीय एकता की जरूरत किसे और क्यों है? इस एकता की जरूरत समाज को है या व्यक्ति को है? हमारा यह प्रश्न अटपटा जरूर लगता है पर चिंतन के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे यह बुद्धिजीवियों का झुंड अब राष्ट्र, प्रदेश, शहर, मोहल्ला, परिवार और व्यक्ति के क्रम में सोचता है और यही कारण है कि वह राजकीय संस्थाओं से ही हिन्दी के विकास का सपना देखता है। हम व्यक्ति से राष्ट्र के क्रम में सोचते हैं। हमारा मानना है कि व्यक्ति मजबूत हो तो ही राष्ट्र मजबूत हो सकता है। इस मजबूती को आधार अपनी भूमि, भाव तथा भाषा के प्रति विश्वास दिखाने और उसे निभाने से ही मिल सकता है। हम आज देश में अनेक प्रकार के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक संकटों के आक्रमण का सामना कर रहे हैं। समाज डोलता दिख रहा है। यही स्थिति हमारी राष्ट्रभाषा की भी है। हमारा मानना है कि इस संकट का कारण यही है कि हम अपनी भाषा के प्रति उदासीन रवैया अपनाए हुए हैं। हर कोई हिन्दी के विकास की बात कर रहा है पर पुरस्कारों तथा सन्मान का मोह ऐसा है कि लोग अपनी भाषा की सच्चाई के प्रति उदासीन हैं। आखिर हिन्दी के प्रति हमें सतर्क क्यों होना चाहिए, इसी उत्तर की खोज ही राष्ट्रीय एकता में हिन्दी का महत्व सिद्ध कर सकती है।

जब तक सरकारी नौकरी ही इस देश में मध्यम वर्ग का आधार था तब सरकारी कामकाज में अँग्रेजी भाषा का वर्चस्व था। उस समय इसकी आलोचना के जवाब में कहा जाता था कि हिन्दी को रोजगारमूलक बनाया जाना चाहिए। कालांतर में हिन्दी के कामकाज का प्रभाव बढ़ा। अब मध्यम वर्ग के लिए नौकरियां सरकारी क्षेत्र में कम है और निजी क्षेत्र इसके लिए आगे आता जा रहा है। ले - देकर बात वहीं आकर अटकती है

कि वहाँ हिन्दी वाले को कोई सफ़ेद कॉलर वाली नौकरी नहीं मिल सकती। यही कारण है कि आज की युवा पीढ़ी जो नौकरी का लक्ष्य लेकर पढ़ रही है वह अँग्रेजी के साथ आगे बढ़ रही है। प्रश्न यह है कि क्या वह बिना हिन्दी के कितना आगे बढ़ पाएगी। एक बात साफ कर दें कि नौकरी में योग्यता एक अलग मायने रखती है। संभव है कि बारहवीं पास अँग्रेजी न जानने वाला कहीं प्रबन्धक बन जाए। उसके नीचे अँग्रेजी का इंजीनियर काम करें। प्रबंध कौशल अपने आप में एक अलग विधा है और जिनमें यह गुण है उनके लिए अँग्रेजी कोई मायने नहीं रखती। ऐसे में कहीं अगर किसी संस्थान में शक्ति का केंद्र किसी हिन्दी भाषी के पास रहा तो उसे कभी खुशामद भी करनी होती है जो केवल हिन्दी में सहज हो सकती है। ऐसे में व्यक्ति को अपनी विकास यात्रा के लिए हिन्दी भाषा न होने या अल्प होने से बाधा लगेगी तो वह क्या करेगा? अगर हिन्दी के सहारे कोई विकास करता है यकीनन वह राष्ट्र का ही कल्याण करेगा। उसका विकास अंततः कहीं न कहीं राष्ट्र के प्रति उसका आत्मविश्वास बढ़ाता है जिससे वह दूसरे लोगों के साथ एक होकर रहना चाहता है।

दूसरी बात यह है कि हमारे देश में समय के साथ राष्ट्रीय स्तर पर इधर से उधर रोजगार के कारण पलायन बहुत हुआ है। पहले हम अपने देश का मानसिक भूगोल समझें। हमारा पूर्व क्षेत्र वन के साथ खनिज, पश्चिम उद्योग, उत्तर प्रकृति के साथ ही मनुष्य तथा दक्षिण बौद्धिक सम्पदा की दृष्टि अत्यंत संपन्न है। हम यहां उत्तर की प्रकृति तथा मनुष्य सम्पदा की बात करेंगे। दरअसल हमारे उत्तरी मध्य क्षेत्र में कृषि सम्पदा है तो यहाँ जनसंख्या घनत्व भी अधिक है। जहां -जहां बौद्धिक रूप से श्रेष्ठता का प्रश्न हो वहां दक्षिणवासी लोगों का कोई जवाब नहीं तो उत्तर भारतीय लोगों को लोहा माना जाता है। खासतौर से बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान से श्रम शक्ति पूरे भारत में फैली है। जिस तरह भारत से बाहर गए श्रमशील व्यक्तियों ने हिन्दी का विदेश में विस्तार किया वैसे ही इन हिन्दी भाषी श्रमिकों ने भारत के अंदर ही हिन्दी का विस्तार किया है। यहाँ यह भी बता दें भारत के बाहर नौकरी के लिए ही अँग्रेजी का महत्व है वरना व्यापार में केवल बुद्धि की ही आवश्यकता होती है। भारत के अनेक लोग ऐसे भी है जो गुलामी के समय में विदेशों में गए और अँग्रेजी न आने के बावजूद व्यापार किया। वह सफल और बड़े व्यापारी बने। पंजाब से गए अनेक लोगों ने बिना अँग्रेजी के अपना काम किया। स्थिति यह है कि अनेक लोग तो यह कहने लगे हैं कि विदेशों में कई क्षेत्र ऐसे है जहां हिन्दी का प्रभाव साफ दिखता है। अनेक गैर हिन्दी प्रदेशों में जाने पर वहां हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है। हम भारत में भी यही देख सकते हैं। अनेक गैर हिन्दी प्रदेशों में जाने पर वहां हिन्दी में वार्तालाप किया जा सकता है। कहीं-कहीं तो अँग्रेजी का ज्ञान न होने वाले भी है पर हिन्दी में वहां भी काम हो जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि भले ही कोई हिन्दी न जानता पर उससे आप अपनी भाषा के कारण आत्मीयता का व्यवहार तो पा ही सकते हो जो कि समय पड़ने पर अत्यंत आवश्यक होता है।

हम देख रहे हैं कि भारत में कंपनियां अपना विस्तार सभी जगह कर रही है। वह चाहें या न चाहे उन्हें शारीरिक श्रम करने वाले लोगों की आवश्यकता होती है। तय बात है कि अँग्रेजी वालों में शारीरिक क्षमता अधिक नहीं होती। अब स्थिति यह भी हो सकती है कि कहीं प्रबन्धक अँग्रेजी का है तो बौद्धिक काम वालों को उसे प्रभावित करने के लिए अँग्रेजी की आवश्यकता पड़ सकती है। अगर कहीं शारीरिक श्रम की बहुलता है तो प्रबन्धक को भी श्रमिकों से काम लेने के लिए हिन्दी पूर्णरूप से आनी ही चाहिए। कहने का मतलब यही है कि पूंजी, श्रम और बुद्धि का तारतम्य अब इस देश में केवल हिन्दी भाषा से जम सकता है। औद्योगिक विकास के लिए तीनों की आवश्यकता होती है। श्रम शक्ति पर निर्भर रहने वाले पढ़ाई नहीं करते या कम करते हैं उनसे काम लेने के लिए पूंजी और बौद्धिक वर्ग को उसकी भाषा आनी चाहिए।

हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि हम जब कृषि पर निर्भर थे तब जितनी हिन्दी भाषा की आवश्यकता थी। उससे ज्यादा अब है। पूंजी, बुद्धि और श्रम का तारतम्य अब हिन्दी के बिना संभव नहीं है। तय बात है कि तीनों के बीच एकरूपता होगी तो उनसे जुड़े तीनों व्यक्तियों को भी उसका प्रतिफल मिलेगा। तब उनमें स्वयमेव एकता होगी देश एक उन्नति की ओर बढ़ेगा।

सादर सेवा
छमाही पत्रिका

एक भारत श्रेष्ठ भारत

- सुवर्णा बर्डे,
वैयक्तिक सचिव, बेलापुर

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने 31 अक्तूबर, 2015 को सरदार वल्लभभाई पटेल जी के जयंती पर "एकता दिवस" पर "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की योजना की घोषणा की । प्रधानमंत्रीजी ने अपना देश का भार जिस दिन से संभाला हैं – एक से बढ़कर एक नयी योजनाएँ और उसी के साथ बंद पड़ी हुई योजनाएँ नए सिरे से शुरू की हैं। इस योजनाओं द्वारा देश का विकास होकर देश को प्रगति के पथ पर ले जाने का उनका मनसूबा भलीभाँति नजर आता हैं। शुरुवात मे उन्होने स्वच्छ भारत अभियान जो कि महात्मा गांधीजी का भी सपना था उसे शुरू किया । महात्मा गांधीजी के 2019 के 150 जयंती पर सम्पूर्ण भारत को स्वच्छता से पूर्ण रूप में देखने के हेतु इस अभियान को सफल बनाने के लिए सभी भारतवासियों को आवाहन किया। इस अभियान तहत उन्होंने न कि केवल बड़े बड़े हस्तियों, अंबेसडरों को शामिल किया बल्कि हर नागरिक को उसमे शामिल होने के लिए ज़िम्मेदारी दी । हमारे देश का विकास करना हैं तो हर नागरिक को स्वच्छता का महत्व को जानना जरूरी हैं। केवल शहरों में ही नहीं बल्कि हर एक छोटे से गाँव में घर-घर में भी शौचालय की व्यवस्था होना अनिवार्य किया और साथ ही उसे प्रत्यक्ष रूप में लाने के लिए करोड़ रुपए की साझेदारी भी की। अगर हर जगह साफ सुथरा होना कितना जरुरी हैं जैसे घर, सड़के, कार्यालय, पर्यटन स्थल सभी जगह स्वच्छता के लिए एक मिसाल कायम करने का प्रयास किया। जिससे हमारे अस्वच्छता की वजह से जो बाहरी देशों में हमें कोसा जाता हैं उससे हम उभर सके और विदेश में हमारे देश के प्रति गर्व हो। इससे न केवल हमें स्वच्छ भारत बनाने से फायदा होगा बल्कि पर्यटन में भी बहुत फायदा होगा, पर्यटक ज्यादा से ज्यादा भारत भ्रमण के लिए आकर्षित होंगे और यह हमारे आर्थिक स्थिति की मजबूती में फायदेमंद साबित होगा। इसलिए हमें एक होना बहुत जरूरी हैं। हम एक होकर जो कर सकते हैं वह अलग अलग होकर कभी नहीं यह हम सभी को ज्ञात हैं।

सभी को शिक्षित होना जरुई हैं- शिक्षा एक ऐसा माध्यम हैं जिसमे सिर्फ फायदा ही फायदा हैं। यह ज्ञान कभी खाली नहीं जाता हैं। हर देश की प्रगति की प्रथम नींव शिक्षा हैं। एक शिक्षित माता-पिता की सोच जिस तरह अपने बच्चों को शिक्षित बनाने में मदद करती है। बिलकुल उसी तरह प्रधानमंत्री जी ने सभी का पिता बनकर अपने देशवासियों को अपने बच्चों को चाहे वह लड़की हो या लड़का बराबर से शिक्षा देना हर एक माँ-बाप से आवाहन किया हैं इसके चलते उन्होने सभी को शिक्षित बनाने के लिए प्रेरित करते हुए शिक्षा योजना मे बहुत सारी सुविधाओं का प्रावदान किया जिसके अंतर्गत हर लड़की को 6-14 वर्ष तक विनामूल्य पढ़ने के लिए तथा उसके साथ ही शिक्षा की सभी सामाग्री यहाँ तक की उन्हें स्कूल मे अच्छे भोजन की भी व्यवस्था की गयी हैं। जिससे कोई भी स्त्री अनपढ़ बनकर न रहे। महिलाएं शिक्षित होगी तो न केवल घर की आर्थिक स्थिति को संभालेगी बल्कि देश के विकास कार्य मे भी आगे आएगी। इसके चलते उन्होने सुकन्या समृद्धि जैसी योजना बनाई हैं। जिससे वह अपने पैरो पर खड़ी हो सके, अन्याय के प्रति आवाज उठा सके। आगे की पढ़ाई के लिए भी सरकार द्वारा बहुत सारी योजनाएँ हैं जिसमें आर्थिक स्थिति के चलते अगर परेशानी है तो उन सभी विद्यार्थियों को विनामूल्य पढ़ने की व्यवस्था का भी प्रावधान किया हैं। जिससे हर व्यक्ति जो गरीब हो या अमीर पढे और शिक्षित बनें। इससे शिक्षा मे भी समानता लाकर भारत को सर्वश्रेष्ठ बनाने का प्रयास बहुत ही सराहनीय हैं।

आवास योजना- सभी देशवासी जिन्हे रहने के लिए पक्के मकान नहीं हैं, जो झोपड़ी मे रहते हैं, उन्हे वर्ष 2022 तक 20 मिलियन अच्छे आवास –रहने की व्यवस्था इस योजना के अंतर्गत सरकार द्वारा की गयी हैं। उसमें से 18 मिलियन झोपड़ियाँ में रहने वाले और बाकी दो मिलियन आर्थिक दुर्बल उनके लिए यह योजना बनाई गयी हैं। इसमें सरकार द्वारा अच्छे रहने का इंतजाम, सभी जरूरतें जैसे पानी, बिजली और गैस की सुविधा होगी। हर व्यक्ति की प्राथमिक आवश्यकताएँ पूरी होगी। जिससे वह मानसिक शांति से रहेगा और अपने कामकाज में मन लगाकर मेहनत करेगा इसका परिणाम हमारे देश की आर्थिक स्थिति पर निश्चित रूप से पड़ेगा। सभी को घर और प्राथमिक आवश्यकताएँ जो हर नागरिक का हक हैं वह उन्हें मिलेगी । व्यक्ति को आम जिंदगी जीने के लिए प्राथमिक

आवश्यकता की पूर्ति होना बहुत ही आवश्यक हैं और इस योजना के अंतर्गत यह सुविधा प्राप्त होगी। भले ही हम पैसों की समान रेखाएँ नहीं पाएंगे लेकिन जो प्राथमिक आवश्यकताएँ हैं उसके लिए अब तरसना नहीं पड़ेगा। यही सभी देशवासियों को एक करने मे और देश को सर्वश्रेष्ठ बनाने में कामयाब होंगे।

नोटबंदी – एक ऐसा सिक्का जो प्रधानमंत्री मोदी जी ने 2016 में लागू किया जिसके चलते देश की करेंसी पर उसका बहुत बड़ा असर दिखाई दिया। जो घर में और दफ्तर में रखे काले धन को बंकों में जमा किया गया और करोड़ो रुपए कुछ ही दिनों मे बैंक में जमा कर दिए गए। जिससे कि देश की आर्थिक स्थिति में बदलाव लाया। भ्रष्टाचार को कम करने में यह बहुत ही असरदार रहा। देश में व्यापार करने वाली 3 लाख से ज्यादा फर्जी कंपनियां रडार पर हैं, जबकि 2.1 लाख फर्जी कंपनियों का रजिस्ट्रेशन कैंसल कर दिया गया है। इसमें बताया गया है कि नोटबंदी के चलते 400 से ज्यादा बेनामी लेनदेन की पहचान हो गयी। अब तो काले धन को लेना भी मुश्किल और देना भी मुश्किल हो गया हैं। सभी व्यवहार शत-प्रतिशत पारदर्शिता में बदल गए। हर व्यक्ति अगर देश के उज्वल भविष्य के बारे में सोचे तो जमाखोरी नहीं होगी और जो भ्रष्टाचार हो रहा हैं वह भी न के बराबर हो जाएगा। अगर हर व्यक्ति अपने काम से मिले उत्पन्न से खुश रहे और ज्यादा लालच न करें तो देश में जो गरीबी अमीरी की बड़ी दिवार बनी हैं यह मिट जाएगी। यही सोचकर इस योजनाओं को प्रधानमंत्री जी ने इस नोटबंदी को अपनाया ताकि भ्रष्टाचार से जमाखोरी को लगाम लगाया जा सके। इससे सभी देशवासियों में समानता बनी रहेगी और एक श्रेष्ठ भारत बनने में हमें कोई रोक नहीं पाएगा।

आत्मनिर्भरता- हमारा देश छोटी-छोटी वस्तुओं के लिए भी दूसरों देशों पर निर्भर हैं। हमारे देश में इलेक्ट्रॉनिक योजनाओं के आइटम बाहरी देश से मांगते हैं। हमारा यहाँ कुशल कारीगर की कोई कमी नहीं हैं। मेक इन इंडिया को योजना के तहत देश में विदेशियों को व्यापार करने के लिए निवेश के तौर पर खुला कर, अपने ही देश के कारीगर को वहाँ पर काम देकर स्वदेशी वस्तुएँ बनाने से हम आत्मनिर्भर बनते हैं। इसलिए इस योजना अंतर्गत बाहरी देशों को निवेश से, अपने लोगों को काम देकर, अपनी वस्तुए बनाने मे कामयाब होंगे। इससे बेरोजगारी से भी बाहर आने में मदद मिलेगी और स्वदेशी वस्तुएं जो हमने बनाने और उसके आगे चलते हुए उसे निर्यात करने में भी सक्षम हो जाएंगे।

एक भारत श्रेष्ठ भारत के इस मुहिम के लिए प्रधानमंत्रीजी ने जो योजनाएँ बनाई हैं जो कि सही मायने में हमारे देश को एक साथ लाएगी ही साथ ही साथ आपस की दूरी को भी मिटाएगी। जिस तरह हमारे देश की संस्कृति हैं, उसका एक उदाहरण यहाँ देना चाहूंगी – आज भी हमारा देश उतना आधुनिक नहीं जितना की विदेश । हमारे देश में आज भी शादियाँ अपने पहचान और किसी के सुझाव द्वारा की जाती हैं। लड़की की शादी ऐसे घर में की जाती हैं जहा वह न केवल सभी सदस्य ही उसके लिए अपरिचित होते हैं बल्कि उसके होने वाले पती की जानकारी नहीं होती हैं। ऐसे में वह लड़की शादी के बाद उन सभी संस्कारों को अपनाती हैं, सभी को अपनाती हैं। बिलकुल उसी तरह एक भारत में सभी 20 राज्यों ,जिसमें कितनी अलग भाषाएँ हैं, विभिन्न खानपान, रहन-सहन में विविधता हैं। हर एक राज्य की अपनी एक अलग पहचान हैं। हमें विदेश मे घूमने से अच्छा अगर हम एक एक करके सभी अपने देश के सभी राज्यों में पर्यटक बने और वहाँ की विविधताएँ जैसे रीतिरिवाज, संस्कृति, कला- लोकनृत्य,संगीत और साहित्य को महत्व दें तो देश को आर्थिक रूप में मजबूत बनाने में सहायक बनेंगे। सभी राज्यों के कारीगर को काम देने मे एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेंगा जिससे वहाँ के लोग उनकी आर्थिक दुर्बलता से बाहर निकालने सफल बनेंगे । हम सभी को हर एक राज्य की बोलचाल, खानपान, संस्कृति वहाँ की विशेषताओं से भी परिचय होगा। इससे हमारे उच-नीच की बनी दिवार को भी मिटा पाएंगे। हमारे देश के 600 जिलाओं को साथ में संगठित होने से कोई रोक नहीं पाएगा, इसलिए सभी देशवासियों ने इसतरह अपने देश के विकास के बारे मे सोचा और अपनाकर ध्येय बनाया तो हमारे देश को दुनिया में सबसे श्रेष्ठ राष्ट्र बनने से कोई रोक नहीं पाएगा।

प्रधानमंत्री जी ने न केवल स्वदेश में संबंध के महत्व को समझाया बल्कि उन्होंने बाहरी देशों के साथ भी साझेगीरी की। हमारे देश की सहायता के लिए बाहरी देशों ने यहाँ तक

अमेरिका ने भी हामी भरी हैं। हमारे पड़ोसी राष्ट्र जो कि आतंकवादी और विद्रोह से भरे हैं उन्हे छोड़कर बाकी सभी देश हमारे साथ हैं इसका ऐलान भी उन्होंने किया हैं। यह विकास की तरफ़ जा रहे हमारे देश को एक प्रगति के मार्ग पर ले जाने में बहुत बड़ा योगदान हैं। इसे हमें बरकरार रखना आवश्यक हैं। इसलिए हमें हमारे लिए बनी सभी सरकारी योजनाओं को पूरी तरह से सहयोग देना हैं उसका हमारे उज्वल भविष्य के लिए कार्यान्वित करना आवश्यक हैं। देश के स्वछता अभियान का एक हिस्सा बने। देश को साफ सुथरा रखने में सहायक बने और आदर्श बनाने में मदद करें। महिलाओं की इज्जत करें। उसे अपने से कम न समझें। लड़कियों को शिक्षित बनाएँ, अपने पैरो पर खड़ा करें। सरकार द्वारा दी गयी सुविधाओं का फायदा लेकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाए, सक्षम बनाए। देश की आंतरिक विवादों को मिटाने के लिए प्रयास करें। हमें सिर्फ देश के प्रगति के बीच का यह एक रोड़ा बनकर खड़ा हैं उसे बाहर निकाल फेंकना हैं। भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए न रिश्वत दें न लें। देश को एक होना हैं तो हमे स्वार्थ, विद्रोह, जातिवाद से बाहर निकलकर एक होना हैं। हमारे देश मे बोली से लेकर खानपान में भी विविधताएँ होते हुए भी हम एक हैं। सभी देशवासियों को एक होकर जात-पात, उच्च-नीच, अमीर-गरीब भेदभाव को दूर कर "एक भारत श्रेष्ठ भारत" बनाने में कार्य करना हैं। यह केवल किसी एक व्यक्ति या राज्य की जिम्मेवारी नहीं, यह समस्त देशवासियों की ज़िम्मेदारी हैं। जिससे हम सभी को "मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना, हिंदी हैं हम वतन हैं, हिंदोस्ता हमारा" यह नारा जो देश के आजादी के लिए प्रेरणादायी बना तो आज इसे फिर एक बार दोहराकर हमारे बीच की सभी दीवारों को मिटाकर केवल हमारे देश के प्रति कर्तव्य को ध्यान मे रखकर " एक भारत श्रेष्ठ भारत " सही मायने मे कामयाब बनाएँगे।

मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल - आत्मनिर्भर भारत की ओर

- बाबासाहेब सुरेन्द्र नाडगे

वरिष्ठ क्षेत्रीय अभियंता, रत्नागिरी

आधुनिकता का हमारे जीवन पर इतना प्रभाव पड़ा है कि न केवल हमारे रहन-सहन के तरीके में बदलाव आया है बल्कि हमारे खान-पान का तरीका भी पूरी तरह से बदल गया है। इसके चलते किचन में भी इसी तरह कई बदलाव हुए है। जी हां पहले महिलाएं खाना बनाने के लिए चूल्हे और मिट्टी के बर्तन का प्रयोग किया करते थे, अब उनकी जगह गैस चूल्हों, फ्रिज और ओवन ने ले लिया है।

कई हजार साल से भारत में मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल किया जाता रहा है क्योंकि मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाने से ऐसे पोषक तत्व मिलते हैं, जो हर बीमारी को शरीर से दूर रखते थे। इस बात को अब आधुनिक विज्ञान भी साबित कर चुका है कि मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाने से शरीर के कई तरह के रोग ठीक होते हैं हालांकि आज से 200 साल पहले से ही मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग होना बंद हो गया. इसके पीछे की मुख्य वजह थी बाजार में एल्युमिनियमऔर प्लास्टिक के बर्तनों का ज्यादा इस्तेमाल करना। जिसमें भोजन में हानिकारक रासायनिक पदार्थों के मिश्रित होने की संभावना बढ़ जाती है। आपको पूरी लाइफ स्वस्थ रहना हैं तो प्रेशर कुकर की बजाय मिट्टी के हांडी में खाना बनाकर खाना चाहिए। जी हां हमारी बॉडी को रोजाना 18 प्रकार के सूक्ष्म पोषक तत्वों की जरूरत होती है, जो मिट्टी के बर्तनों में बने खाने से आसानी से मिल जाती है। इन सूक्ष्म पोषक तत्वों मेंल्शियम, मैग्नीशियम, सल्फर, आयरन, सिलिकॉन, कोबाल्ट, जिप्सम आदि शामिल होते हैं। वहीं प्रेशर कुकर से बने भोजन में सारे पोषक-तत्व नष्ट हो जाते हैं । इसलिए मिट्टी के ही बर्तन में खाना बनाना चाहिए।

स्वस्थ शरीर के लिए जरूरी है कि भोजन की प्रभावशीलता तुरंत राहत पहुंचाने की क्षमता एवं दुष्प्रभावों से रहित स्थायी मुक्ति इस मापदंडों को परिपूर्ण करती है। आइये जानते हैं क्यों मिट्टी के बर्तनों में खाना पकाना चाहिए।

- **पौष्टिक भोजन**

आयुर्वेद के अनुसार, अगर भोजन को पौष्टिक और स्वादिष्ट बनाना है तो उसे धीरे-धीरे ही पकना चाहिए। साथ ही भोजन में

मौजूद सभी प्रोटीन शरीर को खतरनाक बीमारियों से सुरक्षित रखते हैं। भले ही मिट्टी के बर्तनों में खाना बनने में वक़्त थोड़ा ज्यादा लगता है, लेकिन इससे सेहत को पूरा लाभ मिलता है. इसके अलावा आयुर्वेद में इस बात को भी बताया गया है कि जो भोजन धीरे-धीरे पकता है वह सबसे ज्यादा पौष्टिक होता है। जबकि जो खाना जल्दी पकता है वो खतरनाक भी होता है। इसकी गर्मी प्रतिरोध और धीमी गति से खाना पकाने के कारण, भोजन अपने सभी तेलों और नमी को बरकरार रखता है; नतीजतन, आपको अपने भोजन को नमी प्रदान करने के लिए अतिरिक्त तेल और वसा की आवश्यकता नहीं होगी।

- **ज़ायकेदार खाना**

अगर आपको खाने में सौंधी-सौंधी खुशबू पसंद है, तो मिट्टी के बर्तन में पका हुआ खाना आपको एक अलग स्वाद का अनुभव कराएगा। मिट्टी के बर्तन में जब खाना पकाया जाता है, तो आंच में पकने से उसमें मिट्टी की खुशबु और मसालों का ज़ायका मिल जाएगा, जो खाने के स्वाद को दो गुना कर देगा।

- **ख़ूबसूरती**

कांच और सिरेमिक के बर्तनों की तरह ही मिट्टी के बर्तन भी हर साइज़ और आकार में मिल जाते हैं। जिन पर बेहद खूबसूरत कलाकारी और रंगों का समायोजन भी होता है। जैसे आप अपनी सुबह की चाय का मज़ा कुल्हड़ में ले सकते हैं. इसके अलावा आप पानी को ठंडा करने के लिए मटकी का इस्तेमाल कर सकते हैं। ये बर्तन आपकी डाइनिंग टेबल को पारम्परिक रूप भी देंगे।

- **स्वास्थ्य लाभ**

इंसान के शरीर को रोज 18 प्रकार के सूक्ष्म पोषक तत्व मिलने चाहिए। जो केवल मिट्टी से ही आते हैं। एलुमिनियम के प्रेशर कूकर से खाना बनाने से 87 प्रतिशत पोषक तत्व खत्म हो जाते हैं। पीतल के बर्तन में खाना बनाने से केवल 7 प्रतिशत पोषक तत्व नष्ट होते हैं। कांसे के बर्तन में खाना बनाने से केवल 3 प्रतिशत ही पोषक तत्व नष्ट होते हैं। केवल मिट्टी के बर्तन में खाना बनाने से पूरे 100 प्रतिशत पोषक तत्व मिलते हैं. और यदि मिट्टी के बर्तन में खाना खाया जाए तो उसका अलग से स्वाद भी आता है। लेकिन प्रेशर कुकर एल्यूमीनियम का होता है जो सेहत के लिए बेहद खतरनाक हो सकता है। जिससे टी.बी, डायबिटीज, अस्थमा और पेरेलिसिस हो सकता है। प्रेशर कूकर के भाप से भोजन पकता नहीं है बल्कि उबलता है। आयुर्वेद के अुनसार खाना पकाते समय उसे हवा का स्पर्श और सूर्य का प्रकाश मिलना जरूरी है।

- **ऊष्मा प्रतिरोधी (Heat Resistant)**

आम धारणा के विपरीत मिट्टी के इन बर्तनों में ऊष्मा को अवशोषित करने की क्षमता तांबे और लोहे के बर्तनों के मुकाबले ज्यादा नहीं होती इसलिए ज्यादा गरम होने पर इनके टूटने का खतरा रहता है. लेकिन धीमी आंच पर आसानी से इनमें खाना बनाया जा सकता है। आप इनमें रोज़ाना दाल, चावल और सब्ज़ी पका सकता हैं। भोजन को पकाते समय सूर्य का प्रकाश और हवा का स्पर्श होना आवश्यक है।

भोजन को अधिक तापमान में पकाने से उसके शूक्ष्म पोषकतत्त्व नष्ट हो जाते हैं। भोजन को प्रेशर कुकर में पकाने से भोजन पकता नहीं है, बल्कि भाप और दबाव के कारण टूट जाता है, जिसे हम पका हुआ भोजन कहते है. इनकी सबसे अच्छी बात ये है कि इनको आप माइक्रोवेव में ही इस्तेमाल कर सकते हैं।

- **दूध और दूध से बने उत्पादों के लिए सबसे उपयुक्त**

आप इसमें नॉर्मल दही भी जमा सकते हैं। अगर आप इसमें गरमा गर्म दूध डालकर पिएंगे तो आपको दूध बहुत ही स्वादिष्ट लगेगा और आप हमेशा ऐसे ही दूध पीना चाहेंगे क्योंकि मिट्टी की खुशबू दूध के स्वाद को दोगुना कर देगी।

- **कब्ज से मिलती है राहत**

आज के समय में बहुत से लोगों को कब्ज की समस्या हो जाती है। आजकल के समय में दिनभर ऑफिस में बैठे रहने से गैस की समस्या हो जाती है, इसलिए आपको मिट्टी के तवे की रोटी खानी चाहिए। अगर आप मिट्टी के तवे की रोटी ख़ाते हैं तो आपको कब्ज की समस्या में राहत मिलती है।

अंत में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ अगर आप भी स्वस्थ जीवन जीना चाहते हैं तो ज्यादा से ज्यादा मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करें. बहुत ही कम लोग इस बात को मानेगें लेकिन ये बात तो सच है कि यदि शरीर को रोगमुक्त और लंबी उम्र तक जीना है, तो मिट्टी के बर्तनों में खाना बनाने की आदत डालें।

मिट्टी के बर्तन बनाने के काम के लिए सरकार को, आत्मनिर्भर भारत अभियान में योगदान करने के साथ-साथ जमीनी स्तर पर अर्थव्यवस्था के साथ सहायता प्रदान करनी चाहिए।

महत्वपूर्ण उपलब्धियों की कुछ झलकियां

दिनांक 22.10.2020 को मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 91वीं बैठक अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई

91वीं बैठक में 'कोंकण गरिमा' के 16वें (ई-पत्रिका) अंक का विमोचन किया गया।

दिनांक 31.10.2020 को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के उपलक्ष्य में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हिंदी में प्रतिज्ञा ली गई।

दिनांक 31/10/2020 को राजभाषा विभाग, कारवार द्वारा आयोजित हिंदी 'तकनीकी कार्यशाला' में श्रीमती शिखा जैन, राजभाषा अधिकारी, इंडियन ऑयल ने व्याख्यान दिया।

कोविड-19 के बारे में सतर्कता लाने हेतु संबंधित सूचनाएं मराठी, हिंदी और अंग्रेजी में प्रदर्शित की गई।

त्रिभाषी सूत्र- "समृद्ध गोवा-प्रगतशील रेलवे" गोवा राज्य में रेलवे द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों की बुकलेट स्थानीय भाषा कोंकणी के साथ हिन्दी तथा अंग्रेजी में भी जारी की गई।

30 सितंबर,2020 को समाप्त छमाही के लिए दिनांक 27.11.2020 को नवी मुंबई नराकास की 32वीं बैठक अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जी की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

नवी मुंबई नराकास की 32वीं बैठक में 'समन्वय' पत्रिका के 28वें (ई-पत्रिका)अंक का विमोचन किया गया।

31/12/2020 को रेलवे बोर्ड से नामित श्री विपिन पवार, उप महाप्रबंधक, मध्य रेल द्वारा संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण से पूर्व मुख्यालय, बेलापुर का निरीक्षण किया गया।

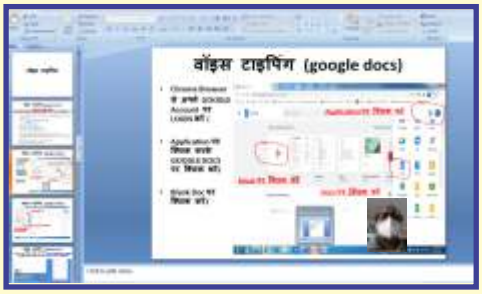

10/12/20 को विभागाध्यक्षों की बैठक में मुख्य राजभाषा अधिकारी द्वारा 'राजभाषा ई-टूल्स' पर प्रस्तुति दी गई।

12.01.2021 को 'विश्व हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में मुख्यालय, बेलापुर में ई-टूल्स के माध्यम से हिंदी टाइपिंग प्रशिक्षण दिया गया।

12.01.2021 को 'विश्व हिंदी दिवस' के उपलक्ष्य में राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी के पैंफलेट वितरित किए गए।

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 92वीं बैठक 25 जनवरी, 2021 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जी की अध्यक्षता में "वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग" के माध्यम से संपन्न हुई।

दिनांक 11.02.2021 को राजभाषा विभाग द्वारा कार्मिक विभाग का निरीक्षण किया गया।

"मराठी राजभाषा दिवस" के उपलक्ष्य में दिनांक 01/03/2021 को क्षेत्रीय रेल प्रबंधक कार्यालय, रत्नागिरी में 'काव्य पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया।

मराठी राजभाषा दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 02/03/2021 को क्षेत्रीय रेल प्रबंधक, कारवार की अध्यक्षता में 'परिचर्चा' का आयोजन किया गया।

'मराठी राजभाषा दिवस' के उपलक्ष्य में दिनांक 04/03/2021 को बेलापुर में ऑनलाइन 'मराठी काव्य-पाठ' का आयोजन किया गया।

नवी मुंबई नराकास और कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड की ओर से 17.03.2021 को स्मृति आधारित अनुवाद सॉफ्टवेयर / टूल "कंठस्थ" पर ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 19/03/2021 को क्षेत्रीय रेलवे प्रबंधक, रत्नागिरी द्वारा राजभाषा पखवाड़े के विजेता कर्मियों को पुरस्कृत किया गया।

"राजभाषा जागरूकता अभियान" के अंतर्गत दिनांक 19/03/2021 को राजभाषा अधिकारी, बेलापुर द्वारा रत्नागिरी कार्यालय में राजभाषा नियमों के बारे में जानकारी दी गई और राजभाषा नियमों का पत्रक भी वितरित किया गया।

दिनांक 25/03/2021 और 26/03/2021 को कारवार क्षेत्र के पेडणे, थिविम, करमाली, बाल्ली, काणकोण, लोलिए स्टेशनों पर "राजभाषा जागरूकता अभियान" का आयोजन किया गया।

सादर सेवा
छमाही पत्रिका

शिक्षा और व्यवसाय

- प्रिया निकेत पोकले
कनिष्ठ अनुवादक, बेलापुर

शिक्षा का प्रयोजन है व्यक्ति का सम्पूर्ण और समग्र विकास, उसके शरीर, मन, बुद्धि तथा आत्मा को सबल-सशक्त बनाना, उसमें अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित, पाप-पुण्य, हित-अहित का विवेक जीवन में लाना। शिक्षा मनुष्य को सभ्य, सुसंस्कृत, शालीन, सच्चरित्र बनाती है, उसे जीवन जीने की कला सिखाती है। शिक्षा प्राप्त करनेवाला अपना ही नहीं सम्पूर्ण मानवता का हित-साधन करता है।

व्यवसाय का अर्थ है जीवित रहने के लिए, जीविकोपार्जन के लिए कोई काम-धन्धा करना जिससे प्राप्त आय से व्यक्ति अपना, अपने परिवारजनों का लालन-पालन कर सके, जीवन की अन्य आवश्यकता पूरी कर सुख-चैन से जीवन बिता सके। वह व्यवसाय करता है केवल अपने हित के लिए संसार के हित से उसे कोई लेना-देना नहीं है। व्यवसायी व्यक्ति केवल उतना पढ़ता-लिखता है जिससे वह हिसाब-किताब कर सके, बही-खाता लिख सके, आवश्यकता पड़ने पर अन्य व्यापारी को पत्र लिख सके। उनमें व्यवसायिक बुद्धि जन्मजात होती है। इसी मानसिकता के कारण कई सम्पन्न-समृद्ध व्यवसायी अपनी सन्तान को विद्यालयों में नहीं भेजते, कहते हैं इन्हें कौन-सी नौकरी करनी है जो पढाई-लिखाई में समय, शक्ति, धन नष्ट करें। यदि कभी आवश्यकता हुई तो किसी पढ़े-लिखे योग्य व्यक्ति को अपने कार्यालय में लिपिक, टंकक या मैनेजर के रूप में रख लेंगे। कहने का तात्पर्य यह कि शिक्षा और व्यवसाय का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है।

आज स्थिति बदल गयी है। आज शिक्षा पाने का मुख्य लक्ष्य जीविकोपार्जन हो गया है। विद्यार्थी विश्वविद्यालय की डिग्री इसलिए प्राप्त करता है ताकि उसके बल पर उसे रोजगार, नौकरी मिल सके। नौकरी भी एक प्रकार का व्यवसाय ही है। दूसरे, युवकों की अपार भीड़ और रिक्त पदों की सिमित संख्या देखकर यह अनुभव किया गया है कि व्यवसायोन्मुख (वोकेशनल) बनाया जाये। छात्रों को बिजली, टेलीफोन, संचार, पत्रकारिता आदि क्षेत्रों में काम करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाये और अब ऐसे विद्यालय खुल भी गये हैं। विश्वविद्यालयों के अर्थशास्त्र तथा वाणिज्य विभागों के अन्तर्गत आफिस मैनेजमेंट, होटल मैनेजमेंट, एम. बी. ए. आदि के पाठ्यक्रम शुरू किये गये हैं और उच्च पद पर नियुक्त होकर जीविका कमाते हैं। स्वयं व्यवसाय करने लगते हैं या व्यवसाय-घरानों में उच्च पद पर नियुक्त होकर जीविका कमाते हैं। स्वयं व्यवसायी लोग भी अपने बेटा-बेटियों को इस प्रकार के पाठ्यक्रम पढ़ाने के लिए लालायित रहते हैं। कुछ तो व्यवसाय के नए-तौर-तरीके सीखने के लिए उन्हें विदेशों में भेजते हैं। ये दुनिया हुनरदार लोगों को ही पूछती है। पहले माँ-बाप अपने बच्चों को डाक्टर, इंजीनियर ही बनाना पसंद करते थे, क्योंकि केवल इसी क्षेत्र में रोजगार के अवसर सुनिश्चित हुआ करते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। प्रशिक्षण और कुशलता हमारे करियर रूपी ट्रेन का इंजन है, जिसके बिना हमारी जिन्दगी की गाड़ी चल ही नहीं सकती, इसलिए जीवन में आगे बढ़ना है, सफल होना है, स्कील्ड तो होना ही पड़ेगा।

आज व्यावसायिकता एक प्रदेश या एक देश में सिमट कर नहीं रह गयी है। वह राष्ट्रीय और इससे भी बढ़कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की हो गई है। अतः यदि कोई व्यवसायी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सफल होना चाहता है तो उसे अनेक प्रतिद्वन्दियों से स्पर्धा करनी पड़ती है और स्पर्धा में वही जीत सकता है, आगे बढ़ सकता है जिसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यावसायिक गतिविधियों की जानकारी हो, अन्तर्राष्ट्रीय जटिल नियमों-कानूनों का ज्ञान हो। अनपढ़ या अल्पशिक्षित व्यक्ति इन नियमों-कानूनों को न जानता है, न समझता है, अतः उसे प्रशिक्षित, योग्य, निपुण, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक गतिविधियों को जानने-समझने वाले व्यक्तियों पर निर्भर होना पड़ता है। कभी-कभी जिन चतुर, शातिर, योग्य व्यक्तियों को वह नौकर रखता है, या सहायक बनाता है वे ही उसे धोखा देकर स्वयं उसका स्थान पा लेते हैं। अतः आज के व्यवसायी के लिए शिक्षा प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। अब व्यवसाय और शिक्षा का गहरा सम्बन्ध हो गया है।

आज व्यवसायी और व्यवसाय दोनों की सफलता और समृद्धि के लिए शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा उनके लिए समय की माँग है जिसको अनदेखी नहीं कर सकते, अनेदखी करने का परिणाम होगा असफलता।

व्यवसायिक शिक्षा का महत्व

यह स्थिति तब और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, जब बात गरीबों की आती है। उनके पास इतने पैसे नहीं होते कि वो अपनी शिक्षा पूरी कर सके, इस स्थिति में रोजगार पाने का एकमात्र साधन केवल और केवल व्यवसायिक शिक्षा ही रह जाती है, जो बेहद कम खर्चे में लोगों को स्कील्ड कर रोजगार दिलाने में सहायक सिध्द होती है।

अब इस क्षेत्र में भी आधुनिकता ने अपने पंख पसार लिए है। बहुत सारी कंपनियां भी प्रक्षिशित लोगों की तलाश में रहती है, विभिन्न जॉब वेबसाइटों में कुशल लोगों की रिक्रूटमेंट निकलती रहती है, जिसमें ऑन-लाइन आवेदन मांगे जाते हैं। कुछ प्रोफेशनल वेबसाइट अब ऑन-लाइन कोर्सेस भी कराती है। अब आप घर बैठे ही ऐसे कोर्सेस कर सकते हैं। आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं। सुदूर गांव में बैठे लोगों के लिए यह व्यवस्था किसी वरदान से कम नहीं।

रोजगार के नये आयाम

पहले रोजगार पाने के बड़े ही सीमित अवसर होते थे, जो कारपेन्ट्री, वेल्डिंग, आटो-मोबाइल जैसे क्षेत्रों तक ही सीमित थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। व्यवसायिक शिक्षा वह शिक्षा होती है जिसके द्वारा किसी खास विषय या क्षेत्र में महारत हासिल की जाती है। यह कौशल प्रशिक्षण की शिक्षा होती है। बहुत सारे नये-नये क्षेत्रों का विकास हो गया है, जैसे इवेंट मैनेजमेंट, टूरिस्ट मैनेजमेंट, होटल मैनेजमेंट, कम्प्यूटर नेटवर्क मैनेजमेंट, रिटेल ट्रेनिंग एण्ड मार्केटिंग, टूर एण्ड ट्रैवेल्स मैनेजमेंट, बैकिंग, वित्त इत्यादि ऐसे कुछ क्षेत्र हैं, जिसमें आप निपुण होकर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। कुशल हाथ ही एक नये और बेहतर कल का रचयिता हो सकता है। जब हर हाथ में हुनर होगा, तभी हमारा देश विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा हो पाएगा। यह विविध पाठ्यक्रमों जैसे बिना व्यवहारिक ज्ञान के केवल किताबी ज्ञान से आप कोई भी काम कुशलता से नहीं कर सकते।

भारत में व्यवसायिक शिक्षा की स्थिति

हमारा देश युवाओं का देश है। आज का परिदृश्य देखें तो बढ़ती हुई बेरोजगारी सर्वाधिक चिन्ता का विषय है। इसका निराकरण करना केवल सरकार की ही नहीं अपितु आम नागरिक का भी है, और केवल तभी संभव है आम आदमी स्कील्ड होकर रोजगार का सृजन करे। सवा सौ करोड़ की आबादी वाला हमारा देश और सभी के लिए रोजगार दे पाना सरकार के लिए भी नामुमकिन है। बेरोजगारी का अंत तभी संभव है जब आम आदमी अपना उद्यम स्वयं सृजित करे और यह तभी हो सकता है जब हर हाथ हुनरमंद हो।

केवल 25% स्नातकों को ही नौकरी मिल पाती है, क्योंकि बाकि के 75% प्रशिक्षित होते ही नहीं। देश में रोजगार बढ़ाने के लिए बहुत जरूरी है कि सभी को रोजगारोन्मुख कौशल प्रदान करना। आज हमारे देश में कौशलबध्द और विशेषज्ञ लोगों की मांग बढ़ रही है। वोकेशनल शिक्षा नौकरी पाने में जॉब सीकर्स की मदद करती है, साथ ही उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण और कौशल प्रदान करती है। भारत का आई.टी सेक्टर अपने स्किल के कारण ही विश्व पटल के आकाश का ध्रुव तारा है।

विविध क्षेत्र

यह बड़ा ही बृहद क्षेत्र है। इसे कई वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है; जैसे वाणिज्य, गृह-विज्ञान, पर्यटन एवं आतिथ्य विभाग, स्वास्थ्य एवं पराचिकित्सकीय, अभियांत्रिकी, कृषि व अन्य। यह विविध प्रोग्रामों जैसे निफ्ट, रोलटा, मेड, डब्ल्यू-डब्ल्यू आई, एन एच एम आई टी जैसी संस्थाएं युवाओं को नये-नये प्रोफेशनल स्किल्स को सिखाकर उनका जीवन उन्नत कर रहे हैं।

इसी के अन्तर्गत माननीय प्रधानमंत्री जी ने युवाओं के बेहतर भविष्य निर्माण के लिए प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना का शुभारम्भ किया। इसका लक्ष्य बड़े पैमाने पर उद्योगों के अनुसार रोजगार संबंधी कौशल का सृजन करना है।

व्यवसायिक शिक्षा के लाभ

1. **जॉब हेतु तैयार-** वोकेशनल अर्थात व्यवसायिक शिक्षा हमें जॉब के लिए तैयार करती है। यह छात्रों को प्रशिक्षित कर उन्हें ट्रेनिंग और कौशल प्रदान करती है; जो इंटीरियर डिजायनिंग, फैशन डिजायनिंग, कम्प्यूटर नेटवर्किंग इत्यादि जैसे क्षेत्रों में बिना प्रशिक्षण कौशल के आप कुछ नहीं कर सकते। यदि इन क्षेत्रों में अपना भविष्य तलाशना है तो बिन ट्रेनिंग के काम नहीं चलने वाला।

2. **किफायती शिक्षा -** सरकारी और गैर सरकारी दोनों तरह के संगठन बहुत ही कम फीस में व्यवसायिक शिक्षा छात्रों को उपलब्ध करा रहे हैं। इससे आर्थिक रूप से पिछड़े और वंचित वर्ग भी इसका लाभ उठा सकते हैं। यह उन छात्रों के लिए किसी वरदान से कम नहीं जो किसी कारण अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं, या जिनके घर की हालत ठीक नहीं और वो तीन-चार साल पढ़ाई पर नहीं दे सकते। ऐसे छात्र छमाही या

सालाना कोर्स करके रोजी-रोटी कमाने लायक बन सकते हैं।

3. **रोजगार के अनुकूल -** वोकेशनल शिक्षा उपयुक्त ट्रेनिंग देकर रोजगार के नये अवसर प्रदान करता है। यह आज की जरूरत भी है और महत्वपूर्ण भी। बड़ी-बड़ी कम्पनियों को भी काबिल और हुनरमंद लोगों की तलाश रहती है। जिनके पास उपयुक्त व्यवसायिक शिक्षा होती है, उनके पास नौकरी की कभी कमी नहीं रहती है। इनकी हर जगह डिमांड बनी रहती है।

4. **उन्नत करियर-** व्यवसायिक शिक्षा जॉब पाने में हर रास्ता आसान करती है। वो लोग जो पहले से कहीं कार्यरत है और खुद को और निखार कर अपना जॉब प्रोफाइल उन्नत करना चाहते हैं, ऐसे लोगों को वोकेशनल शिक्षा बहुत बढ़िया प्लेटफॉम है। इनकी अवधि अपेक्षाकृत कम होती है। इच्छुक छात्र बेहद कम समय में ट्रेंड होकर अपनी स्कील्स बढ़ा सकते है, और रोजगार के बेहतर अवसर पा सकते है। वोकेशनल अर्थात व्यवसायिक शिक्षा किसी भी देश की इकॉनमी का एसेट होता है। देश की आर्थिक प्रगति वहां के वोकेशनल एजुकेशन पर निर्भर करता है। व्यवसायिक शिक्षा देश की प्रगति का मेरूदण्ड होता है, जिस पर संपूर्ण देश टिका रहता है।

5. **समय की माँग-** आज हर क्षेत्र में नित नये शोध और अनुसंधान हो रहे है। इसको देखते हुए अपडेट रहना बहुत जरूरी है। समय के साथ आवश्यकताएं भी बदलती रहती है। पहले लोग परंपरागत खेती-बाड़ी ही करके खुश रहते थे, जितना उगता था, पर्याप्त होता था, जनसंख्या कम थी और लोगों की जरूरते भी । लेकिन अब ऐसा नहीं है, देश की आर्थिक उन्नति के साथ-साथ लोगों का जीवन स्तर भी समृध्द हुआ। जीवन स्तर बढ़ा तो लोगों की आवश्यकताएं भी बढ़ी। अब केवल एक आदमी के कमाने से काम नहीं चलने वाला। अब कृषि भी काफी उन्नत हो चुकी है। कृषि को बढ़ाने के लिए कई सारे तकनीक आ गये हैं।

भारत सरकार द्वारा संचालित योजनाएं:

भारत सरकार आर्थिक रूप से पिछड़े निर्धन वर्गों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए कई योजनाएं चला रही है। इन योजनाओं में से कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं निम्नानुसार हैं-

1) उड़ान (UDAAN)

यह कार्यक्रम विशेषतः जम्मू और कश्मीर राज्य के लिए शुरू किया गया है। यह पाँच साल का कार्यक्रम है और यह सूचना प्रौद्योगिकी, बीपीओ और खुदरा क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण शिक्षा और रोजगार मुहैय्या कराती है।

2) पॉलिटेक्निक

पॉलिटेक्निक भारत के लगभग सभी राज्यों में चलने वाला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान है। यह इंजीनियरिंग और कंप्यूटर विज्ञान के भिन्न-भिन्न विषयों में तीन वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करता है। पॉलिटेक्नीक की शिक्षा गांव-गांव, शहर-शहर में प्रचलित है, जो जन-जन तक पहुंचकर छात्रों की राह आसान कर रही है।

3) औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान विभिन्न इंजीनियरिंग और गैर इंजीनियरिंग विषयों में व्यावसायिक प्रशिक्षण चलाते हैं। आईटीआई का प्रबंधन भारत सरकार के कौशल विकास एवं उद्यमिता द्वारा निर्देशित एवं कार्यान्वित होता है।

4) एनआरएलएम (राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन)

जून, 2011 में लागू किया गया, एनआरएलएम को खास तौर पर (गरीबी रेखा से नीचे) समूह के लिए चलाया गया है। इसका उद्देश्य विभिन्न ट्रेडों में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों, खासकर महिलाओं को भिन्न-भिन्न उद्यम एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना है, ताकि वे खुद को क्रियाशील एवं रोजगारपरक बनाकर, अपनी और अपने परिवार की आजीविका कमा सके।

5) शिल्पकार प्रशिक्षण योजना

यह योजना विभिन्न इंजीनियरिंग विषयों के साथ-साथ पैरामेडिकल, कृषि और वाणिज्य आदि के क्षेत्र में व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए शुरू की गयी है। इसे व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

व्यवसाय पाने अर्थात् नौकरी, रोजगार, आजीविका पाने के लिए भी शिक्षा अनिवार्य है और व्यवसाय करने, उसका सफल संचालन के लिए भी शिक्षा आवश्यक है। समय परिवर्तनशील है, युग बदलता है, युग के साथ-साथ परिस्थितियां बदलती हैं। चतुर मनुष्य वही है जो समय की आवश्यकता को पहचान कर कार्य करे। आज व्यवसाय के तौर-तरीके बदल गए हैं, अब वह देशों की सीमाओं को पार कर अन्तर्राष्ट्रीय बन गया है। अतः शिक्षा का अर्थ और प्रयोजन भी बन गया है । आज शिक्षा व्यवसायोन्मुख हो गयी है।

हमारा भारत आगे बढ़ रहा है।

शिक्षा के माध्यम से व्ययसाय और व्यापर में प्रगति कर रहा हैं।

उच्च वर्ग में नशाखोरी का युवा पीढ़ी पर प्रभाव

- सुचिता सचिन बामुगडे,
भंडार सहायक, बेलापुर

प्रथम हम ये जानते और मानते हैं कि नशाखोरी क्या है ? नशा मतलब एक विशिष्ट प्रकार का पेय और मादक द्रव्य सेवन करना, जो लोग ये सेवन या ग्रहण करते हैं उनका मानना है कि नशा करने से उन्हें स्पूर्ति मिलती है। लेकिन असल में इसके ग्रहण के बाद इन्सान अपने होशो आवास खो बैठता है। ये मादक द्रव्य किसी एक प्रकार के नहीं बल्कि भिन्न-भिन्न प्रकार के पाये जाते हैं। इन नशीली द्रव्य के सेवन के संबंध में अनेक मत प्रवाह प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार इनका सेवन करने से व्यक्ति को एक उत्तेजना का अनुभव होता है और कुछ समय के लिए उसे मानसिक परेशानियों तथा चिंताओं से बचने का पर्याप्त अवसर मिलता है।

दुनिया के प्रत्येक समाज में किसी न किसी रूप में नशा कहे या मदिरापान हर जगह पाया जाता है। कुछ समाजों में इसे बुरा समझा जाता है, तो कुछ समाजों में इसे आवश्यक रुप से ग्रहण किया जाता है! गरीब लोग ठर्रा, ताड़ी और धनी लोग व्हिस्की, रम, सोलन, स्कंच और अन्य बढ़िया शराब पीते हैं। मादक द्रव्यों का और मद्यपान का निश्चित रूप से शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

भारतीय समाज में नशाखोरी अर्थात मादक द्रव्य एवं मद्यपान का सेवन दुनिया के अन्य देशों की तुलना में अधिक प्राचीन है। ऐसा कहा जाता है कि, आर्य लोग जब भारत में आए तो वे "सोमरस" पीते थे। यह एक पेड़ का था जिसका नाम सोमाया रस होता था। इसे पीना बुरा नहीं माना जाता था। इसका प्रयोग अच्छी नींद लाने और मधुर सपने का आभास होने और चिंताओं को भुलाने के लिए किया जाता था। ऐसा लगता है कि शराब पीना पाप नहीं माना जाता था और इसे एक सामाजिक आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया जाता था। किन्तु, इसे सीमित मात्र में लिया जाता था। साथ ही में प्रतिबंधित व्यक्तियों द्वारा प्रतिबंधित अवसरों पर ग्रहण किया जाता होगा।

किन्तु, आज औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप जबकि जीवन और कार्य की दशाए व्यस्त और बदतर हो गयी, इसे सामान्य व्यक्ति ने आवश्कता के रूप में स्वीकार कर लिया। प्राचीन काल में शराब पीने का कारण यह था कि वे अपने थकान से मुक्ति चाहते थे और पत्नी तथा बच्चों के सानिध्य - स्नेह को या परिवार को भूल जाते थे। जैसे-जैसे कार्य की दशाए अधिक से अधिक बदतर और असहाय होती गयी, श्रमिकों ने अपनी थकान दूर करने के लिए इसकी मात्र में वृद्धि कर दी। शराब से संबन्धित दुकानों को अनुमति पत्र दिये गए और इसे व्यावसायिक आधार पर स्वीकार कर लिया गया।

वर्तमान में देखा जाए तो उच्च वर्गों में नशाखोरी का विस्तार बढ़ गया है और यकीनन इसके अनगिनत बुरे प्रभाव में युवा पीढ़ी आ रही है। मुझे यकीन है कि आप भी मेरे इस बात से अपनी सहमति दर्शाएंगे!

इसके कारण सामने आ रहे हैं। आर्थिक समानता एवं विपन्नता दोनों ही स्थितियां मादक द्रव्य या नशाखोरी को उत्पन्न करती है। उच्च आर्थिक समूह के व्यक्तियों के लिए मादक द्रव्य सेवन शान एवं वैभव का प्रतीक है। उच्च आर्थिक समूह से संतुध आभिजात व्यक्ति अपनी प्रसन्नता को प्रदर्शित करने के लिए अधिक मूल्यवान मादक द्रव्यों का क्रय करते हैं और ये सभी सारेआम अपने बच्चों के सामने चलता रहता है। युवा वर्ग भी इस प्रक्रिया को सामन्य मानकर अपना लेते हैं, किसी दिन बड़े बुजुर्गों के सामने इसका आनंद लेते नजर आते हैं और अश्चर्य की बात ये है कि घर के बुजुर्ग भी इस प्रक्रिया में शामिल हो जाते हैं। जाहीर सी बात है, मद्यपान करना गलत है ये संजहने वाले ही गलत कर रह है। तो इस प्रक्रिया का विस्तार युवा वर्ग में तेजी से बढ़ना निश्चित था। इसके बुरे प्रभाव से युवा वर्ग अपनी शारीरिक और मानसिक स्थिति में क्षीण होता जा रहा है!

अधुनिक सभ्यता के विस्तार के साथ परिवार के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन हो रहा है। परिवार के परम्परागत स्वरूप त्याग कर जनतांत्रिक परिवारों का स्वरूप ग्रहण कर रहे हैं। इस संक्रमण शीलता की अवस्था में आज का परिवार अनेक विपथगानात्मक व्यवहारों को जन्म देने लगा है। जो एक समय इससे कोसो दूर थे। नगरीकरण तथा औद्योगीकरण की अवस्था से पूर्व परिवार कृषि प्रधान तथा आत्म निर्भर होते थे, इससे पुरा परिवार एक दूसरे की मन मर्यादा का मान रखता था। जाहीर सी बात है कि घर के बड़े

और छोटे सभी में एक सच्ची भावना रहती थी।

प्राचीन समय में घर के मुखिया की सत्ता परिवार में सर्वोपरि होती थी। बच्चों और युवाओं के संपर्क परम्परागत से होते थे। अत: सामाजिकता का पाठ परिवार के शिक्षण से ही पढ़ते थे व व्यक्तित्व निर्माण व्यवहार में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस वजह से जीएचआर में नशा करना तो दूर इसके बारे में सोचना भी कोसो दूर था, क्योंकि जीएचआर के बड़े लोग इसका ग्रहण बाहर जा के करते थे और भी सीमित मात्र में तो जाहीर सी बात है की बच्चों और युवाओं को ज़्यादातर इसकी भनक भी नहीं लगती थी। बड़ों के लिहाज के आदत सब बुरी आदतों से युवा को दूर रखते थे।

वर्तमान परिस्थिति में औद्योगीकरण, नगरीकरण के साथ साथ पाश्चत्य संस्कृति के प्रसार के कारण सेवा योजना हेतु नगर गमन प्रवृत्ति का अत्यधिक विस्तार हुआ है। नगरीय जीवन से पारिवारिक परिवेश में गहरा परिवर्तन हुआ है। उच्च शिक्षित परिवारों में ज़्यादातर पिता और घर के अन्य सदस्य भी अपना समय बाहर बिताते है। पिता या फिर माँ-बाप का समय घर से बाहर अधिक व्यतीत होने लगा है। शायद ही कभी अपने माता पिता को कार्य करते देखा हो या यह भी कह सकते है कि बालक अपने माता पिता के व्यवसाय कि प्रकृति से बिल्कुल भी अनभिज्ञ है। इस प्रकार नगरीय परिवेश में बालक का संपर्क परिवारिक की अपेक्षा बाह्य जगत से अधिक हो जाता है। इसके अतिरिक्त बालक को मानसिक सुरक्षा की पूर्ति परिवार द्वारा होनी चाहिये जब वे उसे नगरीय परिवेश में नहीं मिल पाती तो बालक इस अभाव की पूर्ति विपथ गमन करने वाले बालको व किशोर अपराधी दलो संगी-साथी समूह के अंतर्गत करता है। अधुनिक परिवारों कि संक्रामणशीलता मादक द्रव्यों के सेवन के निरंतर प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत कर रही है।

वर्तमान स्थिति में यदि हम भारतीय समाज का विश्लेषण करते हैं यह स्पष्टत: तो दृष्टिगत हो रहा है कि युवा पीढ़ी नशाखोरी के क्षेत्र में निरंतर वृद्धि करती जा रही है। हम यह भी कह सकते है कि हमारी युवा पीढ़ी इस नशाखोरी में जकड़ रही है। अधिकांश युवा पीढ़ी इसे फ़ैशन के रूप में ग्रहण कर रही है। अधिकतर वर्ग में शादी - विवाह एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में इसका सेवन फैशन बन गया है। जो धीरे-धीरे आदत का रूप धरण कर लेती है। भारतीय समाज में व्याप्त असाजिक समस्याएं भी युवाओं को तनाव ग्रस्त करने में परिणायक है। जिसके प्रभाव से दुष्परिणामक स्वरूप में मादक द्रव्य एवं मद्यपान का सेवन प्रारम्भ अपना कार्य व्यवहार परिणित करने लगते हैं। जिससे केवल उस व्यक्ति या युवको ही नहीं बल्कि, समाज को अनेक प्रकार से हानि होती है। इसके गलत प्रभाव से धीरे धीरे समाज विघटन की स्थिति में आ जाता है। इसके परिणाम स्वरूप सामाजिक व्यवस्था में असंतुलन की स्थिति बढ़ जाती है और समाज में गंभीर अपराध घटित होने लगते है। ये हम आज देख भी रहे हैं कि युवा इस नशाखोरी को जारी रखने के लिए अनेक अपराध करके भुगतान जमा कर रहे हैं।

वर्तमान स्थिति में इस नशाखोरी से युवा पीढ़ी अपने आदर्श मार्ग से विमुख हो गयी है। अर्थात, ये कहे कि उनका विषय गमन हो गया है। इसके ज़्यादातर जिम्मेदार उच्च वर्ग के लोग है। इस उच्च वर्ग द्वारा प्रस्तावना या प्रदर्शित दिखावे कि जीवन शैली नशाखोरी में धुत हो रही है। समाज में बढ़ती अपराधिक गतिविधियां एवं पत्रिकाओं एवं अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं के माध्यम से युवाओं द्वारा किए गए अनैतिक व्यवहार की घटनाए समाज के प्रमुख प्रस्तुत किए जा रहे हैं। जो सामाजिक व्यवस्था को अव्यवस्था में बदल देने वाले कार्य व्यवहार उच्च आर्थिक वर्गों में हो रहे हैं।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत युवा पीढ़ी मादक द्रव्य व्यसन और मद्यपान प्रवृत्ति में दिन प्रतिदिन लिप्त होती जा रही है। जिसका गंभीर परिणाम समाज में हम देख रहे हैं। मादक द्रव्य एवं मद्यपान के सेवन से युवा पीढ़ी शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकलांग होती जा रही है। इसके परिणाम से ऐसी गंभीर बीमारियां प्रचलित हो रही हैं। अब जिसका रोकथाम करना मुश्किल सा होता जा रहा है। आज की नशा खोरी करने वाली युवा पीढ़ी शारीरिक रूप से दुर्बल होती जा रही है। उनकी कार्यक्षमता एवं शारीरिक रूपता और शक्ति बिल्कुल क्षीण होती जाती है। उसका शारीरिक ढाँचा भी विकृत अवस्था में दिखाई देता है जो सहज रूप में एक दिन नष्ट हो जाती है। युवा वर्ग में बढ़ती नशा का क्रय ये उच्च वर्ग में होनेवाली बढ़ेजाव वाली नशाखोरी का ज्यादा प्रभाव है।

पाश्चात्य संस्कृति का अधिकार मात्र में जीवन शैली में अवलोकन और आधुनिक अनुसंधानो के आधार पर ज्ञात होता है कि विकसित औद्योगिक समाज में अर्थात उच्च वर्ग की भांति विकासशील राष्ट्र में भी एक निश्चित आयु वर्ग के माध्यम में मादक द्रव्य की समस्या तेजी से फैला रही है। विश्व के आधुनिक समाजो में इस द्रव्य की इतना तीव्र विस्तार क्यों है ?

ये एक विचर्णीय प्रश्न है। हमारा मानना है कि आधुनिक सभ्यता ने मनुष्य को घोर स्वार्थी और आत्म केंद्रित बना दिया है। आज के समाज में रहते हुए भी व्यक्ति अकेलेपन से ग्रस्त है, वो अपनापन नहीं अनुभव कर पाता है। ऐसी परिस्थितियों से उत्पन्न मानसिक तनाव तथा दबाव युवा को मादक द्रव्यों के सेवन के लत को और भी योगदान दे रही है। भौतिक उपलब्धियों के प्राप्ति तथा विलासिता की भागदौड़ में आज का व्यक्ति मूल जीवन के उद्देश्य से ही विमुख हो गया है।

नैतिक मूल्यों की अभाव में सामाजिक नियंत्रणात्मक शक्ति का कोई अर्थ नहीं है। अत: समाज में छक - छक कर मादक द्रव्यों के सेवन करने की आवृत्ति की उत्पत्ति स्वाभाविक है।

जिस तरह उच्च वर्गो में नशाखोरी देखी जा रही है , इससे ये अनुमान लगा सकते हैं कि युवा वर्गो में भी इसका अनुकरण बढ़ता गया है । उससे परिवार के सदस्य कई कारणों से असंतोष फिल करते हैं। युवा वर्ग इस असंतोष से परेशान होकर के बाहरी दिखा पन में जिंदगी को बेहतर समझ रहे हैं । परिवारिक असंतोष धीरे-धीरे कलह का रूप धारण करता है। फलत: परिवार के सदस्य गण अपने परिवार के सीमित साधनों को अपनी-अपनी ओर खिचने लगते हैं। इस वजह से परिवारो में कलह निर्माण होता है। इसका और बुरा असर इन युवा लोग पर पड़ता है। ऐसे में अपना वक्त दोस्तों में बिताते हैं । फिर देर रात तक पार्टियां और नशाखोरी में धुत होते रहते हैं। जिससे उनमें एक दूसरे के प्रति स्नेह एवं प्रेमभाव की कमी आने लगती है। अंत: उनमें कलह होने लगते हैं जो, परिवारिक विघटन की समस्या उत्पन्न कर देती है। इस प्रकार मादक द्रव्य व्यसन परिवारो में तनाव पैदा कर देती है। यह तनाव युवाओं का परिवारिक संबंध में बंधे रहना मुश्किल कर देता है। परिवार के मधुर संबंधो को तोड़कर उनकी एकता नष्ट कर देता है। इसके दुष्परिणाम युवाओ के आने-वाले भविष्य को चकना चूर करके रख रहे हैं। आज हम यही वास्तव में देख रहे हैं।

मादक द्रव्यों का व्यसन इतना खतरनाक है कि सामाजिक और नैतिक सौरचना के सभी संघटनात्मक पक्ष असंतुलित हो जाते हैं । मादक द्रव्यों के सेवी को न तो किसी प्रकार की सामाजिक चेतना होती है और न सामाजिक मानदंडों का सामाजिक आदर्श मानकों एवं मूल्यों का अभिज्ञान होता है। उन्हें केवल मादक द्रव्यों के सेवन का बोध रहता है। इसमें वे अपने होशो-आवास खो कर सामाजिक आदर्श मानकों को नशे की आदतों में पैरों तले कुचल के रख देते हैं। इस के परिणाम से समाज के आधार भूत तत्व छिन्न-भिन्न होने लगते हैं और ये हम बंद आंखो से देखते रहते हैं हा, बंद आंखे ,क्योंकि अगर हमारी आंखे अबतक खोली नहीं है वरना दिखावे के लिए हम शान-शौकत अपना रहे हैं और कभी नहीं हम इससे हट कर सोचते हैं कि इस वजह से हमारे देश के भविष्य जो, युवा वर्ग है वो पूरी तरह से अंदर से टूट रहा है।

आज हम देख रहे कि फिल्म , दूरदर्शन एवं रेडियो ने आज के जीवन को जिसमें मोहित किया है, तथा विलासिता पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित किया है, शायद मीडिया का कोई अन्य प्रकार ऐसा नहीं कर सका। आज फिल्मों में दिखाये गए मादक द्रव्यों के सेवन से संबन्धित घटनाओं का ग्रहण और आजमाइशे उच्च स्तर वर्गो में अपनाई जाती है। जिसका बुरा प्रभाव बच्चों, युवाओ पर पड़ता है।

फिल्मों में दर्शाएं गए चित्र , कलाकारों की मद्यपान करने की अदाकारी , हावभाव सामान्य व्यक्ति खास करके युवा वर्गो को आकर्षित करती है। लेकिन उच्चत्तम वर्गो में इसका अवलोकन सबसे ज्यादा हो रहा है ये हम वर्तमान स्थिति में देख रहे है उच्च आर्थिक स्थिति वर्गो में आये दिन किसी न किसी वजह से पार्टिया होती है। इन पार्टियों में ये लोग अनेक अंदाज़ से मद्यपान और मादक द्रव्यों का सेवन खुलेआम करते देखा जाता है और आश्चर्य इस बात का है कि इसको एक प्रतिष्ठा के रुप में देखा जाता है । सभी के हाथों में मद्यपान के भरे हुए गिलास देखी जाती है। जिसके हाथों में ये नहीं देखते उसे पूछा जाता है, " अरे आपका गिलास खाली क्यों है? लोग इसे अपनी शान समझते हैं । हंसी की बात ये है कि जो लोग मद्यपान नहीं करते उसको कम प्रतिष्ठित के दर्जा में आका जाता है।

वास्तव में फिल्म जगत एवं दूरदर्शन ने जिस प्रकार खुलेआम सुरापान, मदिरापन एवं धूम्रपान का सेवन किया है, उससे सामाजिक मूल्यों तथा सामाजिक नियंत्रण की शक्तियों का इतना अधिक हनन हुआ है कि बात ही मत पूछिये इस मादक द्रव्यों के सेवन से और नशाखोरी से देश के युवाओं का भविष्य खतरे में है। इससे वैयक्तिक , सामाजिक विघटन तो होते ही हैं । साथ-साथ सामुदायिक राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय विघटन के मार्ग भी प्रशस्त हो जाते हैं । मादक द्रव्यों के सेवन युवा वर्गों में शारीरिक गति जो होती है वह दुबली होती जाती है।

आज वर्तमान में हम देख रहे हैं कि युवा वर्ग का मनोबल , इच्छाशक्ति का अभाव, चरित्र बल अर्थ बल के साथ भौतिक बल के अपक्षय होते हैं। आज युवा वर्ग मादक द्रव्यों के सेवन से विचलन करीता, आदर्श शून्यता आपराधिकता तथा मानसिक व्याधि में ग्रस्त होता देख रहे हैं। दिन-ब-दिन इसकी मात्रा बढ़ती ही जा रही है। जो लोग नशाखोरी को अपनी प्रतिष्ठा बनके समाज के सामने मान-पान ले रहे है उनको अपनी गलतियां का एहसास ही नही है। ये सब करते समय ये वर्ग नहीं सोच रहे है कि अपनी जूठी शानो शौकत और लतों से हम अपनी भावी पीढ़ी का भविष्य खतरे में डाल रहे हैं। इन मादक द्रव्यों कि खेती बारी से भावी पीढ़ियों में आपराधिकता के बीज बोये जा रहे हैं जो हमारी मानवता एवं विधिव्यवस्था के लिए खुली चुनौती है।

उच्च वर्गो में नोकरी और बिजनेस के चढ़ाव-उतार की वजह से नशाखोरी का सहारा लिया जा रहा है। स्टेटस और तनाव से बचाने के लिए फ़शनेबल और स्टाइलिश दिखने के लिए शुरू में उच्च वर्गों में तेजी से आकर्षण बढ़ता गया है। फिर धीरे-धीरे इसके आदि होते चले जाते हैं।

एक सर्वेक्षण के अनुसार यह बताया गया है कि भारत में 20 लाख से अधिक लोग नशाखोरी के शिकार है और इसमें युवा वर्ग की गिनती ज्यादा है। जबकि ये सरकारी आकड़े है। वास्तविकता तो यह है कि किसी न किसी रूप में एक करोड़ से अधिक लोग नशे का प्रयोग करते हैं।

हम मानते है कि नशे की लत को छोड़ना आसान नहीं पर, नामुमकिन भी नहीं है। धैर्य रखकर इस आदत से छुटकारा पाया जा सकता है। नशा मुक्ति के लिए परिवार का रोल बहुत बड़ा होता है। परिवार के सभी लोग - सदस्यों को मजबूत रहकर युवाओं का साथ देना होगा। इस नशाखोरी की रोकथाम सभी नागरिकों की ज़िम्मेदारी होगी। तभी सही मायने में हम देश के भविष्य को बचा सकते हैं। उनकी सपनों की उड़ान को नया हौसला दे सकते हैं।

हम ये भी आशा रखते हैं कि आने वाले समय में देश के युवा अपने सपनों की उड़ान से देश का भविष्य सुनहरा कर दे!

वृक्ष बुज़ुर्ग – पौधे संतान

- दामोदर डी. नाईक
वैयक्तिक सचिव

पर्यावरण की दृष्टि से हमारा परम रक्षक और मित्र वृक्ष है। यह वृक्ष हमें अमृत प्रदान करता है। हमारी दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राण वायु देता है। वृक्ष हर प्रकार से पृथ्वी के रक्षक है जो मरुस्थल पर नियंत्रण करते हैं, नदियों की बाढ़ों की रोकथाम व जलवायु को स्वच्छ रखते हैं, समय पर वर्षा लाने में सहायता करते हैं, धरती की उपजाऊ शक्ति को बढ़ाते हैं। वृक्ष हमारा दाता है जो हमें निरंतर सुख ही देता रहता है। जनहित लोक कल्याण की दृष्टि से दस कुंओं को समान एक बावड़ी का महत्व है। दस बावड़ियों के समान एक तालाब, दस तालाबों के समान एक पुत्र का और दस पुत्रों के समान एक वृक्ष का महत्व है। इसे इस तरह से भी कह सकते है कि दस पुत्र अपने जीवन काल में जितना सुख, लाभ देते है, उतना लाभ एक वृक्ष आपने जीवन काल में पहुँचाता है।

हमारे ऋषि मुनि जानते थे कि प्रकृति जीवन का स्रोत है और पर्यावरण के समृद्ध और स्वस्थ होने से ही जीवन समृद्ध और सुखी होता है। केवल इतना ही नहीं वे तो प्रकृति की देव शक्ति के रूप में अर्चना उपासना भी करते थे और प्रकृति को परमेश्वर भी कहते थे। जहां एक और हमारे दूर दृष्टा मुनियों ने जीवन के आध्यात्मिक पक्ष पर चिन्तन किया, पर्यावरण पर भी उतना ही ध्यान दिया। जो कुछ पर्यावरण के लिए हानिकारक था उसे आसुरी प्रकृति कहा और हितकर को दैवी प्रवृत्ति माना। मानव समाज और प्रकृति में घनिष्ठ संबंध रहा है। मानव के प्रकृति से संबंध केवल गहरे ही नहीं, भावुक एवं मार्मिक भी है। प्रकृति हमारी माता है, वृक्ष वनस्पतियां पर्यावरण संतुलन के बहुत ही महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। ये पर्यावरण के सजग प्रहरी के समान है।

हमारे आदिकाव्य रामायण और महाभारत में वृक्षों वनों का चित्रण पृथ्वी के रक्षक वस्त्रों के समान पाया जाता है। वनों, वृक्षों को ऋषियों द्वारा पुत्रवत परिपालित करते वर्णन किया है। अपने किसी स्वार्थ सिद्धि के लिए हरे-भरे पेड़ों को काटना पाप माना गया है। मनु स्मृति में बताया गया है कि अनावश्यक रूप से पेड़ों को काटने पर दंड का विधान है। जो वृक्ष अपना लाभ प्राणियों को व पर्यावरण को दे चुके होते हैं केवल उसे ही काटा जा सकता है। हम यह समझते रहे हैं कि समस्त प्राकृतिक सम्पदा पर एकमात्र हमारी ही आधिपत्य है। हम जैसा चाहें, इसका उपभोग करें। इसी

हमारी भोगवादी प्रवृति के कारण हमने इसका इस हद तक शोषण कर दिया है कि हमारा अपना अस्तित्व ही संकटग्रस्त होने लगा है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि प्रकृति, पर्यावरण और परिस्थिति की रक्षा करो, अन्यथा हम भी नहीं बच सकेंगे।

सम्राट हर्षवर्धन, अशोक, शेर शाह सूरी ने जो सड़कें/राजमार्ग बनवाए थे उनके लिए कितने वृक्ष की बलि चढ़ानी पड़ी थी परन्तु उनके दोनों तरफ सैकड़ो नए वृक्ष भी लगवाए जाने ताकि पर्यावरण में कोई दोष न आ जाए। आज भी आप पाएँगे कि ग्रामीण समाज अपने घरों व खेतों के आसपास वृक्ष लगाते है। यहां के लोग वृक्षों के थाल बनाना, उनकी जड़ो पर मिटटी चढ़ाना, सींचना, वृक्षों को पूजा अथवा आदर प्रकट करना आज भी पुण्य-दायक कार्य मानते है। यह सारी प्रथाएं इसलिए शुरू हुई होंगी ताकि वृक्ष-वनस्पति की रक्षा होती रहे और मनुष्य इनसे मिलने वाला लाभ का आनंद उठाता रहे। वेद शास्त्रों में पर्यावरण घटकों की शुद्धता के लिए हमें एक ऐसा अमोघ उपाय प्रदान किया है जो सभी तत्वों पर अपरिहार्य (योग्य) रूप से अपना प्रभाव छोड़ते हैं, वह उपाय है यज्ञ।

यज्ञ एक आध्यात्मिक उपासना का साधन होने के साथ पर्यावरण को शुद्ध करने, उसे रोग और कीटाणु रहित रखने तथा प्रदुषण रहित रखने का अप्रमित साधन है। भारतीय संस्कृति की यह शैली रही है कि उसमें जीवन के जिन कर्त्तव्य अथवा मूल्यों का श्रेष्ठ और आवश्यक माना गया है, उन्हें धार्मिकता और पुण्य के साथ संयुक्त कर दिया गया है, जिससे लोग उनका पालन अनिवार्य रूप से करें जैसे की तुलसी, पीपल की रक्षा आदि। यज्ञ एक ऐसा पर्यावरण शोधक दैनिक अनिवार्य कर्त्तव्य माना जाता रहा है, जिसे शास्त्रों में यज्ञोवे श्रेष्ठ तम कर्म कहकर जीवन का श्रेष्ठाश्रमी कर्त्तव्य घोषित किया है। पर्यावरण शोधक यज्ञ एक विज्ञान है और इसकी प्रक्रियाएं वैज्ञानिक है।

जनता व सरकार का दायित्व बनता है कि अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर वातावरण को दूषित होने से बचाएं। ऐसे करके हम अपना ही नहीं, सर्वजन हितकारी कल्याण का काम करेंगे। हमें वृक्षों और वनों को अपने पुत्रों की भांति पालना और रक्षा करनी होगी, वृक्षों का निष्प्रयोजन काटना न हो और भी तो उतने या उससे दुगुने वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए। अगर समय रहते नहीं चेता तो दूषित वातावरण हमें और हमारी पीढ़ी के विनाश का कारण बन सकता है। कुछ ऐसा सकारात्मक किया जाना चाहिए ताकि हमारे बच्चों के शरीर प्रदूषण व कीट नाशक – मुक्त हों। जब तक मानवीय एवं प्राकृतिक परिस्थितियों से तालमेल नहीं होगा, पर्यावरण को सन्तुलित रख पाना कठिन होगा। प्रदूषण रूपी राक्षस पर क़ाबू पाकर ही देश, विश्व की रक्षा की जा सकती है।

वृक्ष प्रकृति की एक अनमोल देन है और यही वजह है कि भारत में वृक्षों को प्राचीन काल से ही पूजा जाता रहा है। आज भी यह प्रथा कायम है। वृक्ष हमारे परम हितैसी निःस्वार्थ सहायक अभिन्न मित्र हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली में वृक्षों का अत्यधिक महत्व है। वृक्षों के बिना अधिकांश जीवों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वृक्षों से ढके पहाड़, फल और फूलों से लदे वृक्ष, बाग, बगीचे मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हैं और मन को शांति प्रदान करते हैं। वृक्षों से अनेकों लाभ हैं जैसे वृक्ष अपनी भोजन प्रक्रिया के दौरान वातावरण से कार्बन डाइ ऑक्साइड लेते हैं और आक्सीजन छोड़ते हैं जिससे अनेक जीवों का जीवन संभव हो पाता है। वृक्षों से हमें लकडी, घास, गोंद, रेजिन, रबर, फ़ाइबर, सिल्क, टैनिस, लेटैक्स, हड्डी, बांस, केन, कत्था, सुपारी, तेल, रंग, फल, फूल, बीज तथा औषधियाँ प्राप्त होती हैं। वृक्ष पर्यावरण को शुद्ध करने का कार्य करते हैं और प्रदूषण को दूर करते हैं। ध्वनि प्रदूषण को दूर करते हैं। वायु अवरोधक की तरह काम करते हैं और इस तरह आँधी तूफान से होने वाली क्षति को कम करते हैं। वृक्ष की जड़ मिट्टी को मजबूती से पकड कर रखती है जिससे भूमिकी कटान रुकतीं है।

अन्यथा पहाडों पर से मिट्टी बह कर मैदानी क्षेत्रों में आती है और वहाँ वह नदियों के धरातल में जमा होकर नदियों की गहराई को कम कर देती है परिणाम स्वरूप मैदानी इलाकों में अधिक वर्षा होने पर जल्दी बाढ़ आती है। वृक्ष वर्षा जल को धरा पर रुकते हैं और वातावरण को नम रखते हैं। वृक्ष वर्षा जल को तेजी से बहने से रोकते हैं जिससे जल पृथ्वी में नीचे तक पहुँच पाता है और भूमिगत जल स्तर बढ़ाता है। वृक्ष सूर्य के ताप से जीवों को बचाते हैं। अनेकों जीव इसकी गोद में शरण पाते हैं और इसके फल, फूल, जड़, तना तथा पत्तों से अपना पोषण करते हैं। इस बात को यूँ भी समझ सकते हैं कि वृक्ष नहीं होते तो जीव जंतु तथा पृथ्वी का क्या हाल होता।

सादर सेवा
छमाही पत्रिका

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली-क्या और कैसे ?

- मकरंद देवराम भारंभे
वरिष्ठ अनुभाग अभियंता, मडगांव

प्रस्तावना

कोविड-19 महामारी के कारण समस्त विश्वव्यापार, उसकी संवाद प्रक्रिया तथा सामाजिक अभिसरण अभी भी दिङमूढ़ है। सम्पर्क से उष्मा, स्पर्श से आस्था , व्यवहार से नैसर्गिक सादगी एवम् यात्रा से आशयसमृद्धी चली गई है। भयचकित सा मानव अपने पूरे कार्यकलाप तथा जीवनशैली के आयामों के प्रति न केवल सचेत परंतु शंकाकुल हो उठा है। आधुनिकता के पूरे इतिहास मे स्मृति की इतनी अव्यवस्था, बुद्धि का इतना विक्षेप और विकास पे इतना व्यंग क्वचित ही दिखाई देता है।

ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का प्रसार

महामारी के संक्रांति काल में जैसे कई कंपनियों ने घर से या कहीं से भी कार्य का विकल्प ढूंढ़ा, राज्यतंत्र ने शिक्षाविदों से परामर्श कर लब्धप्रतिष्ठित एम आय टी, हार्वर्ड, यूडेमी-अनएकॅडमी-कोर्सेरा-मास्टरक्लास, एडेक्स, एलिसन जैसे कई संस्थानों की तर्जपर पढ़ाई के लिए ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली को अंगिकार किया। अन्यथा औपचारिक रहने वाली एवं समक्षता के कारण उत्कट और जीवंतसी ज्ञानोपासना ऑनलाइन के कारण अधिक तरल, सुगम, लचीली और बहुआयामी हुई। एक समान धरातल, एक समान आकाश भी उपलब्ध हुआ।

भूमिका

सूचना प्रौद्योगिकी के तहत इन्फ़ार्मेशन सुपर- हायवे पर भारतीय अर्थव्यवस्था ही नहीं सांस्कृतिक आदान-प्रदान, दायित्वों तथा परंपरा के निर्वाह, उद्योग की सभी इकाइयां बरबस दौड़ पड़ी है, जिससे शिक्षा तंत्र भी अपवाद नहीं। समय के पाबंदिया, भौगोलिक सीमाएं टूट सी गई है।

" कुतो सुखार्थिनः विद्या, विद्यार्थीन कुतो सुखम ? " यह जो सामूहिक अवचेतना में गृहित था, उसे पुनः प्रकाशन में लाने वाली ऑनलाइन शिक्षा पद्धति एक टेक्नो-सावी स्ट्रीट-स्मार्ट विद्यार्थियों को गढ़ तो हो रही है परंतु मूल उद्देश से भटकते हुए वितृष्णा के यात्री भी बना रही है। वैसे इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IOT) की तरफ यह पहला कदम बताया जा रहा है।

समस्याएं-

1) बहुत सारे विद्यार्थी जो ग्रामांचल से हैं उनके पास मोबाइल, कंप्यूटर यह साझा शैक्षणिक डिजिटल-अवसंरचना उपलब्ध नहीं है, अतः ज्ञानार्जन में सक्षम डिजिटल डिवाइस का अभाव बड़ी त्रासदी का कारण है। किन्हीं खेतिहरों, मजदूरों को देहात के घर या खेती जोतने के औजार या मां का स्त्रीधन तक बेचना या गिरवी रखना पड़ा है। सामाजिक विषमता का नया युग अवतीर्ण सा हुआ है।

2) ऑनलाइन पढ़ाई के लिए शिक्षक वर्ग भी मुस्तैद नहीं देखा जा रहा है। समक्ष उपस्थित श्रोता एवं अपने सुखासन में बिना उत्कंठा, ज्ञानानंद के जो विद्यार्थी ऑनलाइन रहते हैं उनकी ग्रहण क्षमता में जरुर अंतर तो होता है। अपनी आकांक्षाओं, प्रश्नों का समाधान ढूंढने की ललक उनमें कम ही पाई जाती है। कंफर्ट जोन को छोड़े बगैर शिक्षकों के वाक्य विन्यास की लक्षणा-व्यंजना का समझना कठिन होता पाया गया है। शिक्षकगण भी विद्यार्थियों की भाषा, अभिवृत्ती एवं मनोदृष्टि को समझकर पढ़ाते नजर नहीं आते।

3) आकलन और अवगाहन की पारस्परिक अपेक्षाओं में दिक्कते पैदा होती है। अकादेमिक शिक्षाही नहीं अपितु व्यावसायिक प्रशिक्षण, नवाचार, कठिन कालमे विशेष संप्रेरण के भी पूर्वनिर्धारित लक्ष्यों को किसी भी तरह हासिल कर " गार्बेज इन, गार्बेज आउट " करने की ललक केवल हानि पहुंचाती है।

4) अत्यंतिक लचीलापन , माध्यम का गांभीर्य और विद्यार्जन की प्रतिष्ठा का पुन:सर्जन करने की बजाए विसर्जन करता दिख रहा है।

5) जो तथा कथित पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन दिए जाते हैं, उनमें बुलेट पाइंटस् एवम् पावर नदारद रहती हैं।

6) स्वाध्याय तथा शिक्षकों द्वारा दिए जा रहे व्याख्यानों से मुद्दों का कुंजीगत तात्पर्यों का टिप्पण करना विद्यार्थियों को बंधनकारक नहीं रहा है। परिश्रम के बगैर प्राप्त विद्या, जीवन के समर प्रसंगों में इन मौकों में भूले हुए मृत्युंजय मंत्र के तरह ही मानभंगी होती है। मेरे विचार मे " सादरीकरण का अनादर " ही सबसे अहम बाधा दिख रही है।

7) कई बार फलक पर लिख जाने वाला समीकरण, फार्मूला, खुद वक्ता-श्रोता तांत्रिक कारणों से दिखाई- सुनाई देना बंद हो जाता है। बिजली की लोड-शेडिंग तथा बारंबार के साधन सामग्री की विफलता महत्वपूर्ण आशय से वंचित कर देती है। संप्रेषण विज्ञान की बुनियादी शर्ते - जरूरतें हताहत होती दिख रही है।

8) ऑडियो-वीडियो को बंद करके ऑनलाइन उपस्थिति के नए गुर विद्यार्थी अनायास सीख रहे हैं।

9) सिस्को वेबेक्स, माइक्रोसॉफ्ट टीम, झूम एप, गूगल, जियोमीट जैसे बहुतेरे मंच नए तांत्रिक व्यामिश्रता को, समझ के अडंगों को बढ़ाते हैं । हर स्कूल, कोचिंग क्लास अलग-अलग

प्लेटफार्म की रवायत करते हैं जो न केवल कॉम्पॅटिबिलिटी की अडचन बल्कि कन्फ्यूजन का कारण है। हर विधा की अपनी खासियतों समेत खामियां भी होती है, जो न केवल शैक्षणिक या सामाजिक-आर्थिक अपितु सांस्कृतिक अपराधों की तरफ जा रही है।

10) ऑनलाइन पढ़ाई इक नई अवधारणा है, जिसकी जटिलता, असहजता, असुगमता संभाव्य विद्यार्थियों को ही नहीं तो ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा जैविक संधारण संभावनाओं को ही परे ठेलती है।

11) ऑनलाइन पढ़ाई मे कोई बेंचमार्क, किसी मील के पत्थर या पडावों का ना होना, गुणवत्ता के विकास, आकलन की सम्यकता को चुनौती देता हैं।

12) कंप्यूटर साक्षरता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा 21वीं सदी के सामने रखी तंत्र कुशलता अभी भी बड़े वास्तविक अभाव है।

13) शल्य चिकित्सा, औद्योगिक डिजाइन, दंत विज्ञान, अनुरक्षण की बारीकियां इतना ही नहीं,खेलकूद जैसी कई विधाएं प्रत्यक्षानुभव की मांग करती है। उन्हें ऑन लाइन पढ़ाना युक्तिसंगत नहीं है।

14) संघभावना, कार्य संस्कृति, विस्तृत विमर्श से उत्पादकता ही नहीं, व्यक्तिनिहाय प्रातिभिक सजगता में वृद्धि को भी ऑनलाइन शिक्षा के मसखरेपनसे ठेस लगती है।

समाधान -

· कई नीचले तबकों के, झुग्गी झोपड़ियों के, निम्न मध्यम वर्गीय विद्यार्थियों के घर में कोई सुरक्षित कोना, उनकी अपनी निजी जगह (माइंड स्पेस) नहीं उपलब्ध होती है। ऐसे शिक्षार्थियों को सरकार समाज के अग्रणी एवं सेवाभावी कोई अभयारण्य, अभ्यासक्षेत्र, लाउंज उपलब्ध कराएं, जहां बिना हस्तक्षेप और दुविधा के विद्यार्जन सुलभ हो।

ऐसी समांतर पाठशालाओं / उपशालाओं में सूचना प्रौद्योगिकी का प्रगत ढ़ांचा भी नैगमिक सामाजिक दायित्व (CSR) के तहत उद्योगों-उपक्रमों से खड़ा करना नवभारत निर्माण के लिए बेहतर होगा।

· पाठ्यक्रम विकल्पसुलभ – प्रमाप्य (modular), सुपाच्य तथा रंजकता से भरपूर हो। ज्ञान की सामग्री जितनी आकर्षक - रसपूर्ण प्रदान की जाएगी, उतना लक्ष्यभेद सुलभ होगा। ऑनलाइन पढ़ाई की ओर उद्यत करने हेतु 'पूर्वानुकूलन' 'इंडक्शन-ओरियंटेशन' कोर्स सभी बनाए जाए जिससे पालकों-अभिभावकों एवं स्वयं विद्यार्थियों की मूलभूत शंकाओं का निरसन उपलब्ध हो।

पढ़ाई के बाद विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त 'प्रत्यभिज्ञा' की जांच-पड़ताल के लिए वस्तुनिष्ठ तथा सम्यक परीक्षाविधी को भी जोड़ना चाहिए।

· कुछ एक अंतराल के बाद नियतकालिक तरीके से विद्यार्थियों के समूहों को विभाजित कर संरक्षितता सुनिश्चित किए, स्वास्थ्य के परिवेश में अध्येता एवं अध्यापकों में प्रत्यक्ष आंतक्रिया के सत्र भी रखेंगे तो अच्छा होगा।

· कभी कभार पालकवर्ग अपने पाल्यों को गृहित धर घरेलू कार्यों में व्यस्त करते हैं, उसे टालने के लिए निश्चित समय-सारणी तथा वास्तविक निगरानी व्यवस्था का प्रावधान करें।

· विद्यार्थियों में रसवत्ता एवं उत्तेजना की कमी को दूर करने के लिए आशय की पुनर्रचना- कथांतरण, डिजिटल गेमिफिकेशन, विशेष तांत्रिक इफेक्ट्स आदि पर ध्यान दे।

· शिक्षकों-अभिभावकों के बीच भी अपेक्षाओं के बारे में समाधान, संशोधन के लिए आंतरक्रिया सुनिश्चित करें। उसी तर्ज पर दो भिन्न भौगोलिक समूह विशिष्ट विद्यार्थियों में भी 'क्वालिटी सर्कल' चर्चार्थ बनाए जाए, जो स्पर्धा, वाद-विवाद, वेबिनार, समिट्स, संयुक्त संघ चर्चा फोरम के द्वारा अपने ईप्सितों को, हासिलों को, अड़चनों के बारे में खुला बखान कर सकें।

· ज्ञान वही है जो समकालीन जीवन से नाता ना छोड़ें। इसलिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करवा कर उनके वास्तव आकलन की जांच करे। हेतूदत्त प्रकल्पो के वीडियो अपलोड करवाएं। कोई दैनंदिन समस्याओं के अभिनव उत्तर भी मंगवाए जा सकते हैं।

· असामाजिक तत्वों की दखलअंदाजी, सेंधमारी से ऐप पूरी तरह से सुरक्षित बनाएं।

· व्हर्चुअल (अभासी) वर्गों की सदस्य संख्या 20 से अधिक ना रखें। उसे सस्ती कमाई का कारण है कारागार नुस्खा न माने। यह अभी तक एक अपारंपरिक तरीका रहा था, जिसे प्रमाणबद्ध - सुविहित और आदर्शनोन्मुख प्रकार से अपनाने पर सामाजिक स्वास्थ्य एवं एहतियात, आपदा प्रबंधन के सिद्धांत चरितार्थ कर सकते हैं। कविश्री दुष्यंतकुमार जी के शब्दों मे कहूं तो

" कैसे आकाश में सुराख नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबियत से उछालों यारों। "

समय का महत्व

- सीताराम दुबे
हिंदी अनुवादक, बेलापुर

हमें हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी इन पत्रिकाओं में प्रकाशित करने के लिए किसी एक विषय में अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिला है। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, मैं आज अपना विचार" समय का महत्व" इस महत्वपूर्ण विषय पर लेख लिख रहा हूं। कहा जाता है कि मनुष्य बलवान नहीं होता है समय बलवान होता है लेकिन समय आराम नहीं करता है। भारत वर्ष ऋषि मुनियों का देश है। भारत में समय को काल या महाकाल कहा जाता है। काल का चक्र अबोधगति से चलता चला आ रहा है। इसे देवता भी माना गया है। जिस प्रकार परमात्मा अनंत और अनादित है। उसी प्रकार काल अनंत और अनादित है। मानव जीवन के रुप में हमें एक अखंड काल का एक छोटा सा भाग मिला है। जिसे हम यह कह सकते हैं कि समय मूल्यवान है। शायद खोई हुई वस्तु पुन:प्राप्त हो सकती है। पर समय एक बार निकल गया तो वापस नहीं आता है। घड़ी की सुई एक-एक सेकेंड में टिक-टिक की आवज से समय का एहसास दिलाती है। हर पल बितने का एहसास कराती रहती है। जैसे उगता हुआ सूरज सुबह का एहसास कराता है। डूबता हुआ सूरज शाम होने का एहसास कराता है । इससे एक-एक दिन कम होने का एहसास कराता है। जिस तरह मौसम अपने होने का एहसास कराता है मौसम चले जाने का भी एहसास कराता है।

किसी व्यक्ति ने समय के बारे में बड़ी ही पते की बात कही दिनप्रति दिन एक लघु जीवन है और हमारा जीवन मात्र एक दिन की पुनरावृत्त है। दिन प्रति - दिन ऐसा जियों जैसे अंतिम ही हो। समय की उपयोगिता का ही व्याख्या है समय बहुमूल्य है, इसका एक-एक पल गंवाने वाला व्यक्ति अपने जीवन के समय को गवा बैठता है। बड़े-बड़े महाराजाओं का असफलता का कारण भी यही रहा है। शेरशहां सूरी द्वारा हुमायु का पराजय का कारण भी यही रहा है। देखा जाय तो हुमायु ने अपना सारा समय ऐशो आराम से बिताया,शेरशहां सुरी ने उसी वक्त समय का ज्यादा उपयोग किया।

औरंगजेब ने अपने वसीहतनामा मे लिखा समय पल पल बहुमूल्य है। मेरा मानना है कि कोई भी व्यक्ति जब तक असफल नहीं होता तब तक प्रयास नहीं करता है। यदि हर व्यक्ति समय का सही सदुपयोग करें तो कभी भी उसे हार का सामना नहीं करना पड़ेगा।

कहावत है "समय धन है" इसे हमें अपने हृदय की गहराई में उतार लेना चाहिए। समय बहुत मूल्यवान है। समय का एक पल गवाना मानों जैसे एक रत्न गवाने जैसा है।

कबीर दास ने कहा है.....

काल करे सो आज कर,आज करें सो अब,
पल में परलै होत है बहुरि करेगा कब।

अर्थात समय पर किया हुआ छोटा सा कार्य भी महान होता है। पर समय बितने पर बड़ा से बड़ा किया हुआ महान कार्य भी व्यर्थ चला जाता है। किसी महा पुरुष ने कहा समय बहुत ही मूल्यवान है। जिस प्रकार स्वर्ण का एक-एक अंश मूल्यवान है ठीक उसी प्रकार समय का एक-एक पल मूल्यवान है। काल चक्र के अखंड को सही उपयोगिता से आपके गए हुए जीवन की सफलता कुंजी पायी जा सकती है।

समय का इससे सुंदर वर्णन नहीं आका जा सकता है। समय का सदुप्रयोग हमें सफलता पूर्ण जीवन की याद दिलाती है।

समय उसी का साथ देता है जो इसकी सदुपयोगिता की पहचान करके अपने जीवन में समेट लेता है। समय की उपेक्षा करने वालों को समय ने कभी क्षमा नहीं किया है।

जिस तरह कमान से निकला हुआ तीर कमान में वापस नहीं आ सकती उसी प्रकार वाणी से निकले शब्द वापस नहीं आ सकते। उसी तरह से पेड़ से गिरी हुई डाली को वापस पेड़ से जोड़ा नहीं जा सकता। ठीक उसी तरह समय एक बार हाथ से निकलने के पश्चात वापस नहीं आ सकता।

समय के विषय पर श्रीमन नारायण ने अपने लेख "समय नहीं मिला" में कहा समय बहुत ही मूल्यवान है। लेकिन परिश्रम करने पर भी हम समय में एक भी मिनट बढ़ा नहीं सकते हैं। इसीलिए तो समय धन से भी कही ज्यादा मूल्यवान है। इसीलिए इतने मूल्यवान से धन का क्या मुकाबला किया जा सकता है। समय का सदुपयोग करने वालों का समय कभी साथ नहीं देता है। इसका सदुप्रयोग करने वालों को समय अपने से कभी लज्जीत नहीं होने देता है।

कहावत है कि गया समय फिर हाथ नहीं आता क्योंकि अब पछताएं होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

अर्थात – मानव रुपी खेत में समय रुपी चिड़िया सारे दाने चुग ले जाती है चिड़िया के चले जाने पर खेत की रखवाली करने से क्या फायदा ?

कहने का तो समय है लेकिन कालचक्र का निराकरण नहीं संभव

है।

अर्थात- समय के बीतने पर या अंधेरा हो जाने पर सावधानी रखने का क्या लाभ जब चोरी करके चोर के चले जाने पर सावधानी का क्या लाभ ? पानी के पार करने पर पुल को बांधने का क्या लाभ? ठीक उसी प्रकार एक बार समय निकल जाने पर पछताने का क्या लाभ?

समय उस ब्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। जो इस धरती पर है और समय का कद्र करता है ऐसे लोगों का समय भी साथ दिया है। लेकिन समाज के उस वर्ग के लिए मानव का महत्व जीवन सफलता की कुंजी पाने के लिए अधिक महत्वपूर्ण है कहने को तो सब कुछ है। लेकिन "छात्रावास" के समय का महत्व जानना जरुरी है। अपनी मौज मस्ती और सैर सपाटे में अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए। हमारे छात्र बंधु कलाई में घड़ी बाधते हैं लेकिन फैशन समझ के घड़ी कोई श्रृंगार फैशन नहीं है। घड़ी सदैव सजग करती है। इसकी आवाज सुननी चाहिए। समय की पहचान करके अगर छात्र अपनी जीवन व्यतीत करें। तो अपने नागरिक होने की उचित कर्मों से कभी वंचित नहीं रहेंगे। अगर छात्रावास में समय का महत्व और इसकी सदुपयोगिता को नहीं अपनाया तो आगे जाकर भविष्य में अपने जीवन में बहुत पछताना पड़ेगा। इसका महत्व समझकर अपने जीवन का सही मार्ग पर चलते रहने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

समय अपने आप में एक महत्वपूर्ण है समय को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। इससे राष्ट्र के योगदान में बहुत असर पड़ता है। इससे देश की प्रगति अखंडता में बाधा उत्पन्न होती है। इसीलिए समय के मूल्य को समझना एक-एक नागरिक का कर्तव्य है। जैसे समय किसी का इंतजार नहीं करता है उसी तरह काल भी किसी का इंतजार नहीं करता है वह हमेशा घुमते रहता है। काल के चक्र को हम विपरीत योग में घुमा नहीं सकते हैं जैसे समय की कार्य खण्ड में या फिर कार्य गति में हम बाधा नहीं ला सकते है। देखा जाय तो समय का सही सदुप्रयोग तो हम कर सकते हैं । लेकिन क्या हम समय का सही सदुप्रयोग करके जीवन में गति ला सकते हैं। मचमुच समय बड़ा ही मूल्यवान और बलवान है। कहने को तो समय बहुत ही बलवान होता है। एक बार किसी ने पूछा समय को सब लोग महत्व क्यों देते हैं और समय को बलवान क्यों कहते हैं। उसने फिर जबाब दिया जब समय आप से मिले तो समय से ही पूछ लेना । समय का सदुप्रयोग सही वक्त और सही समय पर करना चाहिए। तभी जीवन की सार्थकता की ओर हम सुनिश्चित और सृदृढ़ कदम बढ़ा सकते हैं।

समय के साथ जीवन को हमेशा तात्पर्य रखना चाहिए।

समय के बारे में और क्या कहना है लेकिन एक जीवन की सच्ची गाथा समय के बारे में बता सकता हूं जीवन की सफर में गुजर जाते हैं जो मुकाम वो फिर नहीं आते, वो फिर नहीं आते, वो मुकाम।

हम सफर

- द्विवेदी

न करों ज्यादा
थोड़ा तो कर लो ऐतबार
आज हम हैं
कल का क्या भरोसा
जिंदगी थोड़ी सी है
हम सफर तो बन लों।।

किसी एक पल में
दुनिया बिखर जाती है
आज जो मिले हैं
कल न मिले
बचे हैं कुछ पल
हम सफर तो बन लों।।

आज मुझपर है
कल किसी और पर
जिंदगी एक सफर है
दो कदम तो साथ चल लो
न जाने कल क्या होगा
हम सफर तो बन लों।।

रात हो गई है
न दिल साथ दे रहा है
जुब्बा लड़खड़ा रही है
माना की वक्त बेवफा है
मुझपर यकीन कर लो
हम सफर तो बन लों।।

अब सुबह हो रही है।
सच कह रहा हूं
कल जो कुछ हुआ है
उसे भूल रहा हूं
यकिन तुम तो कर लो
हम सफर तो बन लों।।

माना की कुछ हुआ है।
गलतफहमियां हैं।
मिल कर बिछड़ जाना
हम दोनों की गलतियां हैं
अब सुबह हो गई है।
हम सफर तो बन लों।।

कर्नाटक के नयनरम्य स्थल - पर्यटन

- राजेश देसाई
वाणिज्य पर्यवेक्षक, बेलापुर

अपने विस्तृत भूगोल एवं लम्बे इतिहास के कारण कर्नाटक में बड़ी संख्या में पर्यटन आकर्षण भरे हुए हैं। राज्य में जहां एक ओर प्राचीन शिल्पकला से परिपूर्ण मंदिर हैं तो वहीं दूसरी तरफ आधुनिक नगर भी हैं, जहां एक ओर नैसर्गिक पर्वत मालाएं हैं तो वहीं अनान्वेषित वन संपदा भी है और जहां व्यस्त व्यावसायिक कार्यकलापों में उलझे शहरी मार्ग हैं, वहीं दूसरी ओर लम्बे सुनहरे रेतीले एवं शांत सागरतट भी हैं। कर्नाटक राज्य को भारत के राज्यों में सबसे प्रचलित पर्यटन गंतव्यों की सूची में चौथा स्थान मिला है। राज्य में उत्तर प्रदेश के बाद सबसे अधिक राष्ट्रीय संरक्षित उद्यान एवं वन हैं, जिनके साथ ही यहां राज्य पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशालय द्वारा संरक्षित 752 स्मारक भी हैं। इनके अलावा अन्य 25000 स्मारक भी संरक्षण प्राप्त करने की सूची में हैं।

बाजीपुर का गोल गुम्बज

बीजापुर के सुल्तान मुहम्मद आदिल शाह का मकबरा है और इसका निर्माण फ़ारसी वास्तुकार ने करवाया था। मकबरे के मुख्य हॉल के भीतर चारों ओर सीढ़ियों से घिरा हुआ एक चौकोर चबूतरा है। इस चबूतरे के मध्य एक कब्र का पत्थर है, जिसके नीचे इसकी असल कब्र बनी है। आदिलशाही वंश के मकबरों में ये इस प्रकार का एकमात्र उदाहरण है। मकबरे के गुम्बद के आन्तरिक परिधि पर एक गोलाकार गलियारा बना हुआ है, जिसे अंग्रेज़ों ने "व्हिस्परिंग गैलरी" नाम दिया है। इस गलियारे के निर्माण में प्रयुक्त ध्वनि-विज्ञान के वास्तु में सम्मिलन होने के कारण यहां धीमे से फ़ुस्फ़ुसाया हुआ एक शब्द भी इसके व्यास के ठीक दूसरी ओर एकदम स्पष्ट सुनाई देता है।

कर्नाटक के पश्चिमी घाट में आने वाले तथा दक्षिणी जिलों में प्रसिद्ध पारिस्थिति की पर्यटन स्थल हैं जिनमें कुद्रेमुख, मडिकेरी तथा अगुम्बे आते हैं। राज्य में 22 वन्य जीवन अभयारण्य एवं 5 राष्ट्रीय उद्यान हैं। इनमें से कुछ प्रसिद्ध हैं: बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान, बनेरघाटा राष्ट्रीय उद्यान एवं नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान।

बांदीपुर राष्ट्रिय उद्यान

बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान- दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित है। यह प्रोजेक्ट टाइगर के तहत सन् 1974 में एक टाइगर रिज़र्व के रूप में स्थापित किया गया था। एक समय यह मैसूर राज्य के महाराजा की निजी आरक्षित शिकारगाह थी। बांदीपुर अपने वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है और यहाँ कई प्रकार के बायोम हैं, लेकिन इनमें शुष्क पर्णपाती प्रमुख है। भारत के लुप्तप्राय वन्य जीवन की कई प्रजातियों का संरक्षण स्थल है। बांदीपुर चामराज नगर जिले के गुण्ड्लु पेट तालुके में स्थित है। यह मैसूर शहर से 80 किलोमीटर की दूरी पर एक प्रमुख पर्यटन स्थल ऊटी जाने के मार्ग पर स्थित है। इसकी वजह से बहुत से पर्यटन यातायात बांदीपुर से होकर गुज़रते हैं।

बादामी गुफा मंदिर

कर्नाटक के उत्तरी भाग में बागलकोट जिले के एक शहर बादामी में स्थित हिंदू और जैन गुफा मंदिरों का एक परिसर है। गुफाओं को भारतीय चट्टानों को काटकर बनाने की वास्तुकला का

उदाहरण माना जाता है, विशेष रूप से बादामी चालुक्य वास्तुकला, जो 6वीं शताब्दी से है। बादामी एक मानव निर्मित झील के पश्चिमी तट पर स्थित है, जो पत्थर की सीढ़ियों के साथ एक दीवार से घिरा है; यह बाद के समय में निर्मित किलों द्वारा उत्तर और दक्षिण में घिरा हुआ है।

हलेबीडु का होयसलेश्वर मंदिर

हलेबीडु यह होयसाल राजवंश की राजधानी रही है। इस कारण यह होयसाल स्थापात्यकला का अद्भुत केन्द्र है, जिसके मुख्य नमूने हैं होयसालेश्वर और केदारेश्वर मंदिर। वर्तमान में हैलेबिडु का अर्थ है नष्ट शहर। इस शहर को बहमनी साम्राज्य द्वारा दो बार नष्ट किया गया था। हेलिबिड को भारतीय मंदिर और शिल्प कला का दर्शन कराने वाले स्थान के रूप में जाना जाता है। बेलूर के संग जुड़वा नगर कही जाने वाली यह जगह तीन शताब्दियों तक (11वीं के मध्य से 14वीं शताब्दी के मध्य तक) होयसल वंश का गढ़ था। बेलूर-हेलिबिड की स्थापना जन अनुयायी नृपा कामा ने की थी। लेकिन इसे वास्तविक प्रसिद्धि होयसला वंश के शासन काल में बने मंदिरों के लिए मिली। होयसला शासक कला और शिल्प के संरक्षक थे। बेलूर और हेलिबिड में इन्होंने भव्य मंदिरों का निर्माण कराया जो आज भी उसी शान से खड़े हैं।

हेलिबिड में होयसाल मंदिर क्लोरिटिक शीस्ट (एक प्रकार के सोपस्टोन) से बने हुए हैं एवं युनेस्को विश्व धरोहर स्थल बनने हेतु प्रस्तावित हैं। यहाँ बने गोल गुम्बज तथा इब्राहिम रौज़ा दक्खन सल्तनत स्थापत्य शैली के अद्भुत उदाहरण हैं। श्रवणबेलगोला स्थित गोमतेश्वर की 17 मीटर ऊंची मूर्ति जो विश्व की सर्वोच्च एकाश्म प्रतिमा है, वार्षिक महामस्तकाभिषेक उत्सव में सहस्रों श्रद्धालु तीर्थायात्रियों का आकर्षण केन्द्र बनती है।

मैसूर

मैसूर पैलेस मैसूर का दृश्य

यह जिले और मैसूर क्षेत्र का मुख्यालय है और कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरू के 140 किमी (87 मील) दक्षिण पश्चिम में स्थित है। मैसूर शहर का क्षेत्रफल 128.42 वर्ग किमी (50 वर्ग मील) का क्षेत्र शामिल है और यह चामुंडी हिल्स के आधार पर स्थित है। मैसूर के सबसे प्रमुख पर्यटन क्षेत्रों में से एक है। मैसूर को पैलेस सिटी ऑफ इंडिया के रूप में भी जाना जाता है। न्यूयॉर्क टाइम्स ने हाल ही में मैसूर को लगातार दूसरे साल के लिए पृथ्वी पर जरूर देखे जाने वाले 31 स्थानों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया है।

मैसूर पैलेस शहर के केंद्र में स्थित एक महल है। यह मैसूर के पूर्व शाही परिवार का आधिकारिक निवास था और उनका दरबार (शाही कार्यालय) भी था।

ललिता महल मैसूर में दूसरा सबसे बड़ा महल है। यह शहर के पूर्व में चामुंडी हिल्स के पास स्थित है। 1921 में भारत के वायसराय के यात्रा के दौरान उनके प्रवास के लिए कृष्णराज वोडेयर चतुर्थ द्वारा महल बनाया गया था। यह महल शुद्ध सफेद रंग में निर्मित है इतालवी पैलेज़ोस की शैली में बनाया गया है। इसमें एक विशाल छत और प्राकृतिक उद्यान भी हैं।

· जगनमोहन पैलेस 1861 में कृष्णराज वोडेयार तृतीय द्वारा मुख्यतः हिंदू शैली में बनाया गया था एवं इसका उपयोग शाही परिवार के लिए वैकल्पिक महल के रूप में कार्य किया जा सके। यह 1915 के बाद से एक आर्ट गैलरी के रूप में परिणत

कर दिया गया हैं जिसका नाम श्री जयचमाराजेन्द्र आर्ट गैलरी है। इस संग्रहालय में कई प्रसिद्ध भारतीय चित्रकारों के पेंटिंग रखे हुए हैं जिनमे राजा रवि वर्मा, रूसी चित्रकार स्वेतोस्लाव रोरिच एवं मैसूर चित्रकला शैली के कई चित्र शामिल हैं।

गार्डन

वृन्दावन गार्डन, श्रीरंगपट्टना, मंड्या जिला का एक प्रसिद्ध शो उद्यान हैं, जो अपने संगीतमय फव्वारों के चलते काफी प्रसिद्ध हैं।

संग्रहालय

· मैसूर रेत मूर्तिकला संग्रहालय यहाँ 115 ट्रक की रेत (बालू) का इस्तेमाल कर 150 से अधिक विशाल मूर्तियों का निर्माण किया गया हैं। जिनमें मैसूर के विरासत के 16 से अधिक विषयों को दिखाया गया है।

· प्राकृतिक इतिहास का क्षेत्रीय संग्रहालय यह संग्रहालय मैसूर में करण जी झील के तट पर स्थित है और जैविक विविधता, पारिस्थितिकी और दक्षिणी भारत के भूविज्ञान से संबंधित है।

· लोक संग्रहालय यह संग्रहालय मैसूर परिसर विश्वविद्यालय में स्थित है और पूरे कर्नाटक राज्य के 6500 से अधिक लोक कला और शिल्प पेश करता है।

· रेल संग्रहालय यह संग्रहालय मैसूर रेलवे स्टेशन के नजदीक स्थित है और भारत में इस तरह का दूसरा संग्रहालय है। यहाँ रेलवे से संबंधित फोटो और किताबें भी मौजूद हैं।

धार्मिक स्थल

चामुंडी हिल्स मैसूर के पैलेस सिटी के करीब है। इसकी औसत ऊंचाई 1,000 मीटर है एवं यहाँ से शहर का विहंगम दृश्य देखा जा सकता है।

· सेंट फिलोमेना चर्च-सेंट फिलोमेना चर्च मैसूर शहर में सेंट फिलोमेना के सम्मान में बनाया गया एक चर्च है। यह 1956 में निर्मित यह चर्च निओ गॉथिक शैली में बनाया गया था।

यहां अनेक खूबसूरत सागर तट हैं, जिनमें मुरुडेश्वर, गोकर्ण एवं कारवार सागरतट प्रमुख हैं। इनके साथ-साथ कर्नाटक धार्मिक महत्व के अनेक स्थलों का केन्द्र भी रहा है। यहां के प्रसिद्ध हिन्दू मंदिरों में उडुपि कृष्ण मंदिर, सिरसी का मरिकंबा मंदिर, धर्मस्थल का श्री मंजुनाथ मंदिर, कुक्के में श्री सुब्रह्मण्यम मंदिर तथा शृंगेरी स्थित शारदाम्बा मंदिर हैं जो देश भर से ढेरों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। लिंगायत मत के अधिकांश पवित्र स्थल जैसे कुदालसंगम एवं बसवन्ना बागेवाड़ी राज्य के उत्तरी भागों में स्थित हैं। श्रवणबेलगोला,मुदबिद्री एवं कर्कला जैन धर्म के ऐतिहासिक स्मारक हैं। इस धर्म की जड़े राज्य में आरंभिक मध्यकाल से ही मजबूत बनी हुई हैं और इनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण केन्द्र है श्रवणबेलगोला यदि आपने अभी तक इन स्थानों पर नहीं गए हो तो अवश्य जाएं।

जिंदगी तू चलती चली जा

- सुधा एस. दुबे,
कोंकण रेल विहार, नेरुल

जिंदगी कहने को तो तू हम सफर है
मुश्किलों में लड़ने के लिए निड़र है
तलाशता हूं मैं तूझे कहां-कहां नहीं
न जाने फिर भी क्या कहूं, तू मेरी हमसफर है।

कहने को तो जिंदगी सबकी अपनी है
मुश्किलें भी सबकी अलग-अलग हैं
मगर साथ न दिया किसी ने किसी का
तू चलती चली जा, तू मेरी हमसफर है।

कहने को तो सब लोग अपने हैं
अपने भी बेगाने होते हैं
मुश्किलों में जो काम आए, वहीं अपने होते हैं
तू चलती चली जा, तू मेरी हमसफर है।

जिंदगी तू चलती चली जा
मत कहीं रुकना थकहार कर
मिश्किलें बहुत हैं जिंदगी में
तू चलती चली जा, तू मेरी हमसफर है।

सादर सेवा
छमाही पत्रिका

स्वास्थ्य - बबूल और नीम का महत्व

बबूल :

संस्कृत : बबूल, किंकिरात हिन्दी : बबूल, बबूर, कीकर
लैटिन : माइमोसा अराबिका मराठी: माबुल, बबुल
बंगला : बबूलगाछ अंग्रेजी: Acaciatree
गुजराती : बाबलं

परिचय

बबूल के वृक्ष जल सन्निकट भूमि तथा काली मिट्टी में मुख्यत: पैदा होते हैं। इसके पत्ते आंवले के पत्तों की अपेक्षा लघु तथा दीर्घवृत जोड़े के रूप में अधिक मात्रा में लगे रहते हैं। बबूल के कांड स्थूल तथा छाल खुरदरी होती है। इसके फूल, गोल, पीले, अल्प सुगंधवाले होते हैं। इसकी फली श्वेत वर्ण की सात-आठ इंच लंबी होती है। बीज गोल, धूसर वर्ण वाले चपटी आकृति के होते हैं। बबूल वृक्ष में से ग्रीष्मऋतु में गोंद एकत्रित किया जाता है।

गुण

बबूल ग्राही, कफ, कुष्ट, कृमि एवं विषनाशक है।

प्रयोग

प्रमेह रोग में तथा आमातिसार में बबूल का कच्चा पत्ता सेवन करने से लाभ होता है। बबूल का निर्यास-शीतल, स्निग्ध एवं पोषक है। इसी कारण श्लेष्मा-धरा कला की उत्तेजना जन्य रोग खांसी, गलक्षत, रक्तातिसार, श्वेतप्रदर, मूत्राघात, मृत्रकृच्छरादि पोड़ाओं में उपयुक्त है। विषय-जन्य, अतिवमन तथा अतिरेचन में इसका स्वत्व लाभप्रद है। बबूल का फल खांसी में लाभप्रद है तथा फोड़े में बबूल के पत्ता लप करने से लाभ होता है। बबूल छाल के लक्षण एवं अधिक रक्तप्राव में केवल धारण करने उसका क्वाथ व्रणादि धोने के काम में प्रयुक्त किया जाता है। फोडे के फट जाने पर फोड़े में जो दाह होती है, वह भी इसे शांत हो जाती है। श्वेत प्रदर और मूत्राघात में बबूल का गोंद विशेष लाभकारी है।

मात्रा

क्वाथ 5 तोले से 10 तोले तका गोंद 5 माशा से 1 तोला तक।

नीम :

संस्कृत - निम्ब, पिचुमर्द हिन्दी-नीम, निम्ब
अंग्रेजी : Nimbtree बंगला : निमगाछ
मराठी : कडूलिम्ब गुजराती : लिमवडो

परिचय

यहां नीम का परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि नीम एक ऐसा विशाल वृक्ष है, जो प्रायः सभी का देखा हुआ है और जिसके बारे में सभी जानते हैं। आयुर्वेद में चर्मरोगों की श्रेष्ठ औषधियां नीम से ही निर्मित होती हैं।

गुण

नौम, शीतल, ग्राही, अग्नि, वात, श्रम, तृषा, ज्वर, व्रण, कफ, वमन, कोढ़ तथा प्रमेहनाशक है। नीम के पत्ते, यदि नेत्रों को हितकारी हैं, तो टहनियां दांतों की सुरक्षा करती हैं। इसी प्रकार निबोलियां कुष्ठ, कृमि तथा विषनाशक हैं और त्वचा की सुरक्षा करने में अद्वितीय हैं।

प्रयोग

नीम के पत्ते और मोम को अलसी के तेल में जलाकर, घोटकर मरहम बनाएं। इसे फोड़े के घाव पर लगाने से घाव शीघ्र ठीक हो जाते हैं। नीम की पत्तियों को उबालकर, उस पानी से घाव धोएं। इससे घाव में मौजूद गंदे कीटाणु समाप्त हो जाते हैं नीम की छाल का काढ़ा बनाकर पीने से ज्वर के बाद की दुर्बलता दूर हो जाती है। नीम के तेल की मालिश करने से सभी तरह की खुजली मिट जाती है। नीम के तेल में शहद मिलाकर उसमें बत्ती भिगोकर, कान में रखने से कान की पीब बंद हो जाती है। नीम के पत्तों का रस तिल के तेल में मिलाकर नस्य लेने से दिमाग के कीड़े, मर जाते हैं। नीम के कोमल पत्तों का रस, गुनगुना करके जिस आंख में दर्द हो, उसकी दूसरी ओर के कान में डालें। यदि दोनों आंखों में दर्द हो, तो दोनों कानों में डालें। नकसीर बंद करने के लिए नीम की पत्तियां और अजवायन, दोनों को पानी में पीसकर कनपटियों पर लेप करना चाहिए।

नीम की पत्तियों को दही में पीसकर लेप करने से दाद मिट जाती है। नीम के पत्तों का अर्क मिलाने से संखिया तथा अफीम दोनों का नशा उतर जाता है। नीम के वृक्ष के ऊपर की छाल हटकार पानी के साथ चंदन की रह घिसकर मुंह पर लेप करें एक सप्ताह में ही चेहरे के दाग, धब्बे, कील, मुंहासे साफ होकर चेहरा साफ हो जाएगा।

नीम की छाल, सफेद चन्दन, कुटकी, सोंठ, चिरायता, गिलोय, पीपल, पीपरामूल, लौंग और जींग हरड़-इन सबको समान मात्रा में लेकर, कूट और छानकर चूर्ण बनाएं। बालकों को 1 से 2 माशा तक तथा वयस्कों को 4 से 6 माशा तक सेवन कराएं। इससे ज्वर का ताप एकदम से कम हो जाता है।

नीम की छाल, रसौती, इन्द्रजौ तथा दारू हल्दी का काढ़ा नित्य सुबह शाम कुछ दिनों तक पीने से कंठ के अनेक रोगों का शमन हो जाता है।

योग करें, स्वस्थ रहें

- सतीश एकनाथ धुरी,
हिंदी अनुवादक, मडगांव

भारतीय संस्कृति में व्यायाम का एक विशेष महत्व है। पुरातन काल में इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए ऋषि, मुनियों ने इसको दैनंदिन जीवन का एक हिस्सा बनाया था और निरामय जीवन जीने का तरीका बताया था। व्यायाम का महत्व इस श्लोक में बताया गया है:

व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं बलं सुखं।
आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम् ॥

अर्थात् व्यायाम से स्वास्थ्य, लम्बी आयु, बल और सुख की प्राप्ति होती है। निरोगी होना परम भाग्य है और स्वास्थ्य से अन्य सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

अंग्रेजी में भी कहावत है; Health is Wealth, स्वास्थ्य ही धन संपत्ति है या यदि स्वास्थ्य है तो आपके पास धन,संपत्ति है। यह धन,संपत्ति व्यायाम करने से प्राप्त होती है। व्यायाम कई प्रकार के प्रकार होते हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण व्यायाम प्रकार है, 'सूर्य-नमस्कार'। 'सूर्य-नमस्कार' का महत्व इस श्लोक में बताया गया है:

"आदित्यस्य नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
आयुः प्रज्ञाबलंवीर्यं तेजस्तेषां च जायते।।
अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम्।।"

अर्थात् जो प्रतिदिन सूर्य नमस्कार करते हैं उनकी आयु, बुद्धि, बल, वीर्य एवं तेज (ओज) बढ़ता है। अकाल मृत्यु नहीं होती है तथा सभी प्रकार की व्याधियों का नाश होता है। इतने सभी लाभ इस सूर्य-नमस्कार से मिलते हैं।

सूर्य-नमस्कार एक सम्पूर्ण व्यायाम है, इसे सर्वांग व्यायाम भी कहा जाता है। समस्त यौगिक क्रियाओं की भाँति सूर्य-नमस्कार के लिए भी प्रातः काल सूर्योदय का समय सर्वोत्तम माना गया है। सूर्य-नमस्कार का सदैव खुली हवादार जगह पर कम्बल का आसन बिछा कर खाली पेट अभ्यास करना चाहिए। इससे मन शान्त और प्रसन्न होता है और योग का सम्पूर्ण प्रभाव मिलता है। सूर्य-नमस्कार के समय शरीर पर सूर्य की किरणें पड़ने से 'डी विटामिन' मिलता है और शरीर की हड्डियां और मांसपेशियां मजबूत हो जाती है।

सूर्य नमस्कार पद्धति में आवश्यक नियम एवं सावधानियां :

सूर्य नमस्कार पद्धति में स्थान, काल, परिधान, आयु संबंधी आवश्यक नियमों का वर्णन निम्नानुसार है।

- अष्टांग योग में वर्णित 5 प्रकार के यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) का पालन करना चाहिए।
- 5 प्रकार के नियमों (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) का पालन करना चाहिए।
- प्रातः शौच के पश्चात् स्नानोपरान्त सूर्य नमस्कार करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार के समय ढीले कपड़े पहनने चाहिए।
- चाय, कॉफी, तम्बाकू, शराबादि, मादक द्रव्य एवं मांसाहार तथा तामसिक आहार सेवन नहीं करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार खाली पेट करना चाहिए।
- खुले स्थान पर शुद्ध सात्त्विक, निर्मल स्थान पर, प्राकृतिक वातावरण में (शुद्ध जलवायु) सूर्य नमस्कार करना चाहिए।
- ज्वर, तीव्र रोग या ऑपरेशन के बाद 4-5 दिन तक सूर्य नमस्कार नहीं करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार सदैव सूर्य की ओर मुँह करके करना चाहिए।
- जहां तक संभव हो सूर्य नमस्कार प्रातःकाल 6-7 बजे के बीच करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार विद्युत का कुचालक चटाई, कम्बल या दरी पर करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार प्रतिदिन नियमपूर्वक मंत्रोच्चारण सहित करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार के समय मन चंचल नहीं हो, उसे एकाग्र करना चाहिए।
- अधिक उच्च रक्तचाप, हृदयरोगी तथा ज्वर की अवस्था में सूर्य नमस्कार नहीं करना चाहिए।
- 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चे सूर्य नमस्कार नहीं करें।
- भोजन सात्त्विक, हल्का-सुपाच्य करना चाहिए।
- अव्यवस्थित दिनचर्या, मिथ्या आहार-विहार का सेवन नहीं करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार खाली पेट प्रातः एवं सायं करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार में श्वास हमेशा नासिका से ही लेना चाहिए।
- प्रदूषण स्थान पर सूर्य नमस्कार नहीं करना चाहिए।
- सूर्य नमस्कार निश्चित समय पर, नियमित रूप से, भूखे पेट ही करना चाहिए।

- स्त्रियों में मासिक धर्म में 6 दिन तक, 4 माह का गर्भ होने पर व्यायाम बंद करें एवं प्रसव के 4 माह बाद पुनः शुरू कर सकते हैं।

सूर्य नमस्कार मंत्र का अर्थ एवं भाव :

सूर्य नमस्कार तेरह बार करना चाहिए और प्रत्येक बार सूर्य मंत्रों के उच्चारण से विशेष लाभ होता है, वे सूर्य मंत्र निम्न है-

1.ॐ मित्राय नमः, 2. ॐ रवये नमः, 3. ॐ सूर्याय नमः, 4. ॐ भानवे नमः, 5. ॐ खगाय नमः, 6. ॐ पूष्णे नमः,7. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः, 8. ॐ मरीचये नमः, 9. ॐ आदित्याय नमः, 10. ॐ सवित्रे नमः, 11. ॐ अर्काय नमः, 12. ॐ भास्कराय नमः, 13. ॐ सवितृ सूर्यनारायणाय नमः

1. ॐ मित्राय नमः (सबके मित्र को प्रणाम):

नमस्कारासन (प्रणामासन) स्थिति में समस्त जीवन के स्रोत को नमन किया जाता है। सूर्य समस्त ब्रह्माण्ड का मित्र है, क्योंकि इससे पृथ्वी समत सभी ग्रहों के अस्तित्व के लिए आवश्यक असीम प्रकाश, ताप तथा ऊर्जा प्राप्त होती है। पौराणिक ग्रन्थों में मित्र कर्मों के प्रेरक, धरा-आकाश के पोषक तथा निष्पक्ष व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। प्रातःकालीन सूर्य भी दिवस के कार्यकलापों को प्रारंभ करने का आह्वान करता है तथा सभी जीव-जन्तुओं को अपना प्रकाश प्रदान करता है।

2. ॐ रवये नमः (प्रकाशवान को प्रणाम)

"रवये" का तात्पर्य है जो स्वयं प्रकाशवान है तथा सम्पूर्ण जीवधारियों को दिव्य आशीष प्रदान करता है। तृतीय स्थिति हस्तउत्तानासन में इन्हीं दिव्य आशीषों को ग्रहण करने के उद्देश्य से शरीर को प्रकाश के स्रोत की ओर ताना जाता है।

3. ॐ सूर्याय नमः (क्रियाओं के प्रेरक को प्रणाम)

यहाँ सूर्य को ईश्वर के रूप में अत्यन्त सक्रिय माना गया है। प्राचीन वैदिक ग्रंथों में सात घोड़ों के जुते रथ पर सवार होकर सूर्य के आकाश गमन की कल्पना की गई है। ये सात घोड़े परम चेतना से निकलने वाले सप्त किरणों के प्रतीक है। जिनका प्रकटीकरण चेतना के सात स्तरों में होता है - भू (भौतिक), - भुवः (मध्यवर्ती, सूक्ष्म नक्षत्रीय), स्वः (सूक्ष्म, आकाशीय), मः (देव आवास), जनः (उन दिव्य आत्माओं का आवास जो अहं से मुक्त है), तपः (आत्मज्ञान, प्राप्त सिद्धों का आवास) और सत्यम् (परम सत्य)। सूर्य स्वयं सर्वोच्च चेतना का प्रतीक है तथा चेतना के सभी सात स्वरों को नियंत्रित करता है। देवताओं में सूर्य का स्थान महत्वपूर्ण है। वेदों में वर्णित सूर्य देवता का आवास आकाश में है, उसका प्रतिनिधित्त्व करने वाले अग्नि का आवास भूमि पर है।

4. ॐ भानवे नमः (प्रदीप्त होने वाले को प्रणाम)

सूर्य भौतिक स्तर पर गुरू का प्रतीक है। इसका सूक्ष्म तात्पर्य है कि गुरू हमारी भ्रांतियों के अंधकार को दूर करता है - उसी प्रकार जैसे प्रातः काल में रात्रि का अंधकार दूर हो जाता है। अश्व संचालनासन की स्थिति में हम उस प्रकाश की ओर मुँह करके अपने अज्ञान रूपी अंधकार की समाप्ति हेतु प्रार्थना करते हैं।

5. ॐ खगाय नमः (आकाशगामी को प्रणाम)

समय का ज्ञान प्राप्त करने हेतु प्राचीन काल से सूर्य यंत्रों (डायलों) के प्रयोग से लेकर वर्तमान कालीन जटिल यंत्रों के प्रयोग तक के लंबे काल में समय का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आकाश में सूर्य की गति को ही आधार माना गया है। हम इस शक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं जो समय का ज्ञान प्रदान करने तथा उससे जीवन को उन्नत बनाने की प्रार्थना करते हैं।

6. ॐ पूष्णे नमः (पोषक को प्रणाम)

सूर्य सभी शक्तियों का स्रोत है। एक पिता की भाँति वह हमें शक्ति, प्रकाश तथा जीवन देकर हमारा पोषण करता है। साष्टांग नमस्कार की स्थिति में हमें शरीर के सभी आठ केन्द्रों को भूमि से स्पर्श करते हुए उस पालनहार को अष्टांग प्रणाम करते हैं। तत्वतः हम उसे अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को समर्पित करते हैं तथा आशा करते हैं कि वह हमें शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करें।

7. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः (स्वर्णिम् विश्वात्मा को प्रणाम)

हिरण्यगर्भ, स्वर्ण के अण्डे के समान सूर्य की तरह देदीप्यमान, ऐसी संरचना है जिससे सृष्टिकर्ता ब्रह्म की उत्पत्ति हुई है। हिरण्यगर्भ प्रत्येक कार्य का परम कारण है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, प्रकटीकरण के पूर्व अन्तर्निहित अवस्था में हिरण्यगर्भ के अन्दर निहित रहता है। इसी प्रकार समस्त जीवन सूर्य (जो महत् विश्व सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है) में अन्तर्निहित है। भुजंगासन में हम सूर्य के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं तथा यह प्रार्थना करते हैं कि हममें रचनात्मकता का उदय हो।

8. ॐ मरीचये नमः (सूर्य रश्मियों को प्रणाम)

मरीच ब्रह्मपुत्रों में से एक है। परन्तु इसका अर्थ मृग मरीचिका भी होता है। हम जीवन भर सत्य की खोज में उसी प्रकार भटकते रहते हैं जिस प्रकार एक प्यासा व्यक्ति मरूस्थल में (सूर्य रश्मियों से निर्मित) मरीचिकाओं के जाल में फँसकर जल के लिए मूर्ख की भाँति इधर-उधर दौड़ता रहता है। पर्वतासन की

स्थिति में हम सच्चे ज्ञान तथा विवेक को प्राप्त करने के लिए नतमस्तक होकर प्रार्थना करते हैं जिससे हम सत् अथवा असत् के अन्तर को समझ सकें।

9. ॐ आदित्याय नमः (अदिति-सुत को प्रणाम)

विश्व जननी (महाशक्ति) के अनन्त नामों में एक नाम अदिति भी है। वहीं समस्त देवों की जननी, अनन्त तथा सीमार हित है। वह आदि रचनात्मक शक्ति है जिससे सभी शक्तियाँ निःसृत हुई हैं। अश्व संचलानासन में हम उस अनन्त विश्व-जननी को प्रणाम करते हैं।

10. ॐ सवित्रे नमः (सूर्य की उद्दीपन शक्ति को प्रणाम)

सवित्र उद्दीपक अथवा जागृत करने वाला देव है। इसका संबंध सूर्य देव से स्थापित किया जाता है। सवित्री उगते सूर्य का प्रतिनिधि है जो मनुष्य को जागृत करता है और क्रियाशील बनाता है। "सूर्य" पूर्ण रूप से उदित सूरज का प्रतिनिधित्व करता है। जिसके प्रकाश में सारे कार्यकलाप होते हैं। सूर्य नमस्कार की हस्तपादासन स्थिति में सूर्य की जीवनदायनी शक्ति की प्राप्ति हेतु सवित्र को प्रणाम किया जाता है।

11. ॐ अर्काय नमः (प्रशंसनीय को प्रणाम)

अर्क का तात्पर्य है - उर्जा । सूर्य विश्व की शक्तियों का प्रमुख स्रोत है। हस्तउत्तानासन में हम जीवन तथा उर्जा के इस स्रोत के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हैं।

12. ॐ भास्कराय नमः (आत्मज्ञान-प्रेरक को प्रणाम)

सूर्य नमस्कार की अंतिम स्थिति प्रणामासन (नमस्कारासन) में अनुभवातीत तथा आध्यात्मिक सत्यों के महान प्रकाशक के रूप में सूर्य को अपनी श्रद्धा समर्पित की जाती है। सूर्य हमारे चरम लक्ष्य-जीवनमुक्ति के मार्ग को प्रकाशित करता है। प्रणामासन में हम यह प्रार्थना करते हैं कि वह हमें यह मार्ग दिखाएं। इस प्रकार सूर्य नमस्कार पद्धति में बारह मंत्रों का अर्थ सहित भावों का समावेश किया जाता है।

सूर्य-नमस्कार की स्थितियां :

प्रथम स्थिति - स्थितप्रार्थनासन

सूर्य-नमस्कार की प्रथम स्थिति स्थितप्रार्थनासन की है। सावधान की मुद्रा में खड़े हो जाएं। अब दोनों हथेलियों को परस्पर जोड़कर प्रणाम की मुद्रा में हृदय पर रख लें।दोनों हाथों की अँगुलियाँ परस्पर सटी हों और अँगूठा छाती से चिपका हुआ हो। इस स्थिति में आपकी कहुनियाँ सामने की ओर बाहर निकल आएँगी।अब आँखें बन्द कर दोनों हथेलियों का पारस्परिक दबाव बढाएँ। श्वास- प्रक्रिया निर्बाध चलने दें।

द्वितीय स्थिति - हस्तोत्तानासन या अर्द्धचन्द्रासन

प्रथम स्थिति में जुड़ी हुई हथेलियों को खोलते हुए ऊपर की ओर तानें तथा साँस भरते हुए कमर को पीछे की ओर मोडें। गर्दन तथा रीढ़ की हड्डियों पर पड़ने वाले तनाव को महसूस करें।अपनी क्षमता के अनुसार ही पीछे झुकें और यथासाध्य ही कुम्भक करते हुए झुके रहें।

तृतीय स्थिति - हस्तपादासन या पादहस्तास

दूसरी स्थिति से सीधे होते हुए रेचक (निःश्वास) करें तथा उसी प्रवाह में सामने की ओर झुकते चले जाएँ। दोनों हथेलियों को दोनों पंजों के पास जमीन पर जमा दें। घुटने सीधे रखें तथा मस्तक को घुटनों से चिपका दें यथाशक्ति बाह्य-कुम्भक करें। नव प्रशिक्षु धीरे-धीरे इस अभ्यास को करें और प्रारम्भ में केवल हथेलियों को जमीन से स्पर्श कराने की ही कोशिश करें।

चतुर्थ स्थिति- एकपादप्रसारणासन

तीसरी स्थिति से भूमि पर दोनों हथेलियां जमाए हुए अपना दायाँ पाँव पीछे की ओर फेंके।इस प्रयास में आपका बायाँ पाँव आपकी छाती के नीचे घुटनों से मुड़ जाएगा, जिसे अपनी छाती से दबाते हुए गर्दन पीछे की ओर मोड़कर ऊपर आसमान की ओर देखें । दायाँ घुटना जमीन पर सटा हुआ तथा पँजा अँगुलियों पर खड़ा होगा। ध्यान रखें, हथेलियाँ जमीन से उठने न पाएं।श्वास-प्रक्रिया सामान्य रूप से चलती रहे।

पंचम स्थिति - भूधरासन या दण्डासन

एकपादप्रसारणासन की दशा से अपने बाएँ पैर को भी पीछे ले जाएँ और दाएँ पैर के साथ मिला लें।हाथों को कन्धों तक सीधा रखें । इस स्थिति में आपका शरीर भूमि पर त्रिभुज बनाता है, जिसमें आपके हाथ लम्बवत् और शरीर कर्णवत् होते हैं।पूरा भार हथेलियों और पँजों पर होता है। श्वास-प्रक्रिया सामान्य रहनी चाहिये अथवा केहुनियों को मोड़कर पूरे शरीर को भूमि पर समानान्तर रखना चाहिए। यह दण्डासन है।

षष्ठ स्थिति - साष्टाङ्ग प्रणिपात

पंचम अवस्था यानि भूधरासन से साँस छोड़ते हुए अपने शरीर को नीचे झुकाएं। केहुनियाँ मुड़कर बगलों में चिपक जानी चाहिए। दोनों पँजे, घुटने, छाती, हथेलियाँ तथा ठोड़ी जमीन पर एवं कमर तथा नितम्ब उपर उठा होना चाहिए। इस समय 'ॐ पूष्णे नमः ' इस मन्त्र का जप करना चाहिए।

कुछ योगी मस्तक को भी भूमि पर टिका देने को कहते हैं।

सप्तम स्थिति - सर्पासन या भुजङ्गासन

छठी स्थिति में थोड़ा सा परिवर्तन करते हुए नाभि से नीचे के भाग को भूमि पर लिटा कर तान दें। अब हाथों को सीधा करते हुए नाभि से उपरी हिस्से को ऊपर उठाएँ। श्वास भरते हुए

सामने देखें या गरदन पीछे मोड़कर ऊपर आसमान की ओर देखने का प्रयास करें। ध्यान रखें, आपके हाथ पूरी तरह सीधे हों या यदि केहुनी से मुड़े हों तो केहुनियाँ आपकी बगलों से चिपकी हों।

अष्टम स्थिति - पर्वतासन

सप्तम स्थिति से अपनी कमर और पीठ को ऊपर उठाएँ, दोनों पँजों और हथेलियों पर पूरा वजन डालकर नितम्बों को पर्वतशृङ्ग की भाँति ऊपर उठा दें तथा गरदन को नीचे झुकाते हुए अपनी नाभि को देखें।

नवम स्थिति - एकपादप्रसारणासन (चतुर्थ स्थिति)

आठवीं स्थिति से निकलते हुए अपना दायाँ पैर दोनों हाथों के बीच दाहिनी हथेली के पास लाकर जमा दें। कमर को नीचे दबाते हुए गरदन पीछे की ओर मोड़कर आसमान की ओर देखें।बायाँ घुटना जमीन पर टिका होगा।

दशम स्थिति – हस्तपादासन

नवम स्थिति के बाद अपने बाएँ पैर को भी आगे दाहिने पैर के पास ले आएँ। हथेलियाँ जमीन पर टिकी रहने दें। साँस बाहर निकालकर अपने मस्तक को घुटनों से सटा दें। ध्यान रखें, घुटने मुडें नहीं, भले ही आपका मस्तक उन्हें स्पर्श न करता हो।

एकादश स्थिति - (हस्तोत्तानासन या अर्धचन्द्रासन)

दशम स्थिति से श्वास भरते हुए सीधे खड़े हों। दोनों हाथों की खुली हथेलियों को सिर के ऊपर ले जाते हुए पीछे की ओर तान दें।यथा सम्भव कमर को भी पीछे की ओर मोडें।

द्वादश स्थिति -स्थित प्रार्थनासन (प्रथम स्थिति)

ग्यारहवीं स्थिति से हाथों को आगे लाते हुए सीधे हो जाएँ। दोनों हाथों को नमस्कार की मुद्रा में वक्षःस्थल पर जोड़ लें। सभी उँगलियाँ परस्पर जुड़ी हुई तथा अँगूठा छाती से सटा हुआ रखते हुए कोहुनियों को बाहर की तरफ निकालते हुए दोनों हथेलियों पर पारस्परिक दबाव दें।

सूर्यनमस्कार के लाभ :

- सूर्य नमस्कार से शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंग बलिष्ट एवं निरोग होते हैं।
- सूर्य नमस्कार से मेरूदण्ड एवं कमर लचीली बनती है और उदर, आन्त्र, आमाशय, अग्नाशय, हृदय, फुफ्फुस सहित सम्पूर्ण शरीर स्वस्थ बनाता है।
- हाथ- पैर- भुजा, जंघा- कंधा आदि सभी अंगों की मांसपेशियाँ पुष्ट एवं सुन्दर होती है।
- मानसिक शांति एवं बल, ओज एवं तेज की वृद्धि करता है।
- मधुमेह, मोटापा, थायराइड आदि रोगों में विशेष लाभदायक है।
- आत्म विश्वास में वृद्धि, व्यक्तित्व विकास में सहायक है।
- इसका नियमित अभ्यास करने वाले व्यक्ति को हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, मधुमेह, गठिया, कब्ज जैसी समस्याओं के होने की आशंका बेहद कम हो जाती है।
- मानसिक तनाव, अवसाद, एंग्जायटी आदि के निदान के साथ क्रोध, चिड़चिड़ापन तथा भय का भी निवारण करता है।

अतः सूर्य नमस्कार सम्पूर्ण शरीर का पूर्ण व्यायाम है। सूर्य नमस्कार गतिशील आसन माना जाता है। इसका अभ्यास आसनों के अभ्यास के पूर्व करना चाहिए। इससे शरीर सक्रिय हो जाता है, नींद, आलस्य व थकावट दूर हो जाती है। इसलिए शारीरिक एवं मानसिक आरोग्य के लिए सूर्यनमस्कार श्रेयस्कर है

सूर्य नमस्कार की सीमाएं :

- इसका अभ्यास सभी आयु वर्ग के लोग अपनी क्षमता का ध्यान रखते हुए कर सकते हैं। पाद हस्तासन का अभ्यास सायटिका, स्लिप डिस्क तथा स्पॉन्डिलाइटिस के रोगी कदापि न करें।
- फ्रोजन शोल्डर की समस्या से ग्रस्त लोग पर्वतासन, अष्टांग नमस्कार तथा भुजंगासन का अभ्यास न करें।
- महिलाएं मासिक धर्म एवं गर्भाधारण के दिनों में इसका अभ्यास न करें।
- उच्च रक्तचाप तथा हृदय रोगी इसका अभ्यास योग्य मार्गदर्शन में करें।
- बच्चों को इसका अभ्यास उचित मार्गदर्शन में कराएं ताकि कोई नुकसान न हो।
- इसके अभ्यास के लिए सुबह का समय चुनें ताकि खाली पेट कर पाएं और अभ्यास करने के आधे घंटे बाद ही खाएं।

स्त्री, पुरुष, बाल, युवा तथा वृद्धों के लिए भी उपयोगी यह सर्वश्रेष्ठ व्यायाम प्रकार, रोज करने पर हमें सम्पूर्ण योग का लाभ होगा। इसके अभ्यास से हमारा शरीर निरोग और स्वस्थ होकर तेजस्वी होगा और हम अंतिम सत्य तक पहुँच पाएंगे, जिसके के लिए हमें मनुष्य का जन्म प्राप्त हुआ है। इस हेतु शुभकामनाएँ।

09.01.2021 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति की मुंबई में संपन्न राजभाषा निरीक्षण बैठक।

22.10.2020 को संपन्न मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 91वीं बैठक में कोंकण गरिमा के 16वें अंक (ई-पत्रिका) का विमोचन किया गया।

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेलापुर की 92वीं बैठक दिनांक 25.01.2021 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जी की अध्यक्षता में "वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग" (माइक्रोसॉफ्ट टीम्स) के माध्यम से आयोजित की गई।

रघुवीर सहाय

जन्म : 9 दिसंबर 1929, लखनऊ
मृत्यु : 30 दिसंबर 1990, दिल्ली

रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील कवि थे। रघुवीर सहाय हिन्दी के साहित्यकार व पत्रकार थे। इन्होंने 'प्रतीक', 'वाक' और 'कल्पना' अनेक पत्रिकाओं के संपादक मंडल के सदस्य के रूप में कार्य किया। इनको कवि के रूप में 'दूसरा सप्तक' से विशेष ख्याति प्राप्त हुई। इनकी साहित्य सेवा भावना के कारण ही इनको “साहित्य अकादमी सम्मान” से सम्मानित किया गया।

रचनाएं:- रघुवीर सहाय हिंदी साहित्य के सफल कवि हैं। इन्होंने समकालीन समाज पर अपनी लेखनी चलाई। इन्होंने समकालीन अमानवीय दोषपूर्ण राजनीति पर व्यंग्योक्ति तथा नए ढंग की कविता का आविष्कार किया है। इनकी प्रमुख रचनाएं निम्नलिखित हैं-
काव्य संग्रह :- 'सीढ़ियों पर धूप में', 'आत्महत्या के विरुद्ध', 'हंसो हंसो जल्दी हंसो', 'लोग भूल गए हैं', 'आत्महत्या के विरुद्ध' इनका प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। 'सीढ़ियों पर धूप में' कविता-कहानी-निबंध का अनूठा संकलन है।

काव्यगत विशेषताएं:- रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी जगत के प्रसिद्ध कवि हैं। इनका काव्य समकालीन जगत का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है।